

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ (سورة النساء، 59)

کُران اور ہدیس

इस्लामी आइडियोलॉजी के मैन सोर्स

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi



www.najeebqasmi.com

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ
(سورة النساء 59)

کُرآن اور ہدیس

इस्लामी आइडियोलॉजी के मैन सोर्स

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

www.najeebqasmi.com

All rights reserved
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

Quran & Hadith
Main Sources of Islamic Ideology

कुरान और हदीस
इस्लामी आइडियोलॉजी के मैन सोर्स

By
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Muhammad Najeeb Qasmi

<http://www.najeebqasmi.com/>
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)
Skype: najeebqasmi
Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:
Dr. Muhammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल कसिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारुल हक कासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब	10
5	नुज़ूल व हिफाज़ते कुरान करीम	11
6	नुज़ूले वही के चंद तरीके	12
7	तारीख नुज़ूले कुरान	13
8	तारीख हिफाज़ते कुरान	16
9	हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में हिफाज़ते कुरान	18
10	हज़रत उसमान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में हिफाज़ते कुरान	19
11	कुरान फहमी हदीस नबवी के बेगैर मुमकिन नहीं	21
12	करीम के मुफस्सिरे अव्वल	21
13	सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत भी जरूरी	22
14	कुरान करीम में मुजमल अहकाम	27
15	कुरान करीम और हम	32
16	मालूमाते कुरानी	39
17	मज़ामीने कुरान	41
18	रमज़ान का महीना और कुरान करीम	45

19	- खुसूसियात	50
20	कुरानी मालूमात	54
21	मोमिनीन की बाज़ अहम सिफात	58
22	सूरह अल असर की मुख्तसर तफसीर	66
23	सूरह अलम नशरह की मुख्तसर तफसीर	69
24	आयतुल कुर्सी	72
25	कुरान करीम पढ़ने का सवाब मैयित (मुर्दा) को पहुंचने का हुकुम	82
26	कुरान करीम को छूने या छू कर पढ़ने के लिए वजु जरूरी है	98
27	जुनबी और हाइज़ा औरत के लिए कुरान की तिलावत नाजाएज़	106
28	हकीम लुकमान और उनकी कीमती नसीहतें	110
29	और हम ख़्वा र हुए तारिके कुरान हो कर	119
30	हदीस की हुज्जियत	127
31	शरीअते इस्लामिया हदीस का मक़ाम	141
32	हदीस की	143
33	ज़ईफ़ हदीस भी सही हदीस की एक किस्म है	145
34	अदीब अरब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल के अल्फ़ाज़ बिऐनेही मरवी हैं	152
35	सही बुखारी व उलमा -देवबन्द की खिदमात	169
36	सही मुस्लिम व उलमा- देवबन्द की खिदमात	184
37	लेखक का परिचय	194

प्रस्तावना

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कबिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में छोड़े दौड़ा दिए हैं त्क़ इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताकतें पुन कर दें जो इस्लाम और मुस्लमानों के लिए नुक़सानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तक्राजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में ख़ासी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ़्तार से चलते हुए कुरान व हदीस की रौशनी में मु़त्तसर दीनी पैगाम ख़ुबसूरत इमेज की शकल में मुख्तलिफ़ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मक़बूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (**दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर**) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तक़रीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख़याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फ़ज़ल व करम और उसकी तौफ़ीक़ से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

इस किताब (**कुरान और हदीस - इस्लामी आइडियोलॉजी के मैन**

सोर्स) मैं ज़िक्र किया गया है कि जिस तरह ईमान के मामले में अल्लाह और उसके रसूल के दरमयान तफरीक नहीं की जा सकती है कि एक को माना जाए और दूसरे को न माना जाए। ठीक इसी तरह कलामुल्लाह (कुरान करीम) और कलामे रसूल (हदीस) के दरमयान भी किसी तफरीक की कोई गुंजाइश नहीं है कि एक को माना जाए और दूसरे को न माना जाए क्योंकि इन दोनों में से किसी एक के इंकार पर दूसरे का इंकार खुद बखुद लाजिम आ जाएगा। कुराने करीम और हदीसे नबवी से मुतअल्लिक दूसरे बहुत से मज़ामीन भी इस किताब का हिस्सा हैं।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूं कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रात मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूं कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूं जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.

(Mufti) Abul Qasim Nomani

Founder, U.P. Darul Uloom Deoband



مفتی: ابو القاسم نعمانی

مہتمم دارالعلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululom-deoband.com

Ref. No.

Date:

باسمہ سبحانہ و تعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبلی تلمریض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہنچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کر کے دینی کام کرنے والوں کے لیے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔ چنانچہ سعودی عرب سے شائع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شائع ہوتے رہتے ہیں۔ اور سوشل میڈیا اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہنچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرا دیے ہیں، جو ایلیٹرو تک بک کی شکل میں جلدی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔ اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ حریطی افادات کی توہین بخشے۔

اردو دارالعلوم دیوبند

ابو القاسم نعمانی غفرلہ

مہتمم دارالعلوم دیوبند

۵۱۳۷۱۶۳

مولانا محمد اسرار الحق
Mohammad Asrarul Haque
Member of Parliament
(Lok Sabha)



TE, South Kumbha, New Delhi, 110011
Ph: 811-03790046 Telefax: 811-03296314
E-mail: mhaqqasmi@gmail.com

Date: 19/03/2016

Date: 19/03/2016

تائیدات

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے زیرِ ماموریت لانا سبک چھوڑنا وقت کا اہم تکلف ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی و معاشرتی اور اصلاحی تحریکوں نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے سبب آج انٹرنیٹ پر دین کے حقائق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و اعیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں غزvam یا انڈیہ انڈیا قومی صاحب کا نام سر پرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ و سادہ سوال جواب دیتے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔

انڈیہ انڈیا قومی صاحب کا قومی کا قلمبر رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سے بخوبی واقف ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ مصروف کی خصوصیت علوم دینی کے ساتھ علوم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، دوسری طرف دانشور و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ خالص و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عام لوگوں کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک ہا کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی و اصلاحی اور ملی کام لے اور وہ ان کے لئے کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

کلمہ



(مولانا) محمد اسرار الحق قومی

الممبر فی قومیہ (انڈیا)

صدر آل انڈیا مسلمین، ملی فاؤنڈیشن، نئی دہلی

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

प्रो. अरुणकुमार दास

आयुर्वेद

PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner



भाषागत अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs
Government of India

المقر

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد ہر طرح کی جسمی معلومات اخراج کے ذریعہ انھوں کی دستیابیوں میں آتی ہیں۔ اس لیے ان کے کارکن
میں کارکنوں کو "گورنر" میں رہا۔" کے خلاف قیادت کے طور پر صرف حقیقت کے ذریعہ یہ ممکن ہے، ہمارا دھماکا اور جرمہ کا جرمہ ہوتا ہے۔ انھیں
(Google) اور ایک ویکی پیڈیا (Wikipedia) یا دیگر دوسری سوشل سائٹس انہیں نے تھیل الاٹ کا اور صرف دیکھنا، اور ان کی تھیل الاٹ
کے لیے کوئی قیادت کے تمام معلومات سے متعلق ہو کر دیکھ گئے ہیں۔ لیکن اس افغانی انقلاب نے ایک ویکی پیڈیا اور دیگر ایسے تمام
دوسری اور غیر سوشل ویکی پیڈیا کے ساتھ ساتھ ان کے لیے ان کی سوشل ویکی پیڈیا کے لیے ان کی سوشل ویکی پیڈیا کے لیے ان کی
جو بھی ہو جاتا ہے۔ دوسرا انھیں ملے ہوئے ہے کہ انھیں ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لیے ایک ویکی پیڈیا کے ساتھ ساتھ ان کی
ہے، کیونکہ وہ ان کے تمام معلومات کی سوشل سائٹس انھیں نے ان کی سوشل سائٹس انھیں نے ان کی سوشل سائٹس انھیں نے ان کی
مل کے لیے ضروری ہے کہ انھیں ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لیے ان کی سوشل سائٹس انھیں نے ان کی سوشل سائٹس انھیں نے ان کی
کرنے اور انھیں ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لیے ان کی سوشل سائٹس انھیں نے ان کی سوشل سائٹس انھیں نے ان کی
ہر مسئلہ حل کریں۔

[illegible]

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عیشی کے احوال یہ بھی ہیں

اعتراف

(پروفیسر اختر الواسع)

سابقہ انگریزی اور اردو میں لکھی ہوئی کتابیں اور اس کے علاوہ

سابقہ حدود، شیعہ اساتذہ کا نظریہ ہے کہ یہ اصولیہ اصول ہے، لیکن

سابقہ اسٹیج پر سے اتر کر کھڑی ہوئی

नुज़ूल व हिफाज़ते कुरान करीम

कुरान: कुरान करीम अल्लाह तआला का वह अज़ीमुश्शान कलाम है जो इंसानों की हिदायत के लिए खालिके कायनात ने अपने आखरी रसूल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया। अल्लाह तआला ने कुरान करीम की हिफाज़त खुद अपने ज़िम्मे ली जैसा कि अल्लाह तआला का फैसला कुरान करीम में मौजूद है (सूरह अलहिजर आयत 9) “यह ज़िक्र (यानी कुरान) हमने ही उतारा है और हम ही इसकी हिफाज़त करने वाले हैं” कुरान करीम आखरी आसमानी किताब है जो क़यामत तक के लिए नाफ़िज़ुल अमल रहेगी, बरखिलाफ पहली आसमानी किताबों के वह खास कौमों और खास ज़मानों के लिए थीं। इसी लिए अल्लाह तआला ने इन को क़यामत तक महफूज़ रखने की कोई ज़मानत नहीं दी थी लेकिन अल्लाह तआला ने कुरान करीम की हिफाज़त का ज़िम्मा खुद लिया है।

वही: कुरान करीम चूंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वही के ज़रिया नाज़िल किया गया है इस लिए सबसे पहले वही के बारे में जानें। वही वह कलाम है जो अल्लाह तआला हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम के वास्ता या बिला वास्ता अपने अम्बिया पर इल्का फरमाता है, जिसके ज़रिया खालिके कायनात इंसान को दुनयावी ज़िंदगी गुज़ारने का तरीका बतलाता है ताकि लोग उसके बतलाए हुए तरीके पर दुनयावी ज़िंदगी गुज़ार कर जहन्नम से बच कर हमेशा हमेशा की जन्नत में दाखिल हो जाएं।

इंसान तीन ज़राए में से किसी एक ज़रिया से इल्म हासिल करता है। एक इंसान के हवास यानी आँख, कान, मुँह और हाथ पांव, दूसरा ज़रिया अक़ल और तिसरा ज़रिया वही है। इंसान को बहुत सी बातें अपने हवास के ज़रिया मालूम हो जाती है जबकि बहुत सी अक़ल के ज़रिया और जो बातें उन दोनों ज़राए से मालूम नहीं हो सकतीं उनका इल्म वही के ज़रिया अता किया जाता है। हवास और अक़ल के ज़रिया हासिलशुदा इल्म में गलती के इमकान होते हैं लेकिन वही के ज़रिया हासिलशुदा इल्म में गलती के इमकान बिल्कुल नहीं होते क्योंकि यह इल्म खालिके कायनात की जानिब से अम्बिया के ज़रिया से इंसानों को पहुंचता है। गरज़ ये कि वही इंसान के लिए वह आलातरीन ज़रिया इल्म है जो उसे उसकी जिंदगी से मुतअल्लिक इन सवालात का जवाब मुहैया करता है जो अक़ल व हवास के ज़रिया हल नहीं हो सकते। यानी सिर्फ अक़ल और मुशाहिदा इंसान की रहनुमाई के लिए काफी नहीं है बल्कि उसकी हिदायत के लिए वही-ए-इलाही एक नागुज़ीर जरूरत है। चूंकि वही अक़ल और मुशाहिदा से बढ़कर इल्म है लिहाज़ा जरूरी नहीं कि वही की हर बात का इदराक अक़ल से हो सके।

नुज़ूले वही के चंद तरीके:

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुख्तलिफ तरीकों से वही नाज़िल होती थी।

(1) घंटी की सी आवाज़ सुनाई देती और आवाज़ ने जो कुछ कहा होता वह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को याद हो जाता। जब इस तरीका पर वही नाज़िल होती थी तो आप पर बहुत

ज्यादा बोझ पड़ता था।

(2) फरिश्ता किसी इंसानी शकल में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आता और अल्लाह तआला का पैगाम पहुंचा देता। ऐसे मौका पर उमुमन हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम मशहुर सहाबी हज़रत दहिया कल्बी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सूरत में तशरीफ लाया करते थे।

(3) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम अपनी असल सूरत में तशरीफ लाते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र में सिर्फ तीन बार ऐसा हुआ है। एक नुबुवत के बिल्कुल इब्तिदाई दौर में दूसरी बार खुद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम से उनकी असल सूरत में देखने की ख्वाहिश ज़ाहिर फरमाई थी और तीसरी बार मेराज के मौका पर।

(4) बिला वास्ता अल्लाह तआला से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हमकलामी हुई। यह सिर्फ एक बार मेराज के मौका पर हुआ। नमाज़ की फर्ज़ीयत इसी मौका पर हुई।

(5) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आए बेगैर आप के सीने में इल्का फरमा देते थे।

तारीख नुज़ूले कुरान: माहे रमज़ान की एक बाबरकत रात तैलतुलकदर में अल्लाह तआला ने लौहे महफ़्ज़ से समा-ए-दुनिया पर कुरान करीम नाज़िल फरमाया और उसके बाद हसबे जरूरत थोड़ा-थोड़ा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होता रहा और तकरीबन 23 साल के अरसा में कुरान करीम मुकम्मल नाज़िल हुआ। कुरान करीम का तदरीजी नुज़ूल उस वक़्त

शुरू हुआ जब आप की उम्र चालीस साल थी। कुरान करीम की सबसे पहली जो आयतें गारे हिरा में उतरीं वह सूह अलक की इब्तिदाई आयात हैं। पढ़ो अपने उस परवरदिगार के नाम से जिस ने पैदा किया, जिसने इंसान को जमे हुए खून से पैदा किया, पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार सबसे ज्यादा करीम हैं" इस पहली वही के नुजूल के बाद तीन साल तक वही के नुजूल का सिलसिला बन्द रहा। तीन साल के बाद वही फरिशता जो गारे हिरा में आया था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और सूरह अलमुदस्सिर की इब्तिदाई चंद आयात आप पर नाज़िल फरमाई। "ऐ कपड़े में लिपटने वाले उठो और लोगों को खबरदार करो और अपने परवरदिगार की तकबीर कहो और अपने कपड़ों को पाक रखो और गंदगी से किनारा कर लो"

इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात तक वही का तदरीजी सिलसिला जारी रहा। कुरान करीम का सबसे छोटा हिस्सा जो मुसतकिल नाज़िल हुआ वह (अन निसा आयत 95) है, जो एक लम्बे आयत का टुकड़ा है। दूसरी तरफ पूरी सूरतुल इनाम एक ही मरतबा में नाज़िल हुई है। गरज़ ये कि तकरीबन 23 साल के अरसा में कुरान करीम पूरा नाज़िल हुआ।

कुरान करीम के थोड़ा-थोड़ा नुजूल का मकसद:

दूसरे आसमानी किताबों के बरखिलाफ कुरान करीम को एक दफा नाज़िल करने के बजाए थोड़ा-थोड़ा नाज़िल किया गया। इसकी वजह खुद अल्लाह तआला ने कुरान करीम में मुशारेकीन मक्का के जवाब में इन अल्फाज़ में बताई है।

“और यह काफिर लोग कहते हैं कि इन पर सारा कुरान एक ही दफा में क्यों नाज़िल नहीं कर दिया गया? (ऐ पैगम्बर) हमने ऐसा इस लिए नहीं किया ताकि इसके जरिये तुम्हारा दिल मज़बूत रखें और हमने इसे ठहर ठहर कर पढ़वाया है और जब कभी यह लोग तुम्हारे पास कोई अनोखी बात लेकर आते हैं, हम तुम्हें (इसका) ठीक ठीक जवाब और ज्यादा वज़ाहत के साथ अता कर देते हैं।” (सूरतुल फुरकान आयत 32,33)

इमाम राज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) ने इस आयत की तफसीर में कुरान करीम के थोड़ा थोड़ा नाज़िल होने की जो हिकमतें बयान फरमाई हैं, उनका खुलासा यह है।

- (1) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी (अनपढ़) थे, इस लिए अगर सारा कुरान एक मरतबा नाज़िल हो गया होता तो इसका याद रखना और ज़ब्त करना दुशवार होता।
- (2) अगर पूरा कुरान एक दफा में नाज़िल हो जाता तो तमाम अहकामों की पाबंदी जल्दी लाज़िम हो जाती और यह इस हकीमाना तदरीज के खिलाफ होता जो शरीअत मोहम्मदी में मलहूज़ रही है।
- (3) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी क़ौम की तरफ से हर रोज़ नई अज़ियतें बर्दाशत करनी पड़ती थी, हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम का बार बार कुरान करीम लेकर आना इन अज़ियतों के मुकाबले को आसान बना देता था और आप की तकवियत का सबब बनता था।
- (4) कुरान करीम का एक हिस्सा लोगों के सवालात के जवाब और मुख्तलिफ़ वाक़यात से मुतअल्लिक है, इस लिए इन आयतों का नुज़ूल इसी वक़्त मुनासिब था जिस वक़्त वह सवालात किए गए या

वह वाक्यात पेश आए।

मक्की व मदनी आयात और सूरतें: हिजरते मदीना मुनव्वरा से पहले तकरीबन 13 साल तक कुरान करीम के नुजूल की आयात व सूरतों को मक्की और मदीना मुनव्वरा पहुंचने के बाद तकरीबन 10 साल तक कुरान करीम के नुजूल की आयात व सूरतों को मदनी कहा जाता है। किसी सूरत के मदनी होने के मतलब यह नहीं के इस सूरत की हर आयत मदीना मुनव्वरा हिजरत करने के बाद नाज़िल हुई हो बल्कि अक्सर आयतों के नुजूल के इतिबार से सूरत को मक्की या मदनी कहा गया है।

तारीख हिफाज़ते कुरान: जैसा कि जिक्र किया गया कि कुरान करीम एक ही दफा में नाज़िल नहीं हुआ बल्कि ज़रूरत और हालात के इतिबार से मुख्तलिफ आयात नाज़िल होती रहीं। कुरान करीम की हिफाज़त के लिए सबसे पहले हिफ़्जे कुरान पर ज़ोर दिया गया। चुनांचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्फाज़ को उसी वक़्त दोहराने लगते थे ताकि वह अच्छी तरह याद हो जाएं। इस पर अल्लाह तआला की जानिब से वही नाज़िल हुई कि अँने नुज़ूले वही के वक़्त जल्दी जल्दी अल्फाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं है बल्कि अल्लाह तआला खुद आप में ऐसा हाफ़ज़ा पैदा फरमा देगा कि एक मरतबा नुज़ूले वही के बाद आप उसे भूल नहीं सकेंगे। इस तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले हाफ़िजे कुरान हैं। चुनांचे हर साल माहे रमज़ान में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम के साथ कुरान के नाज़िलशुदा हिस्सों का

दौर फरमाया करते थे। जिस साल आप का इंतिकाल हुआ उस साल आपने दो बार कुरान करीम का दौर फरमाया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा-ए-कराम को कुरान की तालीम ही नहीं देते थे बल्कि उसके अल्फाज़ भी याद कराते थे। खुद सहाबा-ए-कराम को कुरान करीम याद करने का इतना शौक था कि हर शख्स एक दूसरे से आगे बढ़ने की फिक्र में रहता था। चुनांचे हमेशा सहाबा-ए-कराम में एक अच्छी खासी जमाअत एसी रहती जो नाज़िलशुदा कुरान की आयात को याद कर लेती और रातों को नमाज़ में उसे दोहराती ३॥ गरज़ ये कि कुरान करीम की हिफाज़त के लिए सबसे पहले हिफ़ज़े कुरान पर ज़ोर दिया गया और उस वक़्त के लिहाज़ से यही तरीका ज्यादा महफूज़ और काबिले इतिमाद था।

कुरान करीम की हिफाज़त के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान करीम को लिखवाने का भी खास इहतिमाम फरमाया, चुनांचे नुज़ूले वही के बाद आप कातेबिने वही को लिखवा दिया करते थे। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामूल यह था कि जब कुरान करीम का कोई हिस्सा नाज़िल होता तो आप कातिबे वही को यह हिदायत फरमाते थे कि इसे फलां सूरत में फलां आयत के बाद लिखा जाए। उस ज़माने में कागज़ नहीं मिलते थे इस लिए यह कुरानी आयात ज्यादातर पत्थर की सिलों, चमड़े के पारचों, खजूर की शाखों, बांस के टुकड़ों, पेड़ के पत्तों और जानवर की हड्डियों पर लिखी जाती थीं। कातिबे वही में हज़रत जैद बिन साबित, खुलफाए राशिदीन, हज़रत ओबय बिन काब, हज़रत जुबैर बिन अव्वाम और हज़रत मआविया के नाम खास तौर पर ज़िक्र किए जाते हैं।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में हिफाज़ते कुरान:

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में जितने कुरान करीम के नुसखे लिखे हुए थे, हज़रत अबू बकर सिद्दीक के अहदे खिलाफत में जब जंगे यमामा के दौरान हुफ्फाज़े कुरान की एक बड़ी जमाअत शहीद हो गई तो हज़रत उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक को कुरान करीम को एक जगह जमा करवाने का मशविरा दिया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक इब्तिदा में इस काम के लिए तैयार नहीं थे लेकिन शरहेसदर के बाद वह भी इस अज़ीम काम के लिए तैयार हो गए और कातिबे वही हज़रत जैद बिन साबित को इस अहम व अज़ीम अमल का ज़िम्मेदार बनाया। इस तरह कुरान करीम को एक जगह जमा करने का अहम काम शुरू हो गया।

हज़रत जैद बिन साबित खुद कातिबे वही होने के साथ पूरे कुरान करीम के हाफिज़ थे। वह अपनी याददाशत से भी पूरा कुरान लिख सकते थे, उनके अलावा उस वक़्त सैकड़ों हुफ्फाज़े कुरान मौजूद थे मगर उन्होंने इहतियात के पेशेनज़र सिर्फ एक तरीक़े पर बस नहीं किया बल्कि उन तमाम ज़राये से बयक वक़्त काम लेकर उस वक़्त तक कोई आयत अपने सहीफे में दर्ज नहीं की जब तक कि उसके मुतवातिर होने की तहरीरी और ज़बानी शहादतें नहीं मिल गईं। झूके अलावा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान की जो आयात अपनी निगरानी में लिखवाई थीं वह मुस्तलिफ़ सहाबा-ए-कराम के पास महफूज़ थीं, हज़रत जैद बिन साबित ने उन्हें यकजा

फरमाया ताकि नया नुसखा उन्ही से नकल किया जाए, इस तरह खलीफा अब्दुल हज़रत अबू बकर सिद्दीक के अहदे खिलाफत में कुरान करीम एक जगह जमा कर दिया गया।

हज़रत उसमान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में हिफाज़ते कुरान:

जब हज़रत उसमान खलीफा बने तो इस्लाम अरब निकल कर दूर दराज़ अजमी इलाकों तक फैल गया था। हर नए इलाके के लोग उन सहाबा व ताबेईन से कुरान सिखते जिनकी बदौलत उन्हें इस्लाम की नेमत हासिल हुई थी। सहाबा-ए-कराम ने कुरान करीम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुख्तलिफ किरातों के मुताबिक सिखा था। इस लिए हर सहाबी ने अपने शार्गिर्द को इसी किरात के मुताबिक कुरान पढ़ाया जिसके मुताबिक खुद उन्होंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पढ़ा था। इस तरह किरातों का यह इख्तिलाफ दूर दराज़ मुल्कों तक पहुंच गया। लोगों ने अपनी किरात को हक और दूसरी किरातों को गलत समझना शुरू कर दिया, हालांकि अल्लाह तआला ही की तरफ से इजाज़त है कि मुख्तलिफ किरातों में कुरान को पढ़ा जाए। हज़रत उसमान गनी ने हज़रत हफसा के पास पैगाम भेजा कि उनके पास (हज़रत अबू बकर सिद्दीक के तैयार कराए हुए) जो सहीफे मौजूद हैं वह हमारे पास भेज दें। चुनांचे हज़रत जैद बिन साबित की सरपरस्ती में एक कमेटी तशकील देकर उनको मुकल्लफ किया गया कि वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक के सहीफे से नकल करके कुरान करीम के चंद ऐसे नुसखे तैयार करें जिनमें सूतें भी मुत्तब हों। चुनांचे कुरान करीम के चंद नुसखे

तैयार हुए और उनको मुख्तलिफ जगहों पर भेज दिया गया ताकि उसी के मुताबिक नुसखे तैयार करके तकसीम कर दिए जाए। इस तरह उम्मत मुस्लिमा में इखतिलाफ बाकी न रहा और पूरी उम्मत मुस्लिमा इसी नुसखे के मुताबिक कुरान करीम पढ़ने लगी। बाद में लोगों की सहूलत के लिए कुरान करीम पर नुकते व हरकात (ज़बर, ज़ेर और पेश) भी लगाए गए। इसी तरह बच्चों को पढ़ाने के सहूलत के मद्देनज़र कुरान करीम को तीस पारों में तकसीम किया गया। नमाज़ में तिलावते क़ान की सहूलत के लिए रुकु की तरतीब भी रखी गई।

अल्लाह तआला हमें इहतिमाम से क़ान करीम की तिलावत करने वाला बनाए, उसको समझ कर पढ़ने वाला बनाए, उसके अहकाम व मसाएल पर अमल करने वाला बनाए और उसके पैगाम को दूसरों तक पहुंचाने वाला बनाए। आमीन

कुरान फहमी हदीस नबवी के बेगैर मुमकिन नहीं

कुरान: कुरान करीम अल्लाह तआला का वह अज़ीमुश्शान कलाम है जो इंसानों की हिदायत के लिए खालिके कायनात ने अपने आखरी रसूल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अक़वाल व अफआल के ज़रिया लोगों के सामने उसके अहकाम व मसाएल बयान फरमा दें।

हदीस: हदीस उसको कहा जाता है जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल या अमल या किसी सहाबी के अमल पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खामोश रहना या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिफात में किसी सिफत का ज़िक्र किया गया हो।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरान करीम के मुफस्सिर अव्वल:

कुरान व हदीस की तारीफ से ही यह बात वाज़ेह हो जाती है कि जिस पर कुरान करीम नाज़िल हुआ उसके अक़वाल व अफआल के बेगैर कुरान करीम को कैसे समझा जा सकता है? खुद अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बहुत बार इस हकीकत को बयान फरमाया है, जिनमें से दो आयात के तर्जुमे नीचे दिए गए हैं

“यह किताब हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ उतारी है ताकि लोगों की जानिब जो हुकुम नाज़िल फरमाया गया है आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे खोल खोल कर बयान कर दें, शायद कि वह गौर व फिक्र करें।" (सूरह अन नहल 44)

"यह किताब हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इसलिए उतारी है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए हर उस चीज़ को वाज़ेह कर दें जिसमें वह इखितलाफ कर रहे हैं।" (सूरह अन नहल 64)

अल्लाह तआला ने इन दोनों आयात के तर्जुमे में वाज़ेह तौर बयान फरमा दिया कि कुरान करीम के मुफस्सिरे अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अल्लाह तआला की तरफ से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह ज़िम्मेदारी आएद की गई है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मत मुस्लिमा के सामने कुरान करीम के अहकाम व मसाएल खोल खोल कर बयान करें और हमारा ईमान यह है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अक़्वाल व अफआल के ज़रिया कुरान करीम के अहकाम व मसाएल बयान करने की ज़िम्मेदारी बहुस्न खूबी अंजाम दी। सहाबा कराम, ताबईन और तबेताबईन के ज़रिया हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़्वाल व अफआल यानी हदीस नबवी के जखीरा से कुरान करीम की पहली अहम और बुनियादी तफसीर इतिहाई काबिले इतिमाद जराय से उम्मत मुस्लिमा को पहुंची है लिहाज़ा कुरान फहमी हदीस के बेगैर मुमकिन ही नहीं है।

अल्लाह की इताअत के साथ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत भी जरूरी:

अल्लाह तआला ने कुरान करीम की सैकड़ों आयात में अपनी इताअत

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल कसिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारुल हक कासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब	10
5	नुज़ूल व हिफाज़ते कुरान करीम	11
6	नुज़ूले वही के चंद तरीके	12
7	तारीख नुज़ूले कुरान	13
8	तारीख हिफाज़ते कुरान	16
9	हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में हिफाज़ते कुरान	18
10	हज़रत उसमान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में हिफाज़ते कुरान	19
11	कुरान फहमी हदीस नबवी के बेगैर मुमकिन नहीं	21
12	करीम के मुफस्सिरे अब्बल	21
13	सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत भी जरूरी	22
14	कुरान करीम में मुजमल अहकाम	27
15	कुरान करीम और हम	32
16	मालूमाते कुरानी	39
17	मज़ामीने कुरान	41
18	रमज़ान का महीना और कुरान करीम	45

मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फरमाएगा।"

अल्लाह तआला ने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत पर दाइमी जन्नत नीज़ अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी पर दाइमी अज़ाब का फैसला फरमाया "जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करेगा उसे अल्लाह तआला ऐसी जन्नतों में दाखिल फरमाएगा जिनके नीचे नहरे बहती होंगी और बागों में वह हमेशा रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है। और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा और उसकी मुकर्ररह हदों से आगे निकलेगा उसे वह जहन्नम में डाल देगा जिसमें वह हमेशा रहेगा ऐसों ही के लिए रुसवा कुन अज़ाब है।" गरज़ ये कि अल्लाह और उसके रसूल की इताअत न करने वालों का ठिकाना जहन्नम है। (सूरह अननिसा आयत 13, 14) दूसरी जगह इरशाद बारी है "जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करेगा उसे अल्लाह तआला ऐसी जन्नतों में दाखिल फरमाएगा जिनके नीचे नहरे बहती होंगी और जो मुंह फेरेगा उसे दर्दनाक अज़ाब देगा। (सूरह फतह आयत 17)

अल्लाह तआला ने कयामत तक आने वाले इंसानों के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल व अमल यानी हदीस नबवी को नमूना बना कर इरशाद फरमाया "बेशक तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में ऊमदा नमूना मौजूद है हर उस शख्स के लिए जो अल्लाह तआला की और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है और बहुत ज्यादा अल्लाह की याद करता है।" (सूरह अल अहज़ाब आयत 21) यानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की पूरी जिंदगी के अहवाल जो अहादीस के ज़खीरे की शकल में हमारे पास महफूज़ हैं कल क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए बेहतरीन नमूना है ताकि हम अपनी ज़िन्दगियाँ उसी नमूना के मुताबिक गुज़ारें।

इताअते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फर्ज़ीयत खुद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल से।

सारे अम्बिया के सरदार व आखरी नबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी कुरान करीम के साथ सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा को ज़रूरी करार दिया है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल को जाने बेगैर इताअते रसूल मुमकिन ही नहीं है और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल हदीस के ज़खिरा ही में तो मौजूद हैं। हदीस की लगभग पूरी किताबों में इताअते रसूल के मुतअल्लिक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात तवातुर के साथ मौजूद हैं, इनमें से सिर्फ़ तीन अहादीस पेशे खिदमत है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने अल्लाह की नाफरमानी की।" (बुखारी व मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जब मैं तुम्हें किसी चीज़ से रूक तो उससे रुक जाओ और जब मैं तुम्हें किसी काम का हुकुम दूं तो हसबे इस्तिताअत उसपर अमल करो।" (बुखारी व मुस्लिम)

प्रस्तावना

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कबिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में छोड़े दौड़ा दिए हैं त्क़ इस

से भी यह बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाती है “ऐ हमारे रबा इनमें इन्हीं में से रूस भेज जो इनके पास तेरी आयतें पढ़ें, इन्हें किताब व हिकमत सिखाए और इनको पाकीज़ा बनाए।” यहां किताब से मुराद कुरान करीम और हिकमत से मुराद हदीस है।

कुरान करीम में मुजमल अहकाम: कुरान करीम में ओमुमन अहकाम की तफसील मज़कूर नहीं है यहां तक कि इस्लाम के बुनियादी अरकान नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज के अहकाम भी कुरान करीम में तफसील के साथ मज़कूर नहीं हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुकुम के मुताबिक अपने अक़वाल व आमाल से उन मुजमल अहकाम की तफसील बयान की है। अल्लाह तआला इसी लिए नबी व रूसूल भेजता है ताकि वह अल्लाह तआला के अहकाम अपने अक़वाल व आमाल से उम्मतियों के लिए बयान करें। मसलन अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बेशुमार मक्कामात पर नमाज़ पढ़ने, रूकू करने और सजदा करने का हुकुम दिया है लेकिन नमाज़ की तफसील कुरान करीम में मज़कूर नहीं है कि एक दिन में कितनी नमाज़ें अदा करनी हैं? क़याम या रूकू सजदा कैसे किया जाएगा और कब किया जाएगा? और इसमें क्या पढ़ा जाएगा? एक वक़्त में कितनी नमाज़ें अदा करनी हैं? इसी तरह कुरान करीम में ज़कात की अदाएगी का तो हुकुम है लेकिन तफसीलात के बारे जिक्र नहीं है कि ज़कात की अदाएगी रोज़ाना करनी है या साल भर में या पांच साल में या ज़िंदगी में एक मर्तबा? फिर यह ज़कात किस हिसाब से दी जाएगी? किस माल पर ज़कात वाजिब है और उसके लिए क्या क्या शराएत हैं? गरज़ ये कि अब

हदीस नबवी को कुरान की पहली अहम और बुनियादी तफसीर मानने से इंकार करें तो कुरान करीम की वह सैकड़ों आयात जिनमें नमाज़ पढ़ने रोज़ा रखने ज़कात और हज की अदाएंगी का हुकुम है वह सब अल्लाह की पनाह बेमाना हो जाएंगी।

इसी तरह कुरान करीम (सूरह अलमाइदा 38) में हुकुम है कि चोरी करने वाले मर्द और औरत के हाथ काट दिया जाए। अब सवाल पैदा होता है कि दोनों हाथ काटें या एक हाथ? और अगर एक हाथ कटें तो दहिना काटें या बाँया? फिर उसे काटे तो कहां से? बगल से या कोहनी से या कलाई से? या इनके बीच में किसी जगह से? फिर कितने माल की कीमत की चोरी पर हाथ काटें? इस मसअला की मुकम्मल वज़ाहत हदीस में ही मिलती है, मालूम हुआ कि कुरान करीम को हदीस के बेगैर नहीं समझा जा सकता।

इसी तरह कुरान करीम (सूरह अलजुमा) में इरशाद है कि जब जुमा की नमाज़ के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ दौड़ो और खरीद व फरोख्त छोड़ दो। सवाल यह है कि जुमा का दिन कौन-सा है? यह आजान कब दी जाए? उसके अल्फाज़ क्या हों? जुमा की नमाज़ कब अदा की जाए? इस को कैसे पढ़ें? खरीद व फरोख्त की क्या क्या शराएत हैं? इस मसअला की मुकम्मल वज़ाहत अहादीस में ही मज़कूर हैं।

नुज़ूले कुरान की कैफियत का बयान मुख्तलिफ सूरातों व आयात के पढ़ने की खास फज़ीलत का ज़िक्र, आयात का शाने नुज़ूल, कुरान करीम में मज़कूर अम्बिया और उनकी उम्मतों के वाक़यात की तफसील, नासिख व मंसूख की तार्ईन, इसी तरह हिफाज़ते कुरान के मराहिल का बयान अहादीस में ही तो है लिहाज़ा हदीस के बैब

कुरान करीम को कैसे समझा जा सकता है?

एक वज़ाहत: अल्लाह तआला ने हमें कुरान करीम में तदब्बुर व तफक्कुर करने का हुकुम दिया है मगर यह तदब्बुर व तफक्कुर मुफस्सिर अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल की रौशनी में ही होना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला ही ने बहुत सी जगहों पर इरशाद फरमाया है कि ऐ नबी! यह किताब हमने आप पर नाज़िल फरमाई है ताकि आप इस कलाम को खोल खोल कर लोगों के लिए बयान कर दें और हमारा यह ईमान है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी इस जिम्मेदारी को बखुबी अंजाम दिया। लेकिन कुछ हज़रात कुरान करीम की तफसीर में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व इरशादात को कमज़ोर करार देकर अपनी राय थोपना शुरू कर देते हैं जो कि सरासर गलत है। यकीनन हमें कुरान करीम को समझ कर पढ़ना चाहिए क्योंकि यह किताब हमारी हिदायत व रहनुमाई के लिए अल्लाह तआला ने नाज़िल फरमाई है। और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान करीम के अहकाम खोल खोल कर बयान फरमा दिए हैं लेकिन हमारे लिए जरूरी है कि जिन मसाएल में भी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल या आमाल से रहनुमाई मिल सकती है ख़वाह हदीस की सनद में थोड़ा ज़ोफ भी हो। इन मसाएल में अपने इजतिहाद व क़यास और अपने अक्ली घोड़े दौड़ाने के बजाए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व आमाल के मुताबिक ही अमल करें। नए नए मसाएल के हल के लिए कुरान करीम में तदब्बुर व तफक्कुर और हदीस नबवी

के ज़खीरा में गोता अंदोज़ी जरूर करें मगरु खून व हदीस को बालाए ताक रख कर नहीं बल्कि कुरान व हदीस की रौशनी ही में।

एक शुबहा का इज़ाला: बाज़ हज़रात कुरान करीम की चंद आयात से गलत मफहूम लेकर यह बयान करने की कोशिश करते हैं कि कुरान करीम में हर मसअला का हल है और कुरान करीम को समझने के लिए हदीस की कोई खास जरूरत नहीं है। हालांकि हदीस रसूल भी कुरान करीम की तरह शरीअते इस्लामिया कतई दलील और हुज्जत है, जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने कुरान करीम में बुरह सी जगहों पर मुकम्मल के साथ ज़िक्र किया है। नीज़ कुरान करीम में यह कहा है कि जो कुरान में हो बस उसी पर अमल करना लाजिम है बल्कि कुरान करीम में अल्लाह तआला ने सैकड़ों आयात “अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इताअत करो” का हुकुम दिया है, बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत को अपनी इताअत करार दिया है। अगर कुरान करीम ही हमारे लिए काफी है तो फिर अल्लाह तआला ने कुरान करीम में जगह जगह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत का हुकुम क्यों दिया है?

दूसरे शुबहे का इज़ाला: बाज़ हज़रात सनद हदीस की बुनियाद पर हुई अहादीस की अकसाम या रावियों को सिकह करार देने में मुहद्देसीन व फुकहा के इख्तिलाफ की वजह से हदीस रसूल को ही शक व शुबहा की निगाह से देखते हैं हालांकि उन्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम को क़यामत तक आने वाले तमाम अरब व अजम की रहनुमाई के लिए अपने आखरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया और क़यामत तक उसकी

हिफाज़त का वादा किया है। और इसी कुरान करीम में अल्लाह तआला ने बहुत सी जगहों पर इरशाद फरमाया है कि ऐ नबी! यह किताब हमने आप पर नाज़िल फरमाई है ताकि आप इस कलाम को खोल खोल कर लोगों के लिए बयान कर दें। तो जिस तरह अल्लाह तआला ने कुरान करीम के अल्फाज़ की हिफाज़त की है, उसके मानी व मफाहीम जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने बयान फरमाए हैं वह भी कल कयामत तक महफूज़ रहेंगे। इंशाअल्लाह कुरान करीम के अल्फाज़ के साथ उसके मानी व मफहूम की हिफाज़त भी मतलूब है वरना नुज़ूले कुरान का मकसद ही फौत हो जाएगा।

अल्लाह तआला हम सबको कुरान व हदीस के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने वाला बनाए। आमीन।

सोर्स) मैं ज़िक्र किया गया है कि जिस तरह ईमान के मामले में अल्लाह और उसके रसूल के दरमयान तफरीक नहीं की जा सकती है कि एक को माना जाए और दूसरे को न माना जाए। ठीक इसी तरह कलामुल्लाह (कुरान करीम) और कलामे रसूल (हदीस) के दरमयान भी किसी तफरीक की कोई गुंजाइश नहीं है कि एक को माना जाए और दूसरे को न माना जाए क्योंकि इन दोनों में से किसी एक के इंकार पर दूसरे का इंकार खुद बखुद लाजिम आ जाएगा। कुराने करीम और हदीसे नबवी से मुतअल्लिक दूसरे बहुत से मज़ामीन भी इस किताब का हिस्सा हैं।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूं कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रात मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूं कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूं जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया “यह किताब है इसमें कोई शक नहीं हिदायत है परहेजगारों के लिए।” (सूरह अलबकरा आयत 2)

नुज़ूले कुरान: हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुखतलिफ तरीकों से वही नाज़िल होती थी।

(1) घंटी की सी आवाज़ सुनाई देती और आवाज़ ने जो कुछ कहा होता वह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को याद हो जाता। जब इस तरीका पर वही नाज़िल होती थी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बहुत ज्यादा बोझ पड़ता था।

(2) फरिशता किसी इंसानी शकल में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आता और अल्लाह तआला का पैगाम पहुंचा देता। ऐसे मवाके पर ओमुमन हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम मशहूर सहाबी हज़रत दहिया कल्बी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सूरत में तशरीफ लाया करते थे।

(3) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम अपनी असल सूरत में तशरीफ लाते थे।

(4) बिना वास्ता अल्लाह तआला से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हमकलामी हुई। यह सिर्फ एक बार मेराज के मौका पर हुआ। नमाज़ की फर्ज़ियत इसी मौका पर हुई।

(5) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आए बेगैर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सीने में इल्का फरमा देते थे।

तारीख नुज़ूले कुरान: माहे रमज़ान की एक बाबरकत रात लैलतुलकदर

में अल्लाह तआला ने लौहे महफूज़ से समाए दुनिया पर कुरान करीम नाज़िल फरमाया और उसके बाद हसबे जरूरत थोड़ा-थोड़ा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होता रहा और तकरीबन 23 साल के अरसा में कुरान करीम मुकम्मल नाज़िल हुआ। कुरान करीम का तदरीजी नुज़ूल उस वक़्त शुरू हुआ जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र चालीस साल थी। कुरान करीम की सबसे पहली जो आयतें गारे हिरा में उतरीं वह सूरह अलक की इब्तिदाई आयात हैं। "पढ़ो अपने उस परवरदिगार के नाम से जिस ने पैदा किया, जिसने इंसान को जमे हुए खून से पैदा किया, पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार सबसे ज्यादा करीम है।" इस पहली वही के नुज़ूल के बाद तीन साल तक वही के नुज़ूल का सिलसिला बन्द रहा। तीन साल के बाद वही फरिशता जो गारे हिरा में आया था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और सूरह अलमुदस्सिर की इब्तिदाई चंद आयात आप पर नाज़िल फरमाई। "ऐ कपड़े में लिपटने वाले उठो और लोगों को खबरदार करो और अपने परवरदिगार की तकबीर कहो और अपने कपड़ों को पाक रखो और गंदगी से किनारा कर लो।"

इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात तक वही का तदरीजी सिलसिला जारी रहा। गरज़ ये कि तकरीबन 23 साल के अरसा में कुरान करीम मुकम्मल नाज़िल हुआ। इमाम राज़ी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने कुरान करीम के तदरीजी नुज़ूल की जो हिकमतें बयान की फरमाई हैं उनका खुलासा कलाम यह है।

(1) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी थे (अनपढ़) इस लिए अगर सारा कुरान एक मरतबा नाज़िल हो गया होता तो इसका

याद रखना और जब्त करना दुशवार होता।

(2) अगर पूरा कुरान एक दफा में नाज़िल हो जाता तो तमाम अहकाम की पाबंदी जल्द लाज़िम हो जाती और यह इस हकीमाना तदरीज के खिलाफ होता जो शरीअते मोहम्मदी में मलहूज़ रही है।

(3) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी कौम की तरफ से हर रोज़ नई अजियतें बर्दाशत करनी पड़ती थी, हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम का बार बार कुरान करीम लेकर आना इन अजियतों के मुकाबले को आसान बना देता था और आप की तकवियते कल्ब का बदला बनता था।

(4) कुरान करीम का एक हिस्सा लोगों के सवालात के जवाब और मुख्तलिफ वाक़यात से मुतअल्लिक है, इस लिए इन आयतों का नुज़ूल इसी वक्त मुनासिब था जिस वक्त वह सवालात किए गए या वह वाक़यात पेश आए।

हिफाज़ते कुरान: जैसा कि जिक्र किया गया कि कुरान करीम एक ही दफा में नाज़िल नहीं हुआ बल्कि ज़रूरत और हालात के इतिबार से मुख्तलिफ आयात नाज़िल होती रहीं। कुरान करीम की हिफाज़त के लिए सबसे पहले हिफ़ज़े कुरान पर जोर दिया गया। चूनांचे खुद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्फाज़ को उसी वक्त दोहराने लगते थे ताकि वह अच्छी तरह याद हो जाएँ। इस पर अल्लाह तआला की जानिब से वही नाज़िल हुई कि अँने नुज़ूले वही के वक्त जल्दी जल्दी अल्फाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं है बल्कि अल्लाह तआला खुद आप में ऐसा हाफ़ज़ा पैदा फरमा देगा कि एक मरतबा नुज़ूले वही के बाद आप उसे भुल नहीं सकेंगे। इस तरह हुज़ूर अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले हाफिजे कुरान हैं। चूनांचे हर साल रमज़ान के महिने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम के साथ कुरान के नाज़िलशुदा हिस्सों का दौर फरमाया करते थे। जिस साल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंतिकाल हुआ उस साल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो बार कुरान करीम का दौर फरमाया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा-ए-कराम को कुरान के मानी की तालीम ही नहीं देते थे बल्कि उसके अल्फाज़ भी याद कराते थे। खुद सहाबा-ए-कराम को कुरान करीम याद करने का इतना शौक था कि हर शख्स एक दूसरे से आगे बढ़ने की फि़क्र में रहता था। चूनांचे हमेशा सहाबा-ए-कराम में एक अच्छी खासी जमाअत एसी रहती जो नाज़िलशुदा कुरान की आयात को याद कर लेती और रातों को नमाज़ में उसे दोहराती ॥ गरज़ ये कि कुरान करीम की हिफाज़त के लिए सबसे पहले हिफ़ज़े कुरान पर ज़ोर दिया गया और उस वक़्त के लिहाज़ से यही तरीका ज्यादा महफूज़ और क़ाबिले एतिमाद था।

कुरान करीम की हिफाज़त के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान करीम को लिखवाने का भी खास इहतिमाम फरमाया, चूनांचे नुज़ूल वही के बाद आप कातेबिने वही को लिखवा दिया करते थे। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामूल यह था कि जब कुरान करीम का कोई हिस्सा नाज़िल होता तो आप कातिबे वही को यह हिदायत फरमाते थे कि इसे फला सूरत में फला आयात के बाद लिखा जाए। उस ज़माने में कागज़ नहीं मिलते थे इस लिए यह कुरानी आयात ज्यादातर पत्थर की सिलों, चमड़ें के पारचों, खजूर की शाखों, बांस के टुकड़ों, पेड़ के पत्तों और जानवर

के हडिड्यों पर लिखी जाती थीं। कातिबे वही में हज़रत जैद बिन साबित, खुलफाए राशिदीन, हज़रत ओबय बिन काब, हज़रत जुबैर बिन अव्वाम और हज़रत मुआविया के नाम खास तौर पर जिक्र किए जाते हैं।

हज़रत जैद बिन साबित खुद कातिबे वही होने के साथ पूरे कुरान करीम के हाफिज़ थे। वह अपनी याद दाशत से भी पूरा कुरान लिख सकते थे, उनके अलावा उस वक्त सैकड़ों हूफफाजे कुरान मौजूद थे मगर उन्होंने इहतियात के पेशनजर सिर्फ एक तरीका पर बस नहीं किया बल्कि उन तमाम जराये से बयकवक्त काम लेकर उस वक्त तक कोई आयत अपने सहीफे में दर्ज नहीं की जब तक कि उसके मुतवातिर होने की तहरीरी और ज़बानी शहादतें नहीं मिल गईं। इसके अलावा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान की जो आयात अपनी निगरानी में लिखवाई थीं वह मुख्तलिफ सहाबा-ए-कराम के पास महफूज़ थीं, हज़रत जैद बिन साबित ने उन्हें एक जगह जमा फरमाया ताकि नया नुसखा उन्हीं से नकल किया जाए। इस तरह खलीफा अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में कुरान करीम एक जगह जमा कर दिया गया।

जब हज़रत उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) खलीफा बने तो इस्लाम अरब से निकल कर दूर दराज़ अजमी इलाकों तक फैल गया था। हर नए इलाके के लोग उन सहाबा व ताबेईन से कुरान सिखते जिनकी बदौलत उन्हें इस्लाम की नेमत हासिल हुई थी। सहाबा-ए-कराम ने कुरान करीम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुख्तलिफ किरातों के मुताबिक सिखा था। इस लिए हर सहाबी ने अपने शागिर्दों



10/05/2011

مصر کا سفر میں دینی تعلیمات کو جدید آلاءت و وسایل کے ذریعہ عام انسان تک پہنچانا اور اہل سنت کا ہمہ تن قصد ہے۔ اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی غور کھیلنے والے حضرات نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے سبب آج تقریباً پورے ممالک کے تقاضوں کے مطابق مسابغہ جو ہے، اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن جب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و روحانیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں عرب، ایران، الجزائر، مصر، پاکستان، بنگلہ دیش وغیرہ شامل ہیں۔

اگر کوئی شخص یہ کہے کہ کمالی کا فہم رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین اور کتابوں میں بڑی دلچسپی کے ساتھ چرچے جھگڑے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی طبیعت، نوینی، واقف ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دیکھنا پڑتا ہے۔ ایسے ایسے لوگوں کو تک پہنچانے کے لیے جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شہسیت علم دہنی کے ساتھ علوم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، تو دوسری طرف دانشور و تحقیقی اور تکنیکی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ فاضل و محرمک و جوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عام کے سامنے لارے ہیں، وہ ان کے لئے تقسیم اور سہارا بنا کے پیشکش ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو سمجھنے والے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ تحقیقی بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور ان کا یہ کمالی فن کے تقاضے ہم پر ماحول رہیں۔ آمین!

10

(مضامین) کے ساتھ ساتھ دیگر کامیابی

المعروف في قوله - سبحانه - (الطه)

صدر آل انڈیا تعلیمی کمیٹی کا اعلان

Email: asrarulhaggasmid@gmail.com

प्रो. अरुणकुमार दास

आयुर्वेद

PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner



भाषागत अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs
Government of India

المقر

اطلاعاتی انقلاب بڑھانے کے بعد جس طرح ہم کی معلومات اور تحریک کے درجہ انھوں کی دیکھیں شہادت میں ہیں۔ اس سے انکار
میں ہرگز نہ ہوگا۔ "کڑے میں رہا" کے لفظی معنی تھوڑے سے صرف حقیقت اور بڑے سے بڑے کھانا اور دھواں اور جڑے جڑے کھانا ہوتا ہے۔ کھان
(Google) اور ایک ویکی پیڈیا (Wikipedia) یا دیگر دوسری سوشل سائنس ایپس نے تھوڑے اوقات کا دورہ کیا اور دیکھا کہ وہ لکھی گئی خط
کے لیے کوئی قیاسی قیاس کے تمام سوالات سے متعلق ہو کر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اعلیٰ معیار کے انقلاب نے ایک نیا دور کھولا ہے اور اب اس کے فوائد
روشنی اور غور سے دیکھ رہی ہیں۔ حقیقت میں اس طرح شامل ہو چکے ہیں اور اس نئی اپنی اصطلاح اور مسائل سے
بہتر ہو کر آ رہا ہے۔ دوسرا انھیں مسئلہ ہے کہ باوجود ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لیے اس خط کو کی حالت کو ان میں خاص کم ہوا جاتا
ہو چکا ہے۔ کیونکہ وہ نیا کتب گاہ میں اپنی اپنی قسم میں شامل رہتی ہے اور وہ اب کبھی اس طرح بڑھتا جاتا ہے جس میں اس کی فہم اور سیکھنے کے
عمل کے شعور ہے کہ یہ خط ہمیں دیکھنے اور حقیقت کو اپنا ہر تھوڑے سے لے اور اپنے تمام دیکھنے خاص طور پر جس کی اس خط کو سیکھنا ہے اور ہم
کرنے اور انھیں دیکھنا ہے اور ان کے شعور میں ہائیڈ کی ہر تھوڑے سے لے اس خط کو انقلاب کے جتنے بھی وسائل اور مواقع ہیں ان کا
ہر مسئلہ حل کریں۔

مجھے غائبی ہے کہ اسے ایک مہتر اور مسٹر عام حضرت امیر مولانا محمد نجیب آبادی نے جازیرہ بحرہ المصنوعہ کے قائل قرار دیا ہے۔ یہ ہم
نہایت سے ہیں اور عرصہ سے حکومت سعودی عرب کی راہبرداری، راضی میں سرکار میں انہوں نے اس ضرورت کو کوئی ایک بار اور ایک ایک جلیبی اسلامی
موسا بن حبیب "ابن اسحاق ابن ابی خازم" اور انگریزوں نے یہودی میں چار ایک بار کہ وہ اب وقت گزرنے کے ساتھ ساتھ سولہ کی دہائی میں
خود ان کے کثرت سے متعلق ہیں، اسے یہ بات قابل ذکر ہے کہ ایک دفعہ صدر اتحاد کے ساتھ قاضی کرنے پر ہے۔ جو یہ راضی ہوئی کے
تعلق سے ملایا ہے کہ یہ اتحاد سے اس وقت میں کہ انگریزوں نے اپنی ایک مہتر عام بنایا ہے۔ یہ اتحاد کو ایک بار مسلمان مولانا محمد نجیب آبادی
صاحب کے حوالے سے انگریزوں کے متعلق تو اسات سے اس اتحاد کرنے کا کوئی حوالہ دیا ہے۔ یہ ان کے حوالے سے یہ بات قابل ذکر ہے کہ ان
انگریزوں نے یہ بات کیا کہ مولانا محمد نجیب آبادی کی خدمت میں یہ چار ایک انگریزوں کی کہ ان کے اسات سے اس اتحاد کرنے کا کوئی حوالہ دیا ہے۔
مذاہبی میں اسات سے اس اتحاد کرنے کا کوئی حوالہ دیا ہے۔ یہ ان کے حوالے سے یہ بات قابل ذکر ہے کہ ان

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عیشی کے احوال یہ بھی ہیں

احمد علی
(پروفیسر انجمن اسلامی)

سابقہ انگریزوں کے زیرِ قیادت مسیحی مبلغین نے آف سرحد کے علاقے
سابقہ صدر شہید سادک خان کے چاروں طرف مسیحی مصلحی
سابقہ انیسویں صدی کے مسیحی مبلغین کے

नुज़ूल व हिफाज़ते कुरान करीम

कुरान: कुरान करीम अल्लाह तआला का वह अज़ीमुश्शान कलाम है जो इंसानों की हिदायत के लिए खालिके कायनात ने अपने आखरी रसूल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया। अल्लाह तआला ने कुरान करीम की हिफाज़त खुद अपने ज़िम्मे ली जैसा कि अल्लाह तआला का फैसला कुरान करीम में मौजूद है (सूरह अलहिजर आयत 9) “यह ज़िक्र (यानी कुरान) हमने ही उतारा है और हम ही इसकी हिफाज़त करने वाले हैं” कुरान करीम आखरी आसमानी किताब है जो क़यामत तक के लिए नाफ़िज़ुल अमल रहेगी, बरखिलाफ पहली आसमानी किताबों के वह खास कौमों और खास ज़मानों के लिए थीं। इसी लिए अल्लाह तआला ने इन को क़यामत तक महफूज़ रखने की कोई ज़मानत नहीं दी थी लेकिन अल्लाह तआला ने कुरान करीम की हिफाज़त का ज़िम्मा खुद लिया है।

वही: कुरान करीम चूंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वही के ज़रिया नाज़िल किया गया है इस लिए सबसे पहले वही के बारे में जानें। वही वह कलाम है जो अल्लाह तआला हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम के वास्ता या बिला वास्ता अपने अम्बिया पर इल्का फरमाता है, जिसके ज़रिया खालिके कायनात इंसान को दुनयावी ज़िंदगी गुज़ारने का तरीका बतलाता है ताकि लोग उसके बतलाए हुए तरीके पर दुनयावी ज़िंदगी गुज़ार कर जहन्नम से बच कर हमेशा हमेशा की जन्नत में दाखिल हो जाएं।

“यह किताब हमने आप पर इस लिए उतारी है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए हर उस चीज़ को वाज़ेह कर दें जिसमें वह इख्तिलाफ कर रहे हैं।” (सूरह अन नहल 64)

अल्लाह तआला ने इन दोनों आयात में वाज़ेह तौर पर बयान फरमा दिया है कि कुरान करीम के मुफस्सिर अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह तआला की तरफ से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह जिम्मेदारी आएद की गई है कि आप उम्मत मुस्लिमा के सामने कुरान करीम के अहकाम व मसाइल खोल खोल कर बयान करें और हमारा ईमान है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अकवाल व अफआल के जरिया कुरान करीम के अहकाम व मसाइल बयान करने की जिम्मेदारी बहुसन खूबी अंजाम दी। सहाबा और ताबेईन और तबेताबईन के जरिया हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अकवाल व अफआल यानी हदीसे नबवी के जखीरा से कुरान करीम की पहली अहम बुनियादी तफसीर इतिहाई काबिले इतिमाद जराये से उम्मत मुस्लिमा को पहुंची है, लिहाज़ा कुरान फहमी हदीस के बेगैर मुमकीन नहीं है।

मज़ामीने कुरान: उलमा-ए-कराम ने कुरान करीम के मुख्तलिफ किसमें जिक्र फरमाए हैं, तफसिलात से कत-ए-नज़र उन मज़ामीन की बुनियादी तकसीम इस तरह है।

(1) अकाएद (2) अहकाम (3) किस्से
कुरान करीम में ओम्मी तौर पर सिर्फ ओस्स जिक्र किए गए हैं, लिहाज़ा अकाएद व अहकाम की तफसील अहादीस नबविया में ही

मिलती है यानी कुरान करीम के मज़ामीन को हम अहादीस नबविया के बेगैर नहीं समझ सकते हैं।

(1) अकाएद

तौहीद, रिसालत, आखिरत वगैरह के मज़ामीन इसी के तहत आते हैं। अकाएद पर कुरान करीम ने बहुत ज्यादा ज़ोर दिया है और इन बुनियादी अकाएद को मुख्तलिफ अल्फाज़ से बार बार जिक्र फरमाया है। इन के अलावा फरिश्तों पर इमान लाना, आसमानी किताबों पर इमान लाना, तकदीर पर इमान लाना, जज़ा व सज़ा, जन्नत व दोज़ख, अज़ाबे कब्र, सवाबे कब्र, क़यामत की तफसीलात वगैरह भी मुख्तलिफ अकीदों पर कुरान करीम में रौशनी डाली गई है।

(2) अहकाम

इसके तहत निचे दिए गए अहकाम और उनसे मुतअल्लिक मसाइल आते हैं:

इबादती अहकाम नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज वगैरह के अहकाम व मसाइल। कुरान करीम में सबसे ज्यादा ताकीद नमाज़ पढ़ने के मुतअल्लिक आया है। कुरान करीम में नमाज़ की अदाएगी के हूकूम के साथ ओमुमन ज़कात का भी हूकूम भी आया है।

मुआशरती अहकाम मसलन हुकूकूल इबाद की सारी तफसीलात।

मआशी अहकाम खरीद व फरोख्त, हलाल व हराम और माल कमाने और खर्च करने के मसाइल।

अखलाकी व समाजी अहकाम इंफिरादी व इजतिमाई जिन्दगी से मुतअल्लिक अहकाम व मसाइल।

सियासी अहकाम हुकूमत और रिआया के हुकूक से मुतअल्लिक व मसाइल।

ज्यादा बोझ पड़ता था।

(2) फरिश्ता किसी इंसानी शकल में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आता और अल्लाह तआला का पैगाम पहुंचा देता। ऐसे मौका पर उमुमन हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम मशहुर सहाबी हज़रत दहिया कल्बी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सूरत में तशरीफ लाया करते थे।

(3) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम अपनी असल सूरत में तशरीफ लाते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र में सिर्फ तीन बार ऐसा हुआ है। एक नुबुवत के बिल्कुल इब्तिदाई दौर में दूसरी बार खुद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम से उनकी असल सूरत में देखने की ख्वाहिश ज़ाहिर फरमाई थी और तीसरी बार मेराज के मौका पर।

(4) बिला वास्ता अल्लाह तआला से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हमकलामी हुई। यह सिर्फ एक बार मेराज के मौका पर हुआ। नमाज़ की फर्ज़ीयत इसी मौका पर हुई।

(5) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आए बेगैर आप के सीने में इल्का फरमा देते थे।

तारीख नुज़ूले कुरान: माहे रमज़ान की एक बाबरकत रात तैलतुलकदर में अल्लाह तआला ने लौहे महफ़्ज़ से समा-ए-दुनिया पर कुरान करीम नाज़िल फरमाया और उसके बाद हसबे जरूरत थोड़ा-थोड़ा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होता रहा और तकरीबन 23 साल के अरसा में कुरान करीम मुकम्मल नाज़िल हुआ। कुरान करीम का तदरीजी नुज़ूल उस वक़्त

सर्फ करते हैं और हमारी नज़र सिर्फ और सिर्फ इस आरुम्हियवी और इस आराम व असाईश पर होती है और उस अबदी व लाफानी दुनिया के लिए कोई खास कोशिश नहीं करते मगर सिवाए एक दो के। लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम अपना और अपने बच्चों का तअल्लुक कुरान व हदीस से जोड़े, उसकी तिलावत का इहतिमाम करें, उलमा की सरपरस्ती में कुरान व हदीस के अहकाम समझ कर उनपर अमल करें और इस बात की कोशिश करें कि हमारे साथ हमारे बच्चे, घर वाले, पड़ोसी, दोस्त व अहबाब व मुतअल्लेकीन भी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लाए हुए तरीका पर जिंदगी गुज़ारने वाले बन जाएं।

आज असरी तालीम को इस कदर फौकियत दी जा रही है कि लड़कों और लड़कियों को कुरान करीम नाज़िरह की भी तालीम नहीं दी जा रही है क्योंकि उनको स्कूल जाना, होमवर्क करना, परोजेक्ट तैयार करना, इमतिहानात की तैयारी करनी है वगैरह वगैरह यानी दुनियावी जिंदगी की तालीम के लिए हर तरह की जान व माल और वक्त की कुर्बानी देना आसान है लेकिन अल्लाह तआला के कलाम को सीखने में हमें शुष्क़ारी महसूस होती है। गौर फरमाएँ कि कुरान करीम अल्लाह तआला का कलाम है जो उसने हमारी रहनुमाई के लिए नाज़िल फरमाया और उसके पढ़ने पर अल्लाह तआला ने बड़ा सवाब रखा है। अल्लाह तआला हम सबको हिदायत अता फरमाए और कुरान करीम को समझने वाला और कुरान व हदीस के अहकाम पर अमल करने वाला बनाए, आमीन।

रमज़ान का महीना और कुरान करीम

रमज़ान का महीना इस्लामी महीनों का नवां महीना है, इस महीने में रोज़े रखना हर मुसलमान बालिग, आकिल, सेहतमंद, मुक्रीम, मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है जिसकी अदाएगी के ज़रिया ख्वाहिशात को काबू में रखने का मलका पैदा होता है और वही तक्वा की बुनियाद है। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “ऐ ईमान वालों तुमपर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं जिस तरह मुझे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ” (सूरह अलबकरा 183) परहेज़गार बनने के मतलब यह कि जिंदगी में तक्वा पैदा करने के लिए रोज़ा का बड़ा असर है।

इसी मुबारक महीने की एक रात में क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों की रहनुमाई के लिए अल्लाह तआला की किताब कुरान करीम आसमान से दुनिया पर उतारी गई जिससे फ़ायदा हासिल करने का बुनियादी शर्त भी तक्वा है। अल्लाह तआला का इरशाद है यह किताब ऐसी है कि इसमें कोई शक नहीं, हिदायत है परहेज़गारों के लिए मतलब अल्लाह से डरने वालों के लिए” अल्लाह तआला के इस फरमान के मुताबिक कुरान करीम से हर शख्स को हिदायत नहीं मिलती बल्कि कुरान करीम से फ़ायदा हासिल करने की बुनियादी शर्त तक्वा है। दूसरी तरफ अल्लाह तआला ने कुरान में रोज़ों की फ़र्ज़ियत का मक़सद बताते हुए फरमाया “यानी तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ” गरज़ ये कि रमज़ान और रोज़ा के बुनियादी मक़सद में तक्वा मुश्तरक है।

“और यह काफिर लोग कहते हैं कि इन पर सारा कुरान एक ही दफा में क्यों नाज़िल नहीं कर दिया गया? (ऐ पैगम्बर) हमने ऐसा इस लिए नहीं किया ताकि इसके जरिये तुम्हारा दिल मज़बूत रखें और हमने इसे ठहर ठहर कर पढ़वाया है और जब कभी यह लोग तुम्हारे पास कोई अनोखी बात लेकर आते हैं, हम तुम्हें (इसका) ठीक ठीक जवाब और ज्यादा वज़ाहत के साथ अता कर देते हैं।” (सूरतुल फुरकान आयत 32,33)

इमाम राज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) ने इस आयत की तफसीर में कुरान करीम के थोड़ा थोड़ा नाज़िल होने की जो हिकमतें बयान फरमाई हैं, उनका खुलासा यह है।

- (1) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी (अनपढ़) थे, इस लिए अगर सारा कुरान एक मरतबा नाज़िल हो गया होता तो इसका याद रखना और ज़ब्त करना दुशवार होता।
- (2) अगर पूरा कुरान एक दफा में नाज़िल हो जाता तो तमाम अहकामों की पाबंदी जल्दी लाज़िम हो जाती और यह इस हकीमाना तदरीज के खिलाफ होता जो शरीअत मोहम्मदी में मलहूज़ रही है।
- (3) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी क़ौम की तरफ से हर रोज़ नई अज़ियतें बर्दाशत करनी पड़ती थी, हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम का बार बार कुरान करीम लेकर आना इन अज़ियतों के मुकाबले को आसान बना देता था और आप की तकवियत का सबब बनता था।
- (4) कुरान करीम का एक हिस्सा लोगों के सवालात के जवाब और मुख्तलिफ वाक़यात से मुतअल्लिक है, इस लिए इन आयतों का नुज़ूल इसी वक़्त मुनासिब था जिस वक़्त वह सवालात किए गए या

रमज़ान का महीना कुरान करीम से खास तअल्लुक होने की सबसे बड़ी दलील कुरान करीम का रमज़ान के महीने में नाज़िल होना है। इस मुबारक महीने की एक बाबरकत रात में अल्लाह तआला ने लौहे महफूज़ से समा-ए-दुनिया पर कुरान करीम नाज़िल फरमाया और इसके बाद हसबे ज़रूरत थोड़ा थोड़ा हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होता रहा और तकरीबन 23 साल के अरसा में कुरान करीम मुकम्मल नाज़िल हुआ। कुरान करीम के अलावा तमाम सहीफे भी रमज़ान में नाज़िल हुए जैसा कि मुसनद अहमद में है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मुसहफे इबराहिमी और तौरात व इंजील सबका नुज़ूल रमज़ान में ही हुआ है। नुज़ूले कुरान करीम और दूसरी मुकद्दस किताबों और सहीफों के नुज़ूल में फ़र्क यह है किस्ती किताबें जिस रसूल व नबी पर नाज़िल हुईं एक साथ एक ही दफा में जबकि कुरान करीम लौहे महफूज़ से पहले आसमान पर रमज़ानुल मुबारक की मुबारक रात यानी लैलतुलकदर में एक बार नाज़िल हुआ और फिर थोड़ा थोड़ा हसबे ज़रूरत नाज़िल होता है। जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान है “बेशक हमने कुरान करीम को शबेक़दर में उतारा है। यानी कुरान करीम को लौहे महफूज़ से आसमाने दुनिया पर इस रात में उतारा है। आप को कुछ मालूम भी है कि शबे क़दर कैसी बड़ी चीज़ है, यानी इस रात की बड़ी फज़ीलत का आपको इल्म भी है, कितनी खूबियां और किस क़दर फज़ाइल इसमें हैं। इसके बाद चंद फज़ाइल का ज़िक्र फरमाते हैं, शबेक़दर हज़ार महीनों से बेहतर है यानी हज़ार महीनों तक इबादत करने का जितना सवाब है इससे ज़्यादा शबेक़दर

की इबादत का है और कितना ज़्यादा है? यह अल्लाह ही को मालूम है। इस रात में फरिशते और हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम अपने परवरदिगार के हुकुम से हर अच्छे कामों को लेकर ज़मीन की तरफ उतरते हैं और यह ख़ैर व बरकत फ़ज़र के वक़्त तक रहती है।"

सूरह अलअलक़ की इब्तिदाई चंद आयात से कुरान करीम का नुज़ूल हुआ। उसके बाद सूरह अलक़दर में बयान किया कि कुरान करीम रमज़ान की बाबरकत रात में उतरा है जैसा कि सूरह अलदुखान की आयत 3 "हमने इस किताब को एक मुबारक रात में उतारा है" और सूरह अलबकरा आयत 185 "रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुरान करीम नाज़िल हुआ" में यह मज़सू तफसील के साथ मौजूद है। गरज़ ये कि कुरान व हदीस में वाज़ेह दलाइल होने की वजह से उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफाक है कि कुरान करीम लौहे महफूज़ से समा-ए- दुनिया पर रमज़ान की मुबारक रात में ही नाज़िल हुआ। इस तरह रमज़ान और कुरान करीम का खास तअल्लुक रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाता है।

रमज़ानुल मुबारक का कुरान करीम के साथ खास तअल्लुक का मज़हर नमाज़े तरावीह भी है। अहादीस में लिखा है कि हर साल रमज़ान में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम के साथ कुरान के नाज़िलशुदा हिस्सों को दौरे करते थे। जिस साल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंतिकाल हुआ उस साल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो बार कुरान करीम का दौर फरमाया (बुखारी व मुस्लिम)। नमाज़े तरावीह आप

दौर फरमाया करते थे। जिस साल आप का इंतिकाल हुआ उस साल आपने दो बार कुरान करीम का दौर फरमाया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा-ए-कराम को कुरान की तालीम ही नहीं देते थे बल्कि उसके अल्फाज़ भी याद कराते थे। खुद सहाबा-ए-कराम को कुरान करीम याद करने का इतना शौक था कि हर शख्स एक दूसरे से आगे बढ़ने की फिक्र में रहता था। चुनांचे हमेशा सहाबा-ए-कराम में एक अच्छी खासी जमाअत ऐसी रहती जो नाज़िलशुदा कुरान की आयात को याद कर लेती और रातों को नमाज़ में उसे दोहराती ३॥ गरज़ ये कि कुरान करीम की हिफाज़त के लिए सबसे पहले हिफज़े कुरान पर ज़ोर दिया गया और उस वक़्त के लिहाज़ से यही तरीका ज्यादा महफूज़ और काबिले इतिमाद था।

कुरान करीम की हिफाज़त के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान करीम को लिखवाने का भी खास इहतिमाम फरमाया, चुनांचे नुज़ूले वही के बाद आप कातेबिने वही को लिखवा दिया करते थे। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामूल यह था कि जब कुरान करीम का कोई हिस्सा नाज़िल होता तो आप कातिबे वही को यह हिदायत फरमाते थे कि इसे फलां सूरत में फलां आयत के बाद लिखा जाए। उस ज़माने में कागज़ नहीं मिलते थे इस लिए यह कुरानी आयात ज्यादातर पत्थर की सिलों, चमड़े के पारचों, खजूर की शाखों, बांस के टुकड़ों, पेड़ के पत्तों और जानवर की हड्डियों पर लिखी जाती थीं। कातिबे वही में हज़रत जैद बिन साबित, खुलफाए राशिदीन, हज़रत ओबय बिन काब, हज़रत जुबैर बिन अव्वाम और हज़रत मआविया के नाम खास तौर पर ज़िक्र किए जाते हैं।

अलैहि वसल्लम की जिंदगी में, हज़रत अबु बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के दौरें खिलाफत और हज़रत उमर फारुक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के इब्तिदाईं दौरें खिलाफत में नमाज़े तरावीह जमाअत से पढ़ने का कोई एहतिमाम नहीं था, सिर्फ तरगीब दी जाती थी और इफिरादी कै़ पर नमाज़े तरावीह पढ़ी जाती थी। लेकिन हज़रत उमर फारुक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में यक़ीनन तबदीली हुई, इस तबदीली की वज़ाहत मुहद्देसीन, फुकहा और उलमा कराम ने फरमाई है कि हज़रत उमर फारुक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के ज़माने में इशा के फराएज़ के बाद वितरों से पहले पूरे रमज़ान बाजमाअत नमाज़े तरावीह शुरू हुई और कुरान करीम खत्म करने और रमज़ान में वितर बाजमाअत पढ़ने का सिलसिला शुरू हुआ। सउदी अरब के नामवर आलिम, मस्जिद नबवी के मशहूर मुदरिस और मदीना मुनव्वरा के (पहले) काज़ी अलशैख अतिया मोहम्मद सालिम (रहमतुल्लाह अलैह) (मुतवप्फ़ी 1999) ने नमाज़े तरावीह की चैदह सौ साला तारीख पर अरबी ज़बान में एक किताब लिखी है जो झ मौज़ू के लिए बेहद फायदामंद है।

कुरान करीम और रमज़ान के दरमयान चंद मुशतरक खुसूसियात

कुरान करीम और रमज़ान की पहली अहम मुशतरक खुसूसियत तक्वा है जैसा कि कुरान करीम की आयात की रौशनी में ज़िक्र किया गया। दूसरी मुशतरक खुसूसियत शिफाअत है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि रोज़ा और कुरान करीम दोनों बंदा के लिए शिफाअत करते हैं। रोज़ा अर्ज़ करता है कि या अल्लाह मैंने उसको दिन में खाने पीने से रोके रखा मेरी

शिफाअत क़बूल कीजिए और कुरान कहता है कि या अल्लाह मैंने रात को उसको सोने से रोका मेरी शिफाअत क़बूल कीजिए, तो दोनों की शिफाअत क़बूल करली जाएगी। (रवाहु अहमद व तबरानी फीलकबीर वलहाकिम वकाल सही अल शर्त मुस्लिम)।

तीसरी खुसूसियत जो रमज़ान और कुरान दोनों में मुशतरक तौर पर पाई जाती है वह कुर्ब इलाही है। यानी अल्लाह तआला के कलाम की तिलावत के वक़्त अल्लाह तआला से खास कुर्ब हासिल होता है, ऐसे ही रोज़ादार को भी अल्लाह तआला का खास कुर्ब हासिल होता है कि रोज़ा के मुतअल्लिक हदीस कुदसी में अल्लाह तआला का इरशाद है कि मैं खुद ही रोज़ा का बदला हूँ। मज़मून के बढ़ने की वजह से कुरान व रमज़ान की सिर्फ़ तीन मुशतरक खुसूसियात के ज़िक्र पर इकतिफा करता हूँ।

अस्लाफ़ का रमज़ान के महीने में तिलावते क़ान करीम का खास एहतिमाम

रिवायात से मालूम होता है कि सहाबा व ताबेईन और तबेताबईन रमज़ानुल मुबारक में कुरान करीम के साथ खुसूसी शगफ़ रखते थे। बाज़ अस्लाफ़ व अकाबेरीन के मुतअल्लिक किताबों में लिखा है कि वह रमज़ाम में दूसरी मसरूफियात छोड़कर सिर्फ़ और सिर्फ़ तिलावते कुरान में दिन व रात का वाफ़िर हिस्सा खर्च करते थे। इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैह) जिन्होंने हदीस की मशहूर किताब मुअत्ता लिखी है जो मशहूर फकीह फकीह होने के साथ साथ एक बड़े मुहदीस भी हैं लेकिन रमज़ान शुरू होने पर हदीस पढ़ने पढ़ाने के

फरमाया ताकि नया नुसखा उन्ही से नकल किया जाए, इस तरह खलीफा अब्दुल हज़रत अबू बकर सिद्दीक के अहदे खिलाफत में कुरान करीम एक जगह जमा कर दिया गया।

हज़रत उसमान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में हिफाज़ते कुरान:

जब हज़रत उसमान खलीफा बने तो इस्लाम अरब निकल कर दूर दराज़ अजमी इलाकों तक फैल गया था। हर नए इलाके के लोग उन सहाबा व ताबेईन से कुरान सिखते जिनकी बदौलत उन्हें इस्लाम की नेमत हासिल हुई थी। सहाबा-ए-कराम ने कुरान करीम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुख्तलिफ किरातों के मुताबिक सिखा था। इस लिए हर सहाबी ने अपने शार्गिर्द को इसी किरात के मुताबिक कुरान पढ़ाया जिसके मुताबिक खुद उन्होंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पढ़ा था। इस तरह किरातों का यह इख्तिलाफ दूर दराज़ मुल्कों तक पहुंच गया। लोगों ने अपनी किरात को हक और दूसरी किरातों को गलत समझना शुरू कर दिया, हालांकि अल्लाह तआला ही की तरफ से इजाज़त है कि मुख्तलिफ किरातों में कुरान को पढ़ा जाए। हज़रत उसमान गनी ने हज़रत हफसा के पास पैगाम भेजा कि उनके पास (हज़रत अबू बकर सिद्दीक के तैयार कराए हुए) जो सहीफे मौजूद हैं वह हमारे पास भेज दें। चुनांचे हज़रत जैद बिन साबित की सरपरस्ती में एक कमेटी तशकील देकर उनको मुकल्लफ किया गया कि वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक के सहीफे से नकल करके कुरान करीम के चंद ऐसे नुसखे तैयार करें जिनमें सूतें भी मुत्तब हों। चुनांचे कुरान करीम के चंद नुसखे

वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स एक हर्फ कुरान करीम का पढ़े उसके लिए इस हर्फ के बदले एक नेकी है और एक नेकी का बदला दस नेकी के बराबर मिलता है। मैं यह नहीं कहता कि अस्फि लाम मीम एक हर्फ है बल्कि अलिफ एक हर्फ है, लाम एक हर्फ है और मीम एक हर्फ । (तिर्मिज़ी)

तिलावते कुरान के कुछ आदाब हैं जिनका तिलावत के वक़्त खास खयाल रखा जाए ताकि हम अल्लाह के नज़दीक अजरे अज़ीम के मुसतहिक़ बनें। तिलावत के एक इबादत है लिहाज़ा रिया व शोहरत के बजाए इससे सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा मतलूब व मकसूद हो, पाकी की हालत में अदब व इहतिराम के साथ अल्लाह के कलाम की तिलावत करें। तीसरा अहम अदब यह है कि इतमिनान के साथ ठहर ठहर कर और अच्छी आवाज़ में तजवीद के कवाएद के मुताबिक़ तिलावत करें। तिलावत कुरान के वक़्त अगर आयतों के मानी पर गौर व फ़िक्र करके पढ़ें तो बहुत ही बेहतर है। कुरान करीम के अहकाम व मसाइल पर खुद भी अमल करें और उसके पैग़ाम को दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करें।

अल्लाह तआला हम सबको रोज़ा और तिलावते कुरान करीम की बरक़त से तक्रवा वाली जिंदगी गुज़ारने वाला बनाए और हमें दोनों ज़हां में कामयाबी व कामरानी अता फरमाए आमीन।

कुरानी मालूमात

अल्लाह तआला ने कुरान को लौहें महफूज से समा-ए-दुनिया पर लैलतुल कदर में नाज़िल फरमाया, फिर तकरीबन 23 साल के अरसा में हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ। यह कुरान इंसान व जिन्नात की हिदायत और रहबरी का सरचश्मा है, अल्ला की यह किताब दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली किताब है। कुरान के लफ़्ज़ी मानी भी बार बार और बहुत ज़्यादा पढ़ी जाने वाली किताब हैं। अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में भी लफ़्ज़े कुरान का बहुत मरतबा ज़िक्र फरमाया है। कुरान करीम की पहली वही का पहला कलेमा "इकरा" भी इसी तरफ इशारा करता है। कुरान के नुज़ूल का असल मकसद कुरान करीम को समझ कर पढ़ना और उस पर अमल करना है, अगरचे सिर्फ़ ज़ुक्कान करीम की तिलावत पर भी अजर मिलता है, जैसा कि मुफ़स्सिरे अव्वल हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुख्तलिफ़ सूरतों के मुख्तलिफ़ अवकात में पढ़ने के बुह्न से फ़ज़ाइल बयान किए हैं। कुरान करीम से मुतअल्लिक चंद मालूमात पेशे खिदमत हैं।

उलमा-ए-कराम ने लोगों की सहूलत के लिए कुरान करीम को मुख्तलिफ़ तरीकों से तकसीम किया है।

मनजिलें: कुरान करीम में 7 मंजिलें हैं। यह मंजिलें इसलिए मुकर्रर की गई हैं ताकि जो लोग एक हफ़ता में ख़त्म कुरान करीम करना चाहें तो वह रोज़ाना एक मंजिल तिलावत फरमाएं।

पारे: कुरान करीम में 30 पारे हैं। इन्हीं को जुज़ भी कहा जाता है। जो हज़रात एक माह में कुरान करीम ख़त्म करना चाहें वो रोज़ाना

कुरान फहमी हदीस नबवी के बेगैर मुमकिन नहीं

कुरान: कुरान करीम अल्लाह तआला का वह अज़ीमुश्शान कलाम है जो इंसानों की हिदायत के लिए खालिके कायनात ने अपने आखरी रसूल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अक़वाल व अफआल के ज़रिया लोगों के सामने उसके अहकाम व मसाएल बयान फरमा दें।

हदीस: हदीस उसको कहा जाता है जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल या अमल या किसी सहाबी के अमल पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खामोश रहना या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिफात में किसी सिफत का ज़िक्र किया गया हो।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरान करीम के मुफस्सिर अव्वल:

कुरान व हदीस की तारीफ से ही यह बात वाज़ेह हो जाती है कि जिस पर कुरान करीम नाज़िल हुआ उसके अक़वाल व अफआल के बेगैर कुरान करीम को कैसे समझा जा सकता है? खुद अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बृहत्त बार इस हकीकत को बयान फरमाया है, जिनमें से दो आयात के तर्जुमे नीचे दिए गए हैं

“यह किताब हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ उतारी है ताकि लोगों की जानिब जो हुकुम नाज़िल फरमाया गया है आप

तहत आते हैं। अक्काएद पर कुरान करीम ने बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है और इन बुनियादी अक्काएद को मुख्तलिफ अल्फाज़ से बार बार ज़िक्र फरमाया है। इन के अलावा फरिश्तों पर ईमान लाना, आसमानी किताबों पर ईमान लाना, तकदीर पर इमान लाना, जज़ा व सज़ा, जन्नत व दोज़ख, अज़ाबे कब्र, सवाबे कब्र, कयामत की तफसीलात वगैरह भी मुख्तलिफ अकीदों पर कुरान करीम में रौशनी डाली गई है।

(2) “अहकाम” इसके तहत नीचे दिए गए अहकाम और उन से मुतअल्लिक मसाइल आते हैं-

इबादती अहकाम

नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज वगैरह के अहकाम व मसाइल। कुरान करीम में सबसे ज़्यादा ताकीद नमाज़ पढ़ने के मुतअल्लिक आया है। कुरान करीम में नमाज़ की अदाएगी के हुकुम के साथ उमूमन ज़कात का भी हुकुम आया है।

मुआशरती अहकाम

मसलन हुक्कुल इबाद की सारी तफसीलात।

मआशी अहकाम

खरीद व फरोख्त, हलाल व हराम और माल कमाने और खर्च करने के मसाइल।

अखलाकी व समाजी अहकाम

इनफिरादी और इजतिमाई जिन्दगी से मुतअल्लिक अहकाम व मसाइल।

सियासी अहकाम

हुकूमत और अवाम के हुक्क से मुतअल्लिक अहकाम व मसाइल।

अदालती अहकाम

हुदूद व ताज़ीरात के अहकाम व मसाइल।

किस्से

गुज़शता अम्बिया -ए-कराम और उनकी उम्मतों के वाक्यात की तफसीलात।

कुरान करीम के मुख्तलिफ ज़बानों में बेझार तरजुमे हुए हैं और तफसीरें भी लिखी गई हैं, और यह सिलसिला बराबर जारी है औ इन्शाअल्लाह कल क़यामत तक जारी व सारी रहेगा। मगर सबका माखज़ कुरान व हदीस ही है, यानी मुफस्सिरे अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफ़आल की रौशनी में ही कुरान करीम समझा जा सकता है।

के साथ रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत का हुकुम दिया है। कहीं फरमाया "अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इताअत करो।" और किसी जगह फरमाया "अल्लाह और रसूल की इताअत करो।" इन सब जगहों पर अल्लाह तआला की तरफ से बन्दों से एक ही मुतालबा है कि फरमाने इलाही की तामील करो और इरशाद नबवी की इताअत करो। गरज़ ये कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बहुत जगहों पर यह बात वाज़ेह तौर पर बयान कर दी कि अल्लाह तआला की इताअत के साथ रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत भी जरूरी है और अल्लाह तआला की इताअत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत के बेगैर मुमकिन ही नहीं है। अल्लाह तआला ने हमें रसूल की इताअत का हुकुम दिया और रसूल की इताअत जिन वास्तों से हम तक पहुंची है यानी अहादीस का ज़खिरा अगर उन पर हम शक व शुब्हा करें तो गोया हम कुरान करीम की सैकड़ों आयात के मुंकिर हैं या ज़बाने हाल से यह कह रहे हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसी चीज़ का हुकुम दिया है यानी इताअते रसूल जो हमारे इख्तियार में नहीं है।

सूरह अननिसा आयत 80 में अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत को इताअते इलाही करार देते हुए फरमाया "जिस शख्स ने रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत की उसने दरअसल अल्लाह तआला की इताअत की।"

सूरह आले इमरान आयत 31 में अल्लाह तआला ने इताअते रसूल को हुब्बे इलाही का मेयार करार दिया है यानी अल्लाह तआला से मुहब्बत रसूल की इताअत में है, चुनांचे इरशादे बारी तआला है "ऐ नबी! लोगों से कह दें कि अगर तुम हकीकत में अल्लाह तआला से

का आला व बुलंद हिस्सा है जहां हर किस्म का सूकन व इत्मीनान और आराम व सहूलत है जहां हर किस्म के बागात, चमन, गुलशन और नहरें पाई जाती हैं जहां ख्वाहिशों की तकमील है, जिसको कुरान व सुन्नत में जन्नतुल फिरदौस के नाम से जाना गया है। यही असल कामयाबी है कि जिसके बाद कभी नाकामी, परेशानी, दुश्वारी, मुसिबत और तकलीफ नहीं है। लिहाज़ा हम दुनियावी आरज़ी व महदूद खुशहाली को फलाह न समझें बल्कि हमेशा हमेशा की कामयाबी के लिए कोशां रहें।

ईमान वालों से मुराद वह लोग हैं जिन्होंने अल्लाह तआला की वहदानियत का इकरार किया, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैगम्बर तस्लीम किया और आप की तालीमात पर अमल पैरा हुए। इंसान की कामयाबी के लिए सबसे पहली और बुनियादी शर्त अल्लाह तआला और उसके रसूल पर ईमान लाना है, उसके अलावा इंसान की कामयाबी के लिए जो सात सिफात अल्लाह तआला ने इन आयात में ज़िक्र फरमाए हैं वह यह हैं।

(1) खुशू व खूजू के साथ नमाज़ की अदाएगी

खूजू के माना ज़ाहिरी आज़ा को झुकाने (यानी जिसमानी सूकन) और खुशू के माना दिल को आजिज़ी के साथ नमाज़ की तरफ मोतवज्जह रखने के हैं। खुशू व खूजु के साथ नमाज़ पढ़ने का आसान तरीका यह है कि हम नमाज़ में जो कुछ पढ़ रहे हैं उसकी तरफ ध्यान रखें और अगर गैर इख्तियारी तौर पर कोई खयाल आ जाए तो वह माफ है लेकिन जूही याद आ जाए दो बारा नमाज़ के अल्फाज़ की तरफ मोतवज्जह हो जाएं। गरज़ ये कि इसी तरह हमें

इत्मीनान व सुकून के साथ नमाज़ पढ़नी चाहिए जैसा कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ लाए, एक और साहब मस्जिद में आए और नमाज़ पढ़ी फिर (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आकर सलाम किया आप ने सलाम का जवाब दिया और फरमाया जाओ नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। वह गए और जैसे नमाज़ पहले पढ़ी थी वैसे ही नमाज़ पढ़कर आए फिर सलाम किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जाओ नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। इस तरह तीन मर्तबा हुआ। उन साहब ने अर्ज किया। उस ज़ात की कसम जिसने आपको हक के साथ भेजा है मैं इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता। आप मुझे नमाज़ सिखाएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो तकबीर कहो, फिर कुरान शरीफ में से जो कुछ पढ़ सकते हो पढ़ो फिर रुकू में जाओ तो इत्मीनान से रुकू करो फिर रुकू से खड़े हो तो इत्मीनान से खड़े हो फिर सजदा में जाओ तो इत्मीनान से सजदा करो फिर सजदा से उठो तो इत्मीनान से बैठो। यह सब काम अपनी पूरी नमाज़ में करो। (सही बुखारी)

(2) बुरे कामों से दूरी

बुरी बात और बुरे काम उसको कहते हैं जो फ़ूूल, लायानी और लाहासिल हो। यानी जिन बातों या कामों का कोई फायदा न हो। मौलाए हकीकी ने इन आयात में इरशाद फरमाया कि बुरे कामों को

वसल्लम की पूरी जिंदगी के अहवाल जो अहादीस के ज़खीरे की शकल में हमारे पास महफूज़ हैं कल क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए बेहतरीन नमूना है ताकि हम अपनी ज़िन्दगियाँ उसी नमूना के मुताबिक गुज़ारें।

इताअते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फर्ज़ीयत खुद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल से।

सारे अम्बिया के सरदार व आखरी नबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी कुरान करीम के साथ सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा को ज़रूरी करार दिया है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल को जाने बेगैर इताअते रसूल मुमकिन ही नहीं है और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल हदीस के ज़खिरा ही में तो मौजूद हैं। हदीस की लगभग पूरी किताबों में इताअते रसूल के मुतअल्लिक नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात तवातुर के साथ मौजूद हैं, इनमें से सिर्फ तीन अहादीस पेशे खिदमत है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने अल्लाह की नाफरमानी की।" (बुखारी व मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जब मैं तुम्हें किसी चीज़ से रूक तो उससे रुक जाओ और जब मैं तुम्हें किसी काम का हुकुम दूं तो हसबे इस्तिताअत उसपर अमल करो।" (बुखारी व मुस्लिम)

पुश्त को दागा जाएगा और उससे यह कहा जाएगा कि यह है वह खज़ाना जो तुमने अपने लिए जमा किया था। आज तुम इस खज़ाने का मज़ा चखो जो तुमने अपने लिए जमा कर रहे थे। अल्लाह तआला हम सबको इस अंजामे बद से महफूज़ फरमाए, आमीन। बाज़ मुफस्सेरीन ने इस आयत से मुराद तजकिया नफस लिया है यानी वह ईमान वाले अपने आप को बुरे आमाल और अखलाक से पाक साफ करते हैं।

(4) शर्मगाहों की हिफाज़त

अल्लाह तआला ने जिंसी ख्वाहिशात की तकमील का एक जाएज़ तरीका यानी निकाह मशरूआ किया है। इंसान की कामयाबी के लिए अल्लाह तआला ने एक शर्त यह भी रखी है कि हम जाएज़ तरीका के अलावा अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें। इस आयत के आखिर में अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया यानी मियां बीवी का एक दूसरे से शहवते नफस को तसकीन देना काबिले मलामत नहीं बल्कि इंसान की जरूरत है लेकिन जाएज़ तरीका के अलावा कोई भी सूरत शहवत पूरी करने की जाएज़ नहीं है जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया यानी जाएज़ तरीके के मानी में वह कोई और तरीका इख्तियार करना चाहें तो ऐसे लोग हद से ऊपर हुए हैं। अल्लाह तआला ने ज़िना के करीब भी जाने को मना फरमाया है, "ज़िना के करीब भी मत जाओ इसलिए कि वह बुरा है और बुरा ठिकाना है" (सूरह अलअसरा आयत 32) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "आंख भी ज़िना करती है और उसका ज़िना नज़र है" आज रोज़मर्रा की जिंदगी में मर्द और औरत का

कसरत से इखितलात, मखलूत तालीम, बेपरदगी, टीवी और इंटरनेट पर फहाशी और उरयानी की वजह से हमारी जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि हम खुद भी ज़िना के लवाज़िमात से बचें और अपने बच्चों, बच्चियों और घर वालों की हर वक्त निगरानी रखें क्योंकि इस्लाम ने इंसान को ज़िना के असबाब से भी दूर रहने की तालीम दी है। ज़िना होने के बाद इस पर हंगामा, जलसा व जुलूस व मुज़ाहिरों के बजाए ज़रूरत इस बात की है कि इस्लामी तालीमात के मुताबिक जितना हो सके गैर महरम मर्द व औरत के इखितलात से ही बचा जाए।

(5) अमानत के अदाएगी

अमानत का लफ़्ज़ हर उस चीज़ को शामिल है जिसकी जिम्मेदारी किसी शख्स ने उठाई हो और उस पर इतिमाद व भरोसा किया गया हो खाह इसका तअल्लुक हुकुकूल इबाद से हो या हुकुकूलाह। हुकुकूलाह से मुतअल्लिक अमानत फराएज़ व वाजिबात की अदाएगी और मुहरिमात व मकरूहात से परहेज़ करना है और हुकुकूल इबाद से मुतअल्लिक अमानत में माली अमानत का दाखिल होना तो मशहूर व मारूफ़ है इसके अलावा किसी ने कोई राज़ किसी को बतलाई तो वह भी उसकी अमानत है, शरई इज़ाजत के बेगैर किसी का राज़ जाहिर करना अमानत में खयानत है। इसी तरह काम की चोरी या वक्त की चोरी भी अमानत में खयानत है। लिहाज़ा हमें अमानत में खयानत से बचना चाहिए।

से भी यह बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाती है “ऐ हमारे रबा इनमें इन्हीं में से रूस भेज जो इनके पास तेरी आयतें पढ़ें, इन्हें किताब व हिकमत सिखाए और इनको पाकीज़ा बनाए।” यहां किताब से मुराद कुरान करीम और हिकमत से मुराद हदीस है।

कुरान करीम में मुजमल अहकाम: कुरान करीम में ओमुमन अहकाम की तफसील मज़कूर नहीं है यहां तक कि इस्लाम के बुनियादी अरकान नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज के अहकाम भी कुरान करीम में तफसील के साथ मज़कूर नहीं हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुकुम के मुताबिक अपने अक़वाल व आमाल से उन मुजमल अहकाम की तफसील बयान की है। अल्लाह तआला इसी लिए नबी व रूसूल भेजता है ताकि वह अल्लाह तआला के अहकाम अपने अक़वाल व आमाल से उम्मतियों के लिए बयान करें। मसलन अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बेशुमार मक्कामात पर नमाज़ पढ़ने, रूकू करने और सजदा करने का हुकुम दिया है लेकिन नमाज़ की तफसील कुरान करीम में मज़कूर नहीं है कि एक दिन में कितनी नमाज़ें अदा करनी हैं? क़याम या रूकू सजदा कैसे किया जाएगा और कब किया जाएगा? और इसमें क्या पढ़ा जाएगा? एक वक़्त में कितनी नमाज़ें अदा करनी हैं? इसी तरह कुरान करीम में ज़कात की अदाएगी का तो हुकुम है लेकिन तफसीलात के बारे जिक्र नहीं है कि ज़कात की अदाएगी रोज़ाना करनी है या साल भर में या पांच साल में या ज़िंदगी में एक मर्तबा? फिर यह ज़कात किस हिसाब से दी जाएगी? किस माल पर ज़कात वाजिब है और उसके लिए क्या क्या शराएत हैं? गरज़ ये कि अब

के लिए जरूरी सात सिफात को नमाज़ से शुरू किया और नमाज़ पर ही खत्म किया। इसमें इशारा है कि नमाज़ की पाबंदी और सही तरीका से उसकी अदाएंगी इंसान को पूरे दिन पर चलने का अहम जरिया बनती है। इसी लिए कुरान करीम में सबसे ज्यादा नमाज़ की ही ताकीद फरमाई गई है। कल क़यामत के दिन सबसे पहले नमाज़ ही के मुतअल्लिक सवाल किया जाएगा। नमाज़ के अलावा तमाम अहकाम अल्लाह तआला ने हज़रत ज़िबर्ईल अलैहिस्सलाम के वास्ता दुनिया में उतारे मगर नमाज़ ऐसा जुहूतम बिश्शान अमल है कि अल्लाह तआला ने सातों आसमानों के ऊपर हज़रत ज़िबर्ईल अलैहिस्सलाम के वास्ता के बेगैर नमाज़ की फर्जीयत का तोहफा अपने हबीब को अता फरमाया। अल्लाह तआला हम सबको नमाज़ों का इहतिमाम करने वाला बनाए आमीन।

इन सात अवसाफ से मुत्तसिफ ईमान वालों को अल्लाह तआला ने 10 और 11 आयात में जन्नुल्ल फिरदौस का वारिस बतलाया है। लफज़े वारिस में इस तरफ इशारा है कि जिस तरह मुअरिस का माल उसके वारिस को पहुंचाना क़तई और यकीनी है इसी तरह इन सात अवसाफ वालों का जन्नुल्ल फिरदौस में दाखिला यकीनी है।

अल्लाह तआला हम सबको इन सात अवसाफ के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फरमाए और हमें जन्नुल्ल फिरदौस का वारिस बनाए आमीन।

सूरह अल असर की मुख्तसर तफ़्सीर

“क़सम है ज़माने की कि हर इंसान बड़े ख़सारे में है, मगर वो लोग जो ईमान लाए और नेक काम किये और आपस में ताकीद करते रहे सच्चे दीन की और आपस में ताकीद करते रहे सबर व तहम्मुल की”

सूरह अल असर की खास फ़ज़ीलत

यह कुरान करीम की बहुत ही मुख्तसर सूरात है जिसमें सिर्फ़ तीन आयात हैं, लेकिन ऐसी जामे है कि बक़ौल हज़रत इमाम शाफई (रहमतुल्लाह अलैह) कि अगर लोग इस सूरात को ग़ौर व फ़िक्र और तदब्बुर कि साथ पढ़ लें तो दीन व दुनिया की दुरुस्तगी कि लिए काफी हो जाये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि सहाबा किराम में से दो शख़श आपस में मिलते तो उस वक़्त जुदा न होते जबतक उनमें से एक दूसरे को सूरह अल असर न पढ़ लें। (तबरानी)

इस सूरात में अल्लाह तआला ने अल असर की क़सम खाई है, जिससे मुराद ज़माना है, कियोंकि इंसान कि तमाम हालात, उसकी नशु व नुमा, उसकी हरकात व सकनात, आमाल और इख़लाक सब ज़माने के लैल व नहार में ही होंगे।

जहाँ तक क़सम का तअल्लुक है अल्लाह तआला के कलाम में क़सम कि बग़ैर भी कोई शक व शुबहा की कोई गुंजाइश नहीं है, लेकिन अल्लाह तआला बन्दों पर रहम फरमा कर किसी हुकुम की ताकीद और उसकी अहमियत की वजह से क़सम खा कर कोई हुकुम बन्दों को करता है, ताकि बन्दे इस हुकुम की अहमियत को समझ कर उस

कुरान करीम को कैसे समझा जा सकता है?

एक वज़ाहत: अल्लाह तआला ने हमें कुरान करीम में तदब्बुर व तफक्कुर करने का हुकुम दिया है मगर यह तदब्बुर व तफक्कुर मुफस्सिर अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल की रौशनी में ही होना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला ही ने बहुत सी जगहों पर इरशाद फरमाया है कि ऐ नबी! यह किताब हमने आप पर नाज़िल फरमाई है ताकि आप इस कलाम को खोल खोल कर लोगों के लिए बयान कर दें और हमारा यह ईमान है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी इस जिम्मेदारी को बखुबी अंजाम दिया। लेकिन कुछ हज़रात कुरान करीम की तफसीर में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व इरशादात को कमज़ोर करार देकर अपनी राय थोपना शुरू कर देते हैं जो कि सरासर गलत है। यकीनन हमें कुरान करीम को समझ कर पढ़ना चाहिए क्योंकि यह किताब हमारी हिदायत व रहनुमाई के लिए अल्लाह तआला ने नाज़िल फरमाई है। और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान करीम के अहकाम खोल खोल कर बयान फरमा दिए हैं लेकिन हमारे लिए जरूरी है कि जिन मसाएल में भी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल या आमाल से रहनुमाई मिल सकती है ख़वाह हदीस की सनद में थोड़ा ज़ोफ भी हो। इन मसाएल में अपने इजतिहाद व क़यास और अपने अक्ली घोड़े दौड़ाने के बजाए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व आमाल के मुताबिक ही अमल करें। नए नए मसाएल के हल के लिए कुरान करीम में तदब्बुर व तफक्कुर और हदीस नबवी

इस्लाह के मुतअल्लिक और दूसरे हिस्से दूसरों की हिदायत व इस्लाह से मुतअल्लिक हैं यानी हम अपनी ज़ात से भी अल्लाह के अहकामात और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात के मुताबिक बजालाएँ और साथ में यह कोशिश और फिक्क करें कि मेरी अवलाद, मेरे रिश्तेदार और मेरे पड़ोसी सब अल्लाहकी मर्जी के मुताबिक इस दुनियावी फानी ज़िंदगी को गुज़ारने वाले बनें ताकि हम सब बड़े खसारे से बच कर हमेशा हमेशा की कामयाबी हासिल करने वाले बन जाएं।

अब हर शख्स अपनी ज़िंदगी का जाइज़ा ले कि उसके अंदर यह चार अवसाफ मौजूद हैं या नहीं। कुक्कान करीम के इस वाज़ेह एलान से मालूम हुआ कि अगर यह चार अवसाफ या इन में से कोई एक वसफ भी हमारे अंदर मौजूद नहीं हैं तो हम दुनिया व अखिरत में नाकामी और बड़े खसारे की तरफ जा रहे हैं।

लिहाज़ा अब भी वक्त है मौत कब आ जाए किसी को नहीं मालूम, हम सब यह इरादा कर लें कि दुनिया व अखिरत की कामयाबी हासिल करने और बड़े खसारे से बचने के लिए यह चार अवसाफ अपनी ज़िंदगी में आज, बल्कि अभी से लाने की मुखतिसाना कोशिश करेंगे। अल्लाह हम सबको ज़िंदगी के बाकी दिन इन चार अवसाफसे मुत्तसिफ हो कर गुज़ारने वाला बनाए। आमीन

सूरह अलम नशरह की मुख्तसर तफसीर

(इस सूरह में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अच्छे सिफात जिक्र किए गए हैं)

“ऐ नबी! क्या हमने तेरा सीना नहीं खोल दिया? (यकीनन हमने तेरा सीना खोल दिया) और तुझपर से तेरा बोझ हमने उतार दिया, जिसने तेरी पीठ बोझल कर दी थी। और हमने तेरा जिक्र बुलंद कर दिया। पस मुश्किल के साथ आसानी है। बेशक मुश्किल के साथ आसानी है। पस जब तु फारिग हो तो इबादत में मेहनत कर और परवरदिगार ही की तरफ दिल लगा।”

यह मक्की सूरत है, इसमें 8 आयात हैं, इब्तिदाई चार आयात में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीन अच्छे सिफात बयान किए गए हैं।

(1) हमने तेरे सीने को खोल दिया- यानी हमने तेरे सीने को मुनव्वर कर दिया, इसमें उलूम व मआरिफ के समुन्दर उतार दिए और लवाज़िमे नबूवत और फराएज़े रिसालत बर्दाशत करने के लिए बड़ा वसी हौसला दिया। इस आयत से शक्के सदर भी मुराद लिया गया है जो दो मर्तबा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पेश आया। एक मर्तबा बचपन में और दूसरी मर्तबा मेराज की रात में। शक्के सदर में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सीना मुबारक चाक करके दिल निकाला गया, उसे आबे ज़मज़म से धोकर अपनी जगह पर रख दिया गया और उसे ईमान व हिकमत से भर दिया गया।

हिफाज़त का वादा किया है। और इसी कुरान करीम में अल्लाह तआला ने बहुत सी जगहों पर इरशाद फरमाया है कि ऐ नबी! यह किताब हमने आप पर नाज़िल फरमाई है ताकि आप इस कलाम को खोल खोल कर लोगों के लिए बयान कर दें। तो जिस तरह अल्लाह तआला ने कुरान करीम के अल्फाज़ की हिफाज़त की है, उसके मानी व मफाहीम जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने बयान फरमाए हैं वह भी कल कयामत तक महफूज़ रहेंगे। इंशाअल्लाह कुरान करीम के अल्फाज़ के साथ उसके मानी व मफहूम की हिफाज़त भी मतलूब है वरना नुज़ूले कुरान का मकसद ही फौत हो जाएगा।

अल्लाह तआला हम सबको कुरान व हदीस के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने वाला बनाए। आमीन।

पढ़ता हो। गरज़ ये कि दुनिया और आखिरत दोनों जहां में अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का ज़िक्र बुलंद फरमाया। पांचवीं और छठी आयत में एक उसूल बयान किया गया कि दुश्वारी के बाद अल्लाह तआला की तरफ से आसानी मिलती है।

आखरी दो आयात में अल्लाह तआला ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया ऐ नबी! जब तू फारिग हो तो इतनी इबादत कर कि तू थक जाए। यानी नमाज़, तबलीग, जिहाद और दुआ वगैरह में इतना मशगूल हो कि तू थक जाए और अपने परवरदिगार ही की तरफ दिल लगा।

आयतुल कुर्सी

“अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लाएक नहीं, जिंदा है (जिस को कभी मौत नहीं आ सकती) (सारी दुनिया को) संभालने वाला है। न उसे ऊँघ आती है और न नींद, उसकी मिलकियत में जमीन व आसमान की तमाम चीजें हैं। कौन शख्स है जो उसकी इजाज़त के बगैर उसके सामने शिफारिश कर सके। वह जानता है उन (कायनात) के तमाम हाजिर व गायब हालात को। वह (कायनात) उसकी मंशा के बगैर किसी चीज़ के इल्म का इहाता नहीं कर सकते, उसकी कुर्सी की कुशादगी ने जमीन व आसमान को घेर रखा है। अल्लाह तआला को उन (जमीन व आसमान) की हिफाजत कुछ भारी नहीं गुजरती। वह बहुत बुलंद और बहुत बड़ा है।”

यह सूरह अल बकरा की आयत न. 255 है। जो बड़ी अज़मत वाली आयत है। इस आयत में अल्लाह तआला की तौहीद और कुछ अहम सिफात का जिक्र है। इस आयत में अल्लाह तआला की कुर्सी का भी जिक्र आया है, जिसकी वजह से इस आयत को आयतुल कुर्सी कहा जाता है। आयतुल कुर्सी की फजीलत में बहुत सी हदीसें, हदीस की किताबों में आई हैं। लेकिन इख्तिसार के मद्देनजर यहां सिर्फ़ द चं अहम फजिलतें जिक्र कर रहा हूँ। जिनके सही होने पर तमाम उलमा-ए-उम्मत मुत्तफिक हैं।

सब से ज्यादा अज़मत वाली आयत

हज़रत ओबय बिन काब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया “यह किताब है इसमें कोई शक नहीं हिदायत है परहेजगारों के लिए।” (सूरह अलबकरा आयत 2)

नुज़ूले कुरान: हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुखतलिफ तरीकों से वही नाज़िल होती थी।

(1) घंटी की सी आवाज़ सुनाई देती और आवाज़ ने जो कुछ कहा होता वह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को याद हो जाता। जब इस तरीका पर वही नाज़िल होती थी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बहुत ज्यादा बोझ पड़ता था।

(2) फरिशता किसी इंसानी शकल में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आता और अल्लाह तआला का पैगाम पहुंचा देता। ऐसे मवाके पर ओमुमन हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम मशहूर सहाबी हज़रत दहिया कल्बी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सूरत में तशरीफ लाया करते थे।

(3) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम अपनी असल सूरत में तशरीफ लाते थे।

(4) बिना वास्ता अल्लाह तआला से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हमकलामी हुई। यह सिर्फ एक बार मेराज के मौका पर हुआ। नमाज़ की फर्ज़ियत इसी मौका पर हुई।

(5) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आए बेगैर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सीने में इल्का फरमा देते थे।

तारीख नुज़ूले कुरान: माहे रमज़ान की एक बाबरकत रात लैलतुलकदर

अपनी सही में और इमाम नसई ने अमुल्ल यौमे वल्लैले में यह हदीस जिक्र की है, इस हदीस की सनद शर्त बुखारी पर है)

शयातीन व जिन्नात से हिफाज़त

हज़रत अबु हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि मैं रमज़ान में वसूल की गई ज़कात के माल पर पहरा दे रहा था, एक आने वाला आया और समेट समेट कर अपनी चादर में जमा करने लगा। हज़रत अबु हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उसको ऐसा करने से बार बार मना फरमाया। उस आने वाले ने कहा कि मुझे यह करने दो, मैं तुझे ऐसे कलेमात सिखाऊंगा कि रात को बिस्तर में जा कर उन को पढ़ लेना तो अल्लाह की तरफ से तुझ पर हाफिज़ मुकरर होगा और सुबह तक शैतान तेरे करीब भी न आ सकेगा और वह आयतुल कुर्सी है। जब हज़रत अबु हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह वाक्या सुनाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसने सच कहा मगर वह खुद झुठा है और शैतान है। (सही बुखारी, किताबुल वकालह)

हज़रत ओबय बिन काब (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि मेरे पास कुछ खजुरें थीं जो रोज़ाना घट रही थीं, एक रात मैंने पहरा दिया। मैंने देखा कि एक जानवर मिस्ले जवान लड़के के आया, मैंने उसको सलाम किया, उसने मेरे सलाम का जवाब दिया, मैंने उससे पूछा कि तु इंसान है या जिन्नात? उसने कहा मैं जिन्नात हूँ। मैंने कहा कि ज़रा अपना हाथ दो, उसने अपना हाथ बढ़ा दिया, मैंने अपने हाथ में ले लिया तो कुत्ते जैसा हाथ था और उसपर कुत्ते जैसे बाल भी थे, मैंने पूछा तुम यहां क्यों आए हो? उसने कहा कि तुम सदका को

पसंद करते हो और मैं तुम्हारे माल को लेने आया हूँ ताकि तुम सदका न कर सको। मैंने सुझा कि तुम्हारे शर से बचने की कोई तदबीर है? उसने कहा आयतल कुर्सी, जो आदमी शाम को पढ़ले वह सुबह तक और जो सुबह को पढ़ले वह शाम तक महफूज़ हो जाता है। सुबह होने पर हज़रत ओबय बिन काब (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस वाक्या का जिक्र किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि खबीस ने यह बात बिल्कुल सच्ची कही है। (नसई, तबरानी- अतरगीब वत्तरहीब 662)

इसी तरह का एक वाक्या हज़रत अबु अयूब अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) का भी अहादीस की किताबों में जिक्र है। कहने का मक़सद ये है कि आयतल कुर्सी के जरिया जिन्नात व शयातीन से हिफाज़त के बहुत से वाक्यात सहाबा के दरमयान पेश आए हैं। (तफसीर इब्ने कसीर)

हज़रत हज़रत अबु हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो आदमी सूरह अलमोमेनून को हामीम से एलैहिल मसीर तक और आयतल कुर्सी को सुबह के वक्त पढ़ लेगा वह शाम तक अल्लाह तआला की हिफाज़त में रहेगा और शाम को पढ़ने वाले की सुबह तक हिफाज़त होगी। (तिर्मिज़ी, किताब फजाएल अलकुरान, बाब माजा फी सुरह अलबकरा आयतल कुर्सी 2879)

आयतल कुर्सी इसमे आज़म पर मुशतमिल

हज़रत असमा बिन्ते यज़ीद (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत है कि

याद रखना और जब्त करना दुशवार होता।

(2) अगर पूरा कुरान एक दफा में नाज़िल हो जाता तो तमाम अहकाम की पाबंदी जल्द लाज़िम हो जाती और यह इस हकीमाना तदरीज के खिलाफ होता जो शरीअते मोहम्मदी में मलहूज़ रही है।

(3) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी कौम की तरफ से हर रोज़ नई अजियतें बर्दाशत करनी पड़ती थी, हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम का बार बार कुरान करीम लेकर आना इन अजियतों के मुकाबले को आसान बना देता था और आप की तकवियते कल्ब का बदला बनता था।

(4) कुरान करीम का एक हिस्सा लोगों के सवालात के जवाब और मुख्तलिफ वाक़यात से मुतअल्लिक है, इस लिए इन आयतों का नुज़ूल इसी वक्त मुनासिब था जिस वक्त वह सवालात किए गए या वह वाक़यात पेश आए।

हिफाज़ते कुरान: जैसा कि जिक्र किया गया कि कुरान करीम एक ही दफा में नाज़िल नहीं हुआ बल्कि ज़रूरत और हालात के इतिबार से मुख्तलिफ आयात नाज़िल होती रहीं। कुरान करीम की हिफाज़त के लिए सबसे पहले हिफ़ज़े कुरान पर जोर दिया गया। चूनांचे खुद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्फाज़ को उसी वक्त दोहराने लगते थे ताकि वह अच्छी तरह याद हो जाएँ। इस पर अल्लाह तआला की जानिब से वही नाज़िल हुई कि अँने नुज़ूले वही के वक्त जल्दी जल्दी अल्फाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं है बल्कि अल्लाह तआला खुद आप में ऐसा हाफ़ज़ा पैदा फरमा देगा कि एक मरतबा नुज़ूले वही के बाद आप उसे भुल नहीं सकेंगे। इस तरह हुज़ूर अकरम

आयतल कुर्सी का मफहूम

इस तौहीद की अहम आयत में दस जुमले हैं।

“अल्लाह, नहीं है कोई माबूद सिवाए वह” यही वह पैगाम है जिसकी दावत तमाम अम्बिया और रसूल ने दी कि माबूदे हकीकी सिर्फ अल्लाह तबारक व तआला है, वही पैदा करने वाला, वही रिज्क देने वाला और वही अकेला इस पूरी दुनिया के निज़ाम को चलाने वाला है, उसका कोई शरीक नहीं है, हम सब उसके बन्दे हैं और हमें सिर्फ उसी की इबादत करनी चाहिए, वही मुश्किल कुशा, हाजत रवा और जरूरतों को पूरा करने वाला है। उसने इंसानों की हिदायत व रहनुमाई के लिए अम्बिया व रसूल भेजे। आखिर में तमाम नबियों के सरदार हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए रहमतुल आलमीन बना कर भेजा।

“वह ज़िन्दा है, कायम है” ज़िन्दा यानी अल्लाह तबारक व तआला हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है और मौत से बालातर है। “अल्लाह तआला के सिवा हर चीज हलाक और फना हो जाने वाली है।” “कय्यूम” मुबालगा का सेगा है जिसके मानी हैं वह ज़ात जो खुद अपने बल पर क़ायम और दूसरों के क़ियाम व बका का वास्ता और ज़रिया हो।

नोट- कय्यूम अल्लाह तआला की खास सिफत है, जिसमें कोई मखलूक शरीक नहीं हो सकती, क्योंकि जो चीज़ें खुद अपने वजूद व बका में किसी दूसरे की मोहताज हों वह किसी दूसरी चीज़ को क्या संभाल सकती हैं? इसलिए किसी इंसान को कय्यूम कहना जायज़

नहीं है। लिहाज़ा अबदुल कय्यूम नामी आदमी को सिर्फ कय्यूम कह कर बुलाना गलत है।

“न उसे ऊँघ आती है और न नींद” इन दोनों की नफी से नींद की इब्तिदा और इन्तिहा दोनों की नफी हो गई, यानी अल्लाह तआला गफलत के तमाम असरात से कमाल दर्जा पाक है।

“तमाम चीजें जो आसमानों या ज़मीनों में हैं वह सब अल्लाह तआला की ममलुक हैं” वह मुख्तार है जिस तरह चाहे उनमें तसर्रुफ़ करे।

“कौन है जो उसकी इज़ाज़त के बेग़ैर सिफारिश करे” जब यह बात मालूम हो गई कि अल्लाह तआला ही कायनात का मालिक है, कोई उससे बड़ा और उसके ऊपर हाकिम नहीं है तो कोई उससे किसी काम के बारे में सवाल व जवाब करने का भी हकदार नहीं है, वह जो हुकुम जारी फरमाए उसमें किसी को चूँ व चरा करने की गुंजाइश नहीं है। हां! यह हो सकता है कि कोई आदमी अल्लाह तबारक व तआला से किसी के लिए सिफारिश या शिफाअत करे, सो इसको भी वाजेह कर दिया कि अल्ला तआला की इज़ाज़त के बेग़ैर अल्लाह तआला के नेक व मकबूल बन्दे भी किसी के लिए शिफाअत नहीं कर सकते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया के महशर में सबसे पहले मैं सारी उम्मतों की शिफाअत करूंगा, यह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खासियतों में से है, इसी का नाम मकामे महमूद है। जिसका जिक्र सूरह अलअसरा 79 में आया है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आम उम्मतों के अलावा अल्लाह तआला के नेक बन्दों को भी तीन शर्तें

के हडिड्यों पर लिखी जाती थीं। कातिबे वही में हज़रत जैद बिन साबित, खुलफाए राशिदीन, हज़रत ओबय बिन काब, हज़रत जुबैर बिन अव्वाम और हज़रत मुआविया के नाम खास तौर पर जिक्र किए जाते हैं।

हज़रत जैद बिन साबित खुद कातिबे वही होने के साथ पूरे कुरान करीम के हाफिज़ थे। वह अपनी याद दाशत से भी पूरा कुरान लिख सकते थे, उनके अलावा उस वक्त सैकड़ों हूफफाजे कुरान मौजूद थे मगर उन्होंने इहतियात के पेशनजर सिर्फ एक तरीका पर बस नहीं किया बल्कि उन तमाम जराये से बयकवक्त काम लेकर उस वक्त तक कोई आयत अपने सहीफे में दर्ज नहीं की जब तक कि उसके मुतवातिर होने की तहरीरी और ज़बानी शहादतें नहीं मिल गईं। इसके अलावा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान की जो आयात अपनी निगरानी में लिखवाई थीं वह मुख्तलिफ सहाबा-ए-कराम के पास महफूज़ थीं, हज़रत जैद बिन साबित ने उन्हें एक जगह जमा फरमाया ताकि नया नुसखा उन्हीं से नकल किया जाए। इस तरह खलीफा अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में कुरान करीम एक जगह जमा कर दिया गया।

जब हज़रत उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) खलीफा बने तो इस्लाम अरब से निकल कर दूर दराज़ अजमी इलाकों तक फैल गया था। हर नए इलाके के लोग उन सहाबा व ताबेईन से कुरान सिखते जिनकी बदौलत उन्हें इस्लाम की नेमत हासिल हुई थी। सहाबा-ए-कराम ने कुरान करीम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुख्तलिफ किरातों के मुताबिक सिखा था। इस लिए हर सहाबी ने अपने शागिदों

हिस्सा का इहाता नहीं कर सकते, मगर अल्लाह तआला ही खुद जिसको जितना हिस्सा इल्म इहाता करना चाहें सिर्फ इतना ही उसको इल्म हो सकता है।" इस आयत में यह कहा गया है कि तमाम कायनात के ज़र्रे ज़र्रे का इल्म मुहीत सिर्फ अल्लाह तआला की खुसूसी सिफत है, इंसान या कोई मखलूक इसमें शरीक नहीं हो सकती।

"उसकी कुर्सी इतनी बड़ी है कि जिसकी वुसअत के अंदर सातों आसमान और ज़मीन समाए हुए हैं।" अल्लाह तआला उठने बतने और जगह या मकान से बालातर है, इस किस्म की आयत को अपने मामलात पर कयास न किया जाए, उसकी कैफियत व हकीकत का इदराक इंसानी अकल से बालातर है। अल्लामा इब्ने कसीर ने बरिवायत हज़रत अबुज़र गिफारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से नकल किया है कि उन्होंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरयाफ्त किया कि कुर्सी कैसी है? अप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कसम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़ा में मेरी जान है कि सातों आसमानों और ज़मीनों की मिसाल कुर्सी के मुकाबले में ऐसी है जैसे एक बड़े मैदान में अंशतरी का हलका डाल दिया जाए। और बाज़ हादीस में है कि अर्श के सामने कुर्सी की मिसाल भी ऐसी है कि जैसे एक बड़े मैदान में अंगुशतरी का हलका।

कुर्सी से मुराद हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इल्म मनकूल है, बाज़ हज़रात से दोनों पांव रखने की जगह मनकूल है, एक हदीस में यह भी लिखा है कि इसका अंदाज़ह सिवाए बी तआला के और किसी को नहीं। अबु मालिक (रहमतुल्लाह अलैहि) फरमाते हैं कि कुर्सी अर्श के नीचे है। सदी (रहमतुल्लाह अलैहि) कहते

हैं कि आसमान और ज़मीन कुर्सी के बीच में और कुर्सी अर्श के सामने। हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि सातों ज़मीनें और सातों आसमान अगर फैला दिया जाए तो भी कुर्सी के मुकाबले में ऐसे होंगे जैसे एक हलका (छल्ला) किसी चटियल मैदान में। इबने जरीर की एक मरफू हदीस में है कि सातों आसमान कुर्सी में ऐसे ही हैं जैसे सात दिरहम ढाल में। (तफसीर इबने कसीर) बाज़ मुफस्सिरिन ने लिखा है कि इसके मानी हैं कि अल्लाह का इकतिदार आसमानों और ज़मीन के तमाम अतराफ व अकनाफ पर हावी है, कोई गोशा और कोना भी उसके दायरा इकतिदार से अलग नहीं है।

अल्लाह तआला को इन दोनों अज़ीम मखलूकात यानी आसमान व ज़मीन की हिफाज़त कुछ भारी नहीं मालूम होती, क्योंकि इस कादिरे मुतलक की कुदरते कामला के सामने यह सब चीज़ें निहायत आसान हैं। किसी चीज़ का ऐसा भारी होना कि उसका संभालना मुश्किल हो जाए।

गुज़शता नौ जुमलों में अल्लाह तआला की ज़ात व सिफात के कमालात बयान किए गए हैं। इनको समझने के बाद हर अकलमंद आदमी यही कहने पर मजबूर है कि हर इज्ज़त व अज़मत और बुलंदी व बरतरी का मुसतहिक वही पाक ज़ात है।

इन दस जुमलों में अल्लाह तआला की सिफाते कमाल और उसकी तौहीद का मज़मून वज़ाहत और तफसील के साथ आ गया। अल्लाह तआला हम सबको कुरान करीम समझ कर पढ़ने वाला और उसपर अमल करने वाला बनाए। अल्लाह तआला हम सबको शिर्क की तमाम शकलों से महफूज़ फरमाए।

मालूमाते कुरानी

मनजिलें: कुरान करीम में 7 मंजिलें हैं। यह मंजिलें इसलिए मोकरर की गई हैं ताकि जो लोग एक हफ्ता में खत्म कुरान करीम करना चाहें तो वह रोज़ाना एक मंजिल तिलावत फरमाएँ।

पारे: कुरान करीम में 30 पारे हैं। इन्हीं को जुज़ भी कहा जाता है। जो हज़रात एक माह में कुरान करीम खत्म करना चाहें वो रोज़ाना एक पारा तिलावत फरमाएँ। बच्चों को कुरान करीम सिखने के लिए भी इससे सहूलत होती है।

सूरतें: कुरान करीम में 114 सूतें हैं। हर सूत के शुरू में बिस्मिल्लाह लिखी हुई है, सिवाए सूरह तौबा के। सूरह अन नमल में बिस्मिल्लाह एक आयत का जुज़ भी है, इस तरह कुरान करीम में बिस्मिल्लाह की तादाद भी सूरतों की तरह 114 ही है। इन तमाम सूरतों के नाम भी हैं जो बतौर अलामत रखे गए हैं बतौर उनवान नहीं। मसलन सूरतुलफील का मतलब यह नहीं कि वह सूरह जो हाथी के मौजू पर नाज़िल हुई, बल्कि इसका मतलब सिर्फ यह है कि वह सूरह जिसमें हाथी का जिक्र आया है। इसी तरह सूरतुलबकर का मतलब वह सूरह जिसमें गाए का जिक्र आया है।

आयात: कुरान करीम में छः हज़ार से कुछ ज्यादा आयात हैं।

सजदा-ए-तिलावत: कुरान करीम में 14 आयात हैं, जिनकी तिलावत के वक्त और सुनने के वक्त सजदा करना वाजिब हो जाता है।

मक्की व मदनी आयात व सूरतें: हिजरते मदिना से पहले तकरीबन 13 साल तक कुरान करीम के नुज़ूल की आयात व सूरतों को मक्की और मदिना मुनव्वरा पहुंचने के बाद तकरीबन 10 साल तक कुरान

क्या है, इस सिलसिला में इखतिलाफ है।

“जदीद इसतिम्बाती मसाइल” नए नए मसाइल में इखतिलाफ का होना बदीही है, क्योंकि हर मुजतहिद व फकीह को इखतियार है कि वह नए मसाइल का हल कुरान व सुन्त की रौशनी में तलाश करे। मिसाल के तौर पर अपने जिस्म के किसी हिस्सा (मसलन किडनी) को हिबा करने का मसअला।

किसी मोअैय्यन हदीस या किसी खास मौजू से मुतअल्लिक अहादीस को काबिले कबूल मानने में इखतिलाफ हो जाए (मसलन मौजू बहस मसअला)।

इन्हीं 20 फीसद मुख्तलफ फीह मसाइल में कुरान करीम पढ़ने का सवाब मैयित को पहुंचने का मसअला भी है। इस मसअला में ज़माना कदीम से इखतिलाफ चला आ रहा है। उलमा व फुकहा की एक जमाअत की राय है कि कुरान करीम पढ़ने का सवाब मैयित को नहीं पहुंचता, उन उलमा व फुकहा में से हज़रत इमाम शाफई और हज़रत इमाम मालिक भी हैं, जबकि दूसरी जमाअत की राय है कि कुरान करीम पढ़ने का सवाब मैयित को पहुंचता है, उन उलमा व फुकहा में से हज़रत इमाम अबू हनीफा, हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल इसके अलावा हज़रत इमाम शाफई और हज़रत इमाम मालिक के बहुत से शागिर्द भी हैं।

अल्लामा कुर्तुबी ने अपनी किताब तज़केरा-फी-अहवालिल मौता में लिखा है कि इस बाब में असल सदका है जिसमें किसी का कोई इखतिलाफ नहीं है तो जिस तरह से सदका का सवाब मैयित को

पहुंचता है, कुरान करीम पढ़ने, दुआ और इस्तिगफार का सवाब भी मैयित को पहुंचेगा क्योंकि यह भी सदकात ही में हैं और जिन हज़रात ने इमाम शाफई के मुतअल्लिक गुमान किया है कि वह मैयित पर कुरान करीम पढ़ने को नाजाएज़ करार देते हैं, वह गलत है। क्योंकि सिर्फ़ इखतिलाफ़ इसमें है कि इसका सवाब मैयित को पहुंचता है या नहीं। इमाम शाफई और दूसरे जमहूर उलमा इस बात पर मुत्तफिक हैं कि कुरान करीम पढ़ने का सवाब मैयित को पहुंचेगा अगर पढ़ने वाला अल्लाह तआला से पहुंचने की दुआ करता है और जिन हज़रात ने कहा कि कुरान करीम पढ़ने का सवाब नहीं पहुंचता तो यह उस वक्त है जबकि पढ़ने वाला अल्लाह तआला से पहुंचने की दुआ न करे, (तज़केरा फी अहवालिल मौता लिलकुर्तुबी)। गरज़ ये कि अल्लामा कुर्तुबी की तहकीक़ के मुताबिक़ अक्सर उलमा की राय में कुरान करीम पढ़ने का सवाब मैयित को पहुंचता है।

इस मौजू से मुतअल्लिक चंद अहादीस शरीफ़

हज़रत आइशा, हज़रत अबू हुऱैरा, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू राफ़े, हज़रत अबू तलहा अंसारी और हज़रत हुजैफा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की मुत्तफिका रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो मैदे कुर्बान किए। एक अपनी तरफ से और दूसरा उम्मत की तरफ से, (बुखारी, मुस्लिम, मुसनद अहमद, इब्ने माजा, तबरानी, मुसतदरक और इब्ने अबी शैबा)। उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफाक है कि कुर्बानी का सवाब मुर्दों और ज़िन्दों को भी पहुंचता है।

एक शख्स ने रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि

“यह किताब हमने आप पर इस लिए उतारी है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए हर उस चीज़ को वाज़ेह कर दें जिसमें वह इख्तिलाफ कर रहे हैं।” (सूरह अन नहल 64)

अल्लाह तआला ने इन दोनों आयात में वाज़ेह तौर पर बयान फरमा दिया है कि कुरान करीम के मुफस्सिर अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह तआला की तरफ से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह जिम्मेदारी आएद की गई है कि आप उम्मत मुस्लिमा के सामने कुरान करीम के अहकाम व मसाइल खोल खोल कर बयान करें और हमारा ईमान है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अकवाल व अफआल के जरिया कुरान करीम के अहकाम व मसाइल बयान करने की जिम्मेदारी बहुसन खूबी अंजाम दी। सहाबा और ताबेईन और तबेताबईन के जरिया हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अकवाल व अफआल यानी हदीसे नबवी के जखीरा से कुरान करीम की पहली अहम बुनियादी तफसीर इतिहाई काबिले इतिमाद जराये से उम्मत मुस्लिमा को पहुंची है, लिहाज़ा कुरान फहमी हदीस के बेगैर मुमकीन नहीं है।

मज़ामीने कुरान: उलमा-ए-कराम ने कुरान करीम के मुख्तलिफ किसमें जिक्र फरमाए हैं, तफसिलात से कत-ए-नज़र उन मज़ामीन की बुनियादी तकसीम इस तरह है।

(1) अकाएद (2) अहकाम (3) किस्से
कुरान करीम में ओम्मी तौर पर सिर्फ ओस्स जिक्र किए गए हैं, लिहाज़ा अकाएद व अहकाम की तफसील अहादीस नबविया में ही

कर लिया था तो तुम उनकी तरफ से रोज़ा रखो या सदका करो, वह उनके लिए फायदेमंद होगा। (मुसनद अहमद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फरमाया "जब किसी आदमी का इंतिकाल हो जाए तो उसको दफन करने में जल्दी करो, उसके सरहाने की तरफ सूरह फातिहा और पैरों की तरफ सूरह अलबक्रा का आखिर पढ़ो।" अल्लामा हाफिज़ इब्ने हजर ने बुखारी शरीफ की शरह में लिखा है कि यह हदीस तबरानी ने सही (हसन सनद के साथ ज़िक्र किया है।

सहाबा-ए-कराम से भी नबी अकरम सल्लाहु अलैहि वसल्लम के बयान किये हुए फरमान पर अमल करना साबित है, जैसा कि इमाम बैहकी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से मुर्दे के सरहाने की तरफ सूरह फातिहा और पैरों की तरफ सूरह अलबक्रा का आखिरी रुकू पढ़ने का अमल ज़िक्र किया है। मुस्लिम की मशहूर शरह लिखने वाले इमाम नव्वी ने इस हदीस को सही करार दिया है। (अल अज़कार)

रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फरमाया "सूरह यासीन कुरान करीम का दिल है, जो आदमी भी अल्लाह तआला का कुर्ब और आखिरत में भलाई हासिल करने की गरज़ से उसे पढ़ेगा वह उसको हासिल होगी, और इस सूरह को अपने मुर्दों पर पढ़ा करो।" (मुसनद अहमद, इब्ने अबी शैबा, अबू दाऊद, इब्ने माजा, सही इब्ने हब्बान, सुनन बैहकी, नसई)। मुहद्देसीन की एक जमाअत ने इस हदीस को सही करार दिया, उलमा कराम की एक बड़ी जमाअत ने

इसी और दूसरे अहादीस की बुनियाद पर कुरान करीम पढ़ने को जाएज कहा है, जबकि दूसरे मुहद्देसीन ने इस हदीस को कमज़ोर कहा है लेकिन मुहद्देसीन का उसूल है कि फजाइल के बारे में कमज़ोर हदीस पर भी अमल किया जा सकता है जैसा कि इमाम नव्वी (रहमतुल्लाह अलैह) ने जमहूर उलमा के कौल को लिखा है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान किया कि “कोई आदमी मरने की हालत में हो और उसके पास सूह यासीन पढ़ी जाए तो अल्लाह तआला उस पर मौत की हालत को आसान फरमा देता है।” (मुसनद दैलमी, नैलुलअवतार शरह मुसकीयुल अखबार मिन अहादीसिल अखियार तिलकाज़ी अलशौकानी)

हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मरफुअन रिवायत है कि “अगर कोई कब्रिस्तान में सूह यासीन पढ़ता है तो अल्लाह तआला इस कब्रिस्तान के मुर्दों से अज़ाब कब्र को कम कर देता है।” शैख अब्दुल अज़ीज़ (रहमतुल्लाह अलैह) ने इसकी तखरीज की है, इस हदीस को इमाम मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब (रहमतुल्लाह अलैह) ने अपनी किताब अहकामे तमनीयूल मौत में, इमाम हाफिज़ अज़ैलई (रहमतुल्लाह अलैह) ने कंज़ुद्काइक की शरह में और इमाम इब्ने कुदामा हम्बली (रहमतुल्लाह अलैह) ने अपनी किताब अलमुगनी, किताबुल जानाइज़ में लिखा है। इमाम इब्ने कुदामा हम्बली (रहमतुल्लाह अलैह) ने अपनी इस मशहूर किताब अलमुगनी, किताबुल जनाइज़ में एक और हदीस लिखा है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फरमाया “जिस किसी ने अपने

अदालती अहकाम हुदूद व ताजिरात के अहकाम व मसाइल।

(3) किस्से

गुज़शता अम्बिय-ए-कराम और उनकी उम्मतों के वाक्यात की तफसीलात।

कुरान करीम और हम

यह किताब मुकद्दस हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माना से लेकर रहती दुनिया तक मशअले राह बनी रहेगी क्योंकि अल्लाह तआला ने इस किताब को इतना जामे और माने बनाया है कि ईमानियात, इबादात, मामलात, समाजीयात, मुआशियात व इकतिसादियात के ओसूल कुरान करीम में मज़ूक हैं। हाँ! इन की तफसीलात अहादीस नबविया में मौजूद हैं मगर बड़े अफसोस की बात है कि हमरा तअल्लुक इस किताब से रोज़ बरोज़ खत्म होता जा रहा है। यह किताब हमारी मस्जिदों और घरों में गिलाफों में कैद हो कर रह गई हैं, नह तिलावत है नह तदब्ब है और नह ही उसके अहकाम पर अमल। आज का मुस्लिमामन दुनिया की दौर में इस तरह गुम हो गया है कि कुरान करीम के अहकाम व मसाइल को समझना तो दर किनार उसकी तिलावत के लिए भी वक्त नहीं है। अल्लामा इकबाल ने अपने दौर के मुस्लिमानों के हाल पर रोना रोते हुए असलाफ से उस वक्त के मुस्लिमान का मुकरिराना इन अल्फाज़ में किया था-

वो ज़माने में मुअज्ज थे मुस्लिमा हो कर और हम खवार हुए तारिके कुरान होकर

आज हम अपने बच्चों की दुनियावी तालिम के बारे में सोचते हैं, उन्हें असरी ओबू की तालीम देने पर अपनी मेहनत व तवज्जह

हज़रत अब्दुर रहमान बिन अल उला (रहमतुल्लाह अलैह) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि उनके वालिद ने फरमाया कि जब मैं मर जाऊं तो बिसम्मिल्लाह व अला सुनन्ते रसूलिल्लाह कह कर लहद वाली कब्र में दफन कर देना और मेरे सरहाने सूह फातिहा पढ़ना, इसलिए कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) को इस तरह फरमाते सुना है। (अखरजहुल खिलाल फील जामे, किताबुल किरात इंदल कबूर)

अल्लामा हाफिज़ इब्ने क़य्यिम (रहमतुल्लाह अलैह) ने इस हदीस को अपनी किताब "अररूह" में ज़िक्र किया है और उन्होंने लिखा है कि सलफे सालेहीन की एक जमाअत ने किताबों में लिखा है कि उन्हें वसीयत की कि दफन के वक्त उनकी कब्र पर कुरान करीम पढ़ा जाए।

एक शख्स ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मैं अपने माँ बाप की खिदमत उनकी जिंदगी में तो करता रहा लेकिन उनके इंतिकाल के बाद कैसे खिदमत करूंगा? अल्लाह के रसूल ने इरशाद फरमाया कि उनके साथ नेकी यह है कि अपनी नमाज़ के साथ उनके लिए भी नमाज़ पढ़ो और अपने रोज़ा के साथ उनके लिए भी रोज़ा रखो। (दारे कुतनी)

अल्लामा हाफिज़ अलजैली (रहमतुल्लाह अलैह) ने अपनी किताब "शरह कंजुद्काएक" में इमाम इब्ने अलहुमाम ने "फतहुल कदीर" में और शैख मोहम्मद अल अरबी इब्ने अत्तेबानी अलमालकी

अलमगरबी (रहमतुल्लाह अलैह) ने अपनी किताब "इसआफुल मुस्लेमीन वलमुस्लेमात बेजवाज़ व वसुल सवाबेहल अमवात" में इस हदीस को ज़िक्र किया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि माँ बाप के साथ नेकी यह है कि अपनी नमाज़ के साथ उनके लिए नमाज़ पढ़ो, अपने रोज़ा के साथ उनके लिए भी रोज़ा रखो, अपने सदका के साथ उनके लिए भी सदका करो। (अलमुसन्निफ लिलशैख इब्ने अबी शैबा) और इमाम मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब (रहमतुल्लाह अलैह) ने इस हदीस को अपनी किताब "अहकामे तमनेयिल मौत" में ज़िक्र किया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ी अल्लाहु अन्हु) की रिवायत है कि कबीला खश्म की एक औरत ने अल्लाह के रसूल से पूछा कि मेरे बाप पर हज ऐसी हालत पर फ़र्ज़ हुआ कि वह बहुत बुढ़े हो चुके हैं, ऊंट की पीठ पर बैठ भी नहीं सकते हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तुम उनकी तरफ से हज अदा करो। (बुखारी, मुस्लिम, मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, नसई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कबीला खश्म ही के एक मर्द का ज़िक्र करते हैं कि उन्होंने अपने बुढ़े बाप के बारे में यही सवाल किया था। अल्लाह के रसूल ने फरमाया तुम्हारा क्या खयाल है कि अगर तुम्हारे बाप पर कर्ज़ हो और तुम उसको अदा कर दो तो वह उनकी तरफ से अदा हो जाएगा? उस शख्स ने कहा जी हाँ! तो अल्लाह के रसूल ने इरशाद फरमाया बस इसी तरह तुम उनकी

रमज़ान का महीना और कुरान करीम

रमज़ान का महीना इस्लामी महीनों का नवां महीना है, इस महीने में रोज़े रखना हर मुसलमान बालिग, आकिल, सेहतमंद, मुक्रीम, मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है जिसकी अदाएगी के ज़रिया ख्वाहिशात को काबू में रखने का मलका पैदा होता है और वही तक्वा की बुनियाद है। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया “ऐ ईमान वालों तुमपर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं जिस तरह मुझे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ” (सूरह अलबकरा 183) परहेज़गार बनने के मतलब यह कि जिंदगी में तक्वा पैदा करने के लिए रोज़ा का बड़ा असर है।

इसी मुबारक महीने की एक रात में क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों की रहनुमाई के लिए अल्लाह तआला की किताब कुरान करीम आसमान से दुनिया पर उतारी गई जिससे फ़ायदा हासिल करने का बुनियादी शर्त भी तक्वा है। अल्लाह तआला का इरशाद है यह किताब ऐसी है कि इसमें कोई शक नहीं, हिदायत है परहेज़गारों के लिए मतलब अल्लाह से डरने वालों के लिए” अल्लाह तआला के इस फरमान के मुताबिक कुरान करीम से हर शख्स को हिदायत नहीं मिलती बल्कि कुरान करीम से फ़ायदा हासिल करने की बुनियादी शर्त तक्वा है। दूसरी तरफ अल्लाह तआला ने कुरान में रोज़ों की फ़र्ज़ियत का मक़सद बताते हुए फरमाया “यानी तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ” गरज़ ये कि रमज़ान और रोज़ा के बुनियादी मक़सद में तक्वा मुश्तरक है।

हजरत आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) फरमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जो शख्स इंतिकाल कर जाए और उसके जिम्मे कुछ रोज़े हों तो उसकी तरफ से उसका वली रोज़ा रख ले।" (बुखारी, मुस्लिम, मुसनद अहमद)

(वज़ाहत) इन अहादीस में दूसरों की तरफ से नमाज़ और रोज़ा रखने का जो ज़िक्र आया है, उनसे नफली या नज़र की नमाज़ और रोज़ा मुराद हैं। क्योंकि दूसरे अहादीस में फ़र्ज़ नमाज़ या रमज़ान के रोज़े के मुतअल्लिक वाज़े हुकुम मौजूद है कि वह दूसरों की तरफ से अदा नहीं किए जा सकते हैं बल्कि उसके लिए फिदया ही अदा करना होगा।

रसूलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि घर वालों के मुर्दा पर (बुलंद आवाज़ के साथ) रोज़े की वज़ह से मुर्दा को अज़ाब दिया जाता है। (बुखारी व मुस्लिम) जिन उलमा व फुकहा की राय में कुरान करीम पढ़ने का सवाब मुर्दा को नहीं पहुंचता है वह आमतौर पर दो दलाइल बयान करते हैं।

"कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, आदमी को वही मिलता है जो उसने कमाया।" (सूरह अन नजम 38, 39)

अगर इस आयत के अमूम से कुरान करीम पढ़ने का सवाब मुर्दा को नहीं पहुंच सकता तो फिर इसाल सवाब, कुर्बानी और हज्जे बदल वगैरह करना सब नाजाइज़ हो जाएंगे बल्कि दूसरे के हक में दुआए

इस्तिगफार यहां तक कि नमाज़े जनाज़ा भी बेमाना हो जाएंगी क्योंकि यह आमाल भी उस शख्स का अपना अमल नहीं है जिसके हक में दुआ की जा रही है। बल्कि इससे मुराद यह है कि अमुमी तौर पर हर शख्स अपने ही अमल का बदला पाएगा। लेकिन बाप, बीवी या किसी करीबी रिश्तेदार के इंतिकाल के बाद अगर कोई शख्स उनके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ता है या उनके लिए मगफिरत की दुआ करता है या उनकी तरफ से हज या उमरा करता है या कुर्बानी करता है या सदका करता है या अल्लाह तआला के पाक कलाम की तिलावत करके उसका सवाब मुर्दे को पहुंचाता है तो अल्लाह तआला इस अमल को कबूल फरमा कर मुर्दे को इसका सवाब अता फरमाएगा इंशाअल्लाह, चाहे मुर्दा मुहगार ही क्यों न हो, लेकिन अगर अल्लाह तआला के हुकुम से मुर्दा को सवाब नहीं मिला तो इंशाअल्लाह आमाल करने वाले की तरफ इसका अजर पलट कर आएगा, जिस तरह मनीआर्डर अगर पाने वाले को नहीं मिलता है तो भेजने वाले को वापस मिल जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि इंसान के इंतिकाल के बाद उसके अमल का सिलसिला खत्म हो जाता है मगर तीन अमल सदका जारिया, ऐसा इल्म जिससे लोग फायदा उठाएं और नेक लड़के की दुआ जो वह अपने वालिद के लिए करे। (इब्ने माजा, इब्ने खुज़ैमा)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद सिर्फ उन मजूक़ा तीन आमाल की खास अहमियत को बतलाने के लिए है, अगर इस

रमज़ान का महीना कुरान करीम से खास तअल्लुक होने की सबसे बड़ी दलील कुरान करीम का रमज़ान के महीने में नाज़िल होना है। इस मुबारक महीने की एक बाबरकत रात में अल्लाह तआला ने लौहे महफूज़ से समा-ए-दुनिया पर कुरान करीम नाज़िल फरमाया और इसके बाद हसबे ज़रूरत थोड़ा थोड़ा हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होता रहा और तकरीबन 23 साल के अरसा में कुरान करीम मुकम्मल नाज़िल हुआ। कुरान करीम के अलावा तमाम सहीफे भी रमज़ान में नाज़िल हुए जैसा कि मुसनद अहमद में है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मुसहफे इबराहिमी और तौरात व इंजील सबका नुज़ूल रमज़ान में ही हुआ है। नुज़ूले कुरान करीम और दूसरी मुकद्दस किताबों और सहीफों के नुज़ूल में फ़र्क यह है कि सूखी किताबें जिस रसूल व नबी पर नाज़िल हुईं एक साथ एक ही दफा में जबकि कुरान करीम लौहे महफूज़ से पहले आसमान पर रमज़ानुल मुबारक की मुबारक रात यानी लैलतुलकदर में एक बार नाज़िल हुआ और फिर थोड़ा थोड़ा हसबे ज़रूरत नाज़िल होता है। जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान है “बेशक हमने कुरान करीम को शबेक़दर में उतारा है। यानी कुरान करीम को लौहे महफूज़ से आसमाने दुनिया पर इस रात में उतारा है। आप को कुछ मालूम भी है कि शबे क़दर कैसी बड़ी चीज़ है, यानी इस रात की बड़ी फज़ीलत का आपको इल्म भी है, कितनी खूबियां और किस क़दर फज़ाइल इसमें हैं। इसके बाद चंद फज़ाइल का ज़िक्र फरमाते हैं, शबेक़दर हज़ार महीनों से बेहतर है यानी हज़ार महीनों तक इबादत करने का जितना सवाब है इससे ज़्यादा शबेक़दर

और न ही हल की बजाहिर कोई खास उम्मीद है और न ही हमें हल मुखतलफ फीह मसाइल को हल करने का मुकल्लफ बनाया गया है। इस का हल कल कयामत के रोज़ ही होगा जैसा कि अरब के मशहूर अलिमे दीन शैख डाक्टर आइज़ अलकरनी ने हिन्दुस्तान के हालिया सफर के दौरान अपनी तकरीर के दौरान फरमाया था।

लिहाज़ा हमें इखतियार है कि हम जिन उलमा के साथ अकीदत रखते हैं या जिन से कुरान व हदीस का इल्म हासिल करते हैं उन्हीं उलमा की सरपरस्ती में उन 20 फीसद मसाइल पर दूसरी राय का इहतिराम करते हुए अमल करें। मगर यह कि दूसरी राय शरीअते इस्लामिया के वाज़ेह अहकामात के खिलाफ हो।

इन्हीं मुखतलफ फीह मसाइल में कुरान करीम पढ़ने का सवाब मुर्द को पहुंचने का मसअला है। उलमा और फुकहा की एक जमाअत की राय है कि कुरान करीम पढ़ने का सवाब मुर्दों को नहीं पहुंचता। जबकि दूसरी जमाअत की राय है कि हज, ज़कात, क़र्बानी और सदकात की तरह कुरान करीम पढ़ने का सवाब भी मुर्दों को पहुंचता है, इन उलमा व फुकहा में से हज़रत इमाम अबू हनीफा और हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल हैं। हज़रत इमाम शाफई और हज़रत इमाम मालिक के बाज़ असहाब की राय भी यही है कि मुर्दों को कुरान करीम पढ़ने का सवाब पहुंचता है। जैसा के इमाम नववी ने अपनी किताबुल अज़कार और इमाम सियुती ने अपनी किताब शरहुस्सदर में लिखा है। इमाम हाफिज़ काज़ी अलुक्का तकीयुद्दीन अस्सबकी अशशाफई ने अपनी किताब "क़ज़ाउल अरब फी असएला

हल्ब" में कुरान करीम पढ़ने के सवाब को मुर्दा के लिए हिबा करने को जाएज़ करार दिया है।

अल्लामा इब्ने तैमिया ने भी कुरान करीम के सवाब मुर्दा के लिए हिबा करने को जाएज़ करार दिया है (मजमूआ फतावा इब्ने तैमिया जिल्द 24)। इमाम अहमद बिन हम्बल (रहमतुल्लाह अलैह) के शागिर्द इमाम अबूबकर अलमरूज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) ने कहा है कि मैंने इमाम अहमद बिन हम्बल से सुना है कि जब तुम कब्रिस्तान में दाखिल हो तो आयतलुर्की फिर तीन बार "कुल हुवल्लाहु अहद" पढ़ो। इसके बाद कहो कि या अल्लाह इसका सवाब कब्रिस्तान वालों को पहुंचा। (अलमकसदुल अरशद फी असहाबिल इमाम अहमद)

सऊदी अरब की मजिलस कज़ाए आला के साबिक सदर शैख अब्दुल्लाह बिन हमीद ने इस मौजू पर 16 सफ़हात पर मुशतमिल एक किताबचा लिखा है जिसमें उलमा के अकवाल दलाइल के साथ तहरीर फरमाए हैं कि अक्सर उलमा की राय यही है कि कुरान करीम पढ़ने का सवाब मुर्दा को पहुंचाया जा सकता है।

क्योंकि अहादीस से माली और बदनी इबादात में नयाबत का वाज़ेह सबूत मिलता है, जिस पर सारी उम्मत मुस्लिमा मुत्तफिक है। रही खालिस बदनी इबादात तो बहुत से अहादीस से इस में भी नयाबत का जवाज़ साबित होता है। नेकियों की बाज़ अकसाम को मुस्तसना करने की कोई माकूल वजह समझ में नहीं आती है। और कुरान व

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शुरु फरमाई और मस्जिद में बाजमाअत इसको अदा भी फरमाया लेकिन इस ख्याल से इसको छोड़ भी दिया करते कि कहीं उम्मत पर वाजिब न हो जाए और फिर उम्मत के लिए इसको अदा करने में दुशवारी हो। हज़रत आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) फरमाती हैं कि रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (रमज़ाम की) एक रात मस्जिद में नमाज़े तरावीह पढ़ी, लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी फिर दूसरी रात नमाज़ में लोगों की तादाद ज़्यादा हो गई, तीसरी या चौथी रात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़े तरावीह के लिए मस्जिद में तशरीफ न लाए और सूबह को फरमाया कि मैंने तुम्हारा शौक देख लिया और मैं इस डर से नहीं आया कि कहीं यह नमाज़ तुम पर रमज़ान में फ़र्ज़ न कर दी जाए। (मुस्लिम अलतरगीब-फी-सलातुतरावीह)

हज़रत अबु हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़यामे रमज़ान की तरगीब तो देते थे लेकिन वुजूब का हुकुम नहीं देते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते कि जो शख्स रमज़ान की रातों में नमाज़ (तरावीह) पढ़े और वह ईमान के दूसरे तकाज़ों को भी पूरा करे और सवाब की नियत से यह अमल करे तो अल्लाह तआला उसके गुज़रे हुए गुनाह माफ़ फरमा देंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात तक यही अमल रहा। दौरे सिद्दीक़ी और इब्तिदा अहदे फारूक़ी में भी यही अमल रहा। (मुस्लिम अलतरगीब-फी-सलातुतरावीह), सही मुस्लिम की इस हदीस से मालूम हुआ कि नबी अकरम सल्लल्लाहु

कुरान करीन को छूने या छू कर पढ़ने के लिए वजु जरूरी है

कुरान करीम अल्लाह तआला का कलाम है, यानी उसकी मखलूक नहीं बल्कि सिफत है। कलाम इलाही लौहे महफूज़ में हमेशा से है और यह हमेशा रहेगा। अल्लाह तबारक व तआला ने सारे कलामों में सबसे अफज़ल व आला अपना पाक कलाम यानी कुरान करीम क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों की हिदायत व रहनुमाई के लिए सारे इंसानों में सबसे अफज़ल व आला हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर सबसे ज्यादा मुकर्रब फ़रिश्ता के ज़रिया नाज़िल फरमाया है। इस पाक कलाम के नुज़ूल की इब्तिदा सबसे अफज़ल महीना यानी रमज़ानुल मुबारक की सबसे अफज़ल रात यानी लैलतुल कदर में हुई। अल्लाह तआला जन्नत में जन्नतियों के सामने खुद अपने पाक कलाम की तिलावत फरमाएगा। अल्लाह तआला के कलाम की तिलावत भी बेशुमार इंसानों की हिदायत का ज़रिया बनी है, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के इस्लाम लाने का वाक़या तारीख की किताबों में लिखा है।

कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफाक है कि हम जब भी कुरान करीम की तिलावत करें या उसको छू तो कलाम-ए-इलाही की अज़मत का तकाज़ा है कि हम बावज़ू हों। यानी हमें इसका खास इहतिमाम करना चाहिए कि तिलावत कु़ान के वक्त हृदसे असगर व हृदसे अकबर से पाक व साफ हों। अगर कोई शख्स कुरान करीम को छूए बेगैर ज़बानी पढ़ना चाहता है तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल की

रौशनी में उलमा का इत्तिफाक है कि वजू जरूरी नहीं है लेकिन अगर कोई शख्स कुरान करीम सिर्फ छूना चाहता है या छूकर पढ़ना चाहता है जिस तरह हम ओमूमन कुरान की तिलावत करते हैं तो कुरान व हदीस की रौशनी में जमहूर उलमा की राय है कि वजू का होना शर्त है यानी हम बेवजू कुरान करीम को छू नहीं सकते हैं। बहुत से सहाबा-ए-कराम, ताबेईन एज़ाम यहां तक कि चारों अईम्मा (इमाम अबु हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफी और इमाम अहमद बिन हम्बल) ने भी कुरान व हदीस की रौशनी में यही फरमाया है। उलमा-ए-अहनाफ, बरसगीर के उलमा-ए-कराम और सउदी अरब के मशाइख ने भी यही लिखा है कि बेवजू कुरान करीम छूना नहीं जा सकता। जमहूर उलमा ने इस के लिए कुरान व हदीस के बहुत से दलाइल पेश फरमाए हैं। यहां इखतिसार के मद्देनज़र सिर्फ एक आयत और एक हदीस पर इकतिफा कर रहा हूँ।

अल्लाह तआला अपने पाक कलाम में इरशाद फरमाता है। इसको (यानी कुरान करीम को) वही लोग छू सकते हैं जो पाक हों (सूरह अलवाक़ेआ आयत 79)। इस आयत से मुफस्सिरीन ने दो मफहूम मुराद लिए हैं।

- (1) कुरान करीम को लौहे महफूज़ में पाक फरिशतों के सिवा कोई और छू नहीं सकता है।
- (2) जो कुरान करीम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ है यानी वह मुसहफ जो हमारे हाथों में है इसको सिर्फ पाकी की हालत में ही छूना जा सकता है। इस आयत की दूसरी तफसीर के मुताबिक बगैर पाकी के कुरान को छूना या छूकर पढ़ना

शिफाअत क़बूल कीजिए और कुरान कहता है कि या अल्लाह मैंने रात को उसको सोने से रोका मेरी शिफाअत क़बूल कीजिए, तो दोनों की शिफाअत क़बूल करली जाएगी। (रवाहु अहमद व तबरानी फीलकबीर वलहाकिम वकाल सही अल शर्त मुस्लिम)।

तीसरी खुसूसियत जो रमज़ान और कुरान दोनों में मुशतरक तौर पर पाई जाती है वह कुर्ब इलाही है। यानी अल्लाह तआला के कलाम की तिलावत के वक़्त अल्लाह तआला से खास कुर्ब हासिल होता है, ऐसे ही रोज़ादार को भी अल्लाह तआला का खास कुर्ब हासिल होता है कि रोज़ा के मुतअल्लिक हदीस कुदसी में अल्लाह तआला का इरशाद है कि मैं खुद ही रोज़ा का बदला हूँ। मज़मून के बढ़ने की वजह से कुरान व रमज़ान की सिर्फ़ तीन मुशतरक खुसूसियात के ज़िक्र पर इकतिफा करता हूँ।

अस्लाफ का रमज़ान के महीने में तिलावते क़ान करीम का खास एहतिमाम

रिवायात से मालूम होता है कि सहाबा व ताबेईन और तबेताबईन रमज़ानुल मुबारक में कुरान करीम के साथ खुसूसी शगफ़ रखते थे। बाज़ अस्लाफ व अकाबेरीन के मुतअल्लिक किताबों में लिखा है कि वह रमज़ाम में दूसरी मसरूफियात छोड़कर सिर्फ़ और सिर्फ़ तिलावते कुरान में दिन व रात का वाफ़िर हिस्सा खर्च करते थे। इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैह) जिन्होंने हदीस की मशहूर किताब मुअत्ता लिखी है जो मशहूर फकीह फकीह होने के साथ साथ एक बड़े मुहदीस भी हैं लेकिन रमज़ान शुरू होने पर हदीस पढ़ने पढ़ाने के

(अहकामुल कुरान लिलजिसास) हज़रत अता, हज़रत ताउस और हज़रत शाबी और हज़रत कासिम बिन मोहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहिम) से भी यही मंकूल है। (अलमुगनी ले इबने कुदामा) लेकिन कुरान करीम को हाथ लगाए बेगैर यानी याद से पढ़ना उन सब के नज़दीक बेवज़ू जाएज़ था।

कुरान व हदीस की रौशनी में मशहूर व मारूफ चारों अईम्मा की रायें मसलक-ए-हनफी की तशरीह इमाम अल्लामा अलाउद्दीन कासानी हनफी (रहमतुल्लाह अलैह) ने बदाए -अल- सनाए में यूँ लिखा है कि "जिस तरह बेवज़ू नमाज़ पढ़ना जाएज़ नहीं इसी तरह कुरान मजीद को हाथ लगाना भी जाएज़ नहीं। लेकिन किसी कपड़े के साथ कुरान करीम को छूआ जा सकता है।"

मसलके शाफई के इमाम नव्वी ने अलमिनहाज में इस तरह ज़िक्र किया है "नमाज़ और तवाफ की तरह कुरान को हाथ लगाना और उसके वरक़ को छूना भी वज़ू के बगैर हराम है। इसी तरह कुरान पाक की जिल्द को छूना भी मना है।" बच्चा अगर बेवज़ू हो तो वह कुरान करीम को हाथ लगा सकता है और बेवज़ू आदमी अगर कुरान पढ़े तो लकड़ी या किसी और चीज़ से वह उसका वरक़ पलट सकता है।

मालिकिया का मसलक जो अलफेकहा अलमजाहिबिल अरबा में नकल किया गया है वह यह है कि जमहुर फुकहा के साथ वह इस मामला में मुत्तफिक हैं कि कुरान को हाथ लगाने के लिए वज़ू शर्त है।

शैख़ इबने कुदामा हम्बली ने लिखा है कि जनाबत और हैज व निफास की हालत में कुरान या उसकी पूरी आयत को पढ़ना जाएज़

नहीं है लेकिन बिसमिल्लाह, अलहमदुलिल्लाह वगैरह कहना जाएज है क्योंकि अगरचे यह भी किसी न किसी आयत का हिस्सा हैं मगर इनसे तिलावते कुरान मकसूद नहीं होती। रहा कुरान को हाथ लगाना तो वह किसी हाल में वजू के बेगैर जाएज नहीं।

अल्लामा इबने तैमिया (रहमतुल्लाह अलैह) ने भी यही लिखा है कि बेगैर वजू के कुरान करीम नहीं छूना चाहिए और यही हज़रत सलमान फारसी (रज़ी अल्लाह अन्हु) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) और दूसरे सहाबा-ए-कराम की राय यह थी और किसी एक सहाबी से इसके खिलाफ मंकूल नहीं। (मजमउल फतावा 226/21-288/21)

शैख हाफिज़ बिन अलबर (रहमतुल्लाह अलैह) ने लिखा है कि तमाम उलमा-ए-उम्मत का इत्तिफाक है कि कुरान छूने के लिए वजू जरूरी है। (अलइसतिजकार 10/8)

गर्जकि कुरान व हदीस की रौशनी में खैरुल कुरून से असर हाजिर तक के जमहूर मुहद्देसीन, मुफस्सेरीन, फुकहा व उलमा और चारों अईम्मा ने यही कहा है कि बेगैर वजू के कुरान करीम का छूना जाएज नहीं है। इस तरह उम्मत मुस्लिमा का तकरीबन 95 फीसद इस बात पर मुत्तफिक हैं कि कुरान को छूने के लिए वजू का होना शर्त है। जिन चंद हज़रात ने बेगैर वजू के कुरान करीम छूने की इजाजत दी है उन्होंने भी यही तरगीब दी है कि बेगैर वजू के कुरान करीम नहीं छूना चाहिए। गरज़ ये कि हमें बेगैर वजू के कुरान करीम नहीं छूना चाहिए और नहीं मुसहफ से कुरान करीम की तिलावत बेगैर वजू के करनी चाहिए।

वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स एक हर्फ कुरान करीम का पढ़े उसके लिए इस हर्फ के बदले एक नेकी है और एक नेकी का बदला दस नेकी के बराबर मिलता है। मैं यह नहीं कहता कि अस्फि लाम मीम एक हर्फ है बल्कि अलिफ एक हर्फ है, लाम एक हर्फ है और मीम एक हर्फ । (तिर्मिज़ी)

तिलावते कुरान के कुछ आदाब हैं जिनका तिलावत के वक़्त खास खयाल रखा जाए ताकि हम अल्लाह के नज़दीक अजरे अज़ीम के मुसतहिक़ बनें। तिलावत के एक इबादत है लिहाज़ा रिया व शोहरत के बजाए इससे सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा मतलूब व मकसूद हो, पाकी की हालत में अदब व इहतिराम के साथ अल्लाह के कलाम की तिलावत करें। तीसरा अहम अदब यह है कि इतमिनान के साथ ठहर ठहर कर और अच्छी आवाज़ में तजवीद के कवाएद के मुताबिक़ तिलावत करें। तिलावत कुरान के वक़्त अगर आयतों के मानी पर गौर व फ़िक्र करके पढ़ें तो बहुत ही बेहतर है। कुरान करीम के अहकाम व मसाइल पर खुद भी अमल करें और उसके पैग़ाम को दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करें।

अल्लाह तआला हम सबको रोज़ा और तिलावते कुरान करीम की बरक़त से तक्रवा वाली जिंदगी गुज़ारने वाला बनाए और हमें दोनों ज़हां में कामयाबी व कामरानी अता फरमाए आमीन।

बेगैर वजू के कुरान करीम का छूना जाएज नहीं है।

कुरान करीम पढ़ने के लिए वजू शर्त नहीं है लेकिन कुरान करीम को छूने के लिए वजू जरूरी हैं। हां रुमाल वगैरह के जरिया बेगैर वजू के कुरान को छूआ जा सकता है। जहां तक बच्चों का तअल्लुक है तो अक्सर उलमा ने बच्चों के लिए इजाजत दी है कि वह बेगैर वजू के कुरान करीम को छू कर पढ़ सकता है। जबकि बाज़ उलमा की राय में बच्चों के लिए भी जरूरी है कि वह बेगैर वजू के कुरान करीम न छूएं। क्योंकि यह कुरान करीम का एहतिराम है जो हर एक के लिए जरूरी है। हम कहते हैं कि अगर बच्चे भी बावजू कुरान करीम छूएं तो बेहतर व अफजल है लेकिन अगर कोई बच्चा बेगैर वजू के छू ले तो कोई हर्ज नहीं इंशाअल्लाह।

सउदी अरब के एक जैयिद आलीम डाक्टर मोहम्मद इबन अब्दुर रहमान अलओरैफी ने भी कुरान व हदीस की रौशनी में यही फरमाया है कि बेगैर वजू के कुरान करीम का छूना जाएज नहीं।

डाक्टर मोहम्मद इबन अब्दुर रहमान अलओरैफी के कलाम का खुलासा यह है कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम के मुतअल्लिक अपने कलाम में इरशाद फरमाया “इस को न छूओ मगर पाकी की हालत में” बाज़ उलमा ने फरमाया है कि कुरान करीम की इस आयत में मुत्तहेरून से मुराद फ़रिश्ते हैं सही भी यही है लेकिन मोमिनीन को भी चाहिए कि वह फ़रिश्तों की मुशाबहत करके बेगैर पाकी के कुरान करीम को न छूएं। शेख इबने अब्दुबर ने फरमाया कि चारों अईम्मा (इमाम अबु हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफई और इमाम अहमद बिन हम्बल) ने कुरान करीम के छूने के लिए वजू को

जरूरी करार देने का फतवा दिया है। यानी पाकी के बेगैर कुरान करीम का छूना जाएज नहीं है। इसी तरह हज़रत उमर बिन हिजम की हदीस में वारिद है जिसको नसई और दूसरे मुहद्देसीन ने रिवायत किया है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कुरान करीम को बेगैर पाकी के न छूआ जाए यानी कुरान करीम को छूने के लिए वज़ू जरूरी है। जहां तक कुरान को छूए बेगैर कुरान के पढ़ने का मामला है तो बेगैर वज़ू के कुरान करीम को पढ़ा जा सकता है लेकिन गुसल की जरूरत हो गई तो फिर कुरान करीम किसी भी हालत में नहीं पढ़ा जा सकता है।

सउदी अरब के एक मशहूर आलिमे दीन खालिद बिन अब्दुल्लाह मसलेह (अलकसीम) ने भी कुरान व हदीस की रौशनी में यही फरमाया है कि बेगैर वज़ू के कुरान करीम का छूना जाएज नहीं है।

खुलासा कलाम पेश है कि मसला में उलमा के दरमायान इख्तिलाफ है। जमहुर उलमा खास कर चारों अइम्मा की राय है कि बेगैर वज़ू के कुरान नहीं छूआ जा सकता है जैसा कि उमर बिन हिजम की हदीस आई है। हाफिज़ इबन अब्दुलबर ने कहा कि इस हदीस की बहुत शोहरत की वजह से मुहद्देसीन ने इसे कबूल किया है। बाज़ फुकहा ने कुरान करीम की आयत से इसतिदलाल किया है। लेकिन यह महल्ले नज़र है लेकिन फिर भी फ़रिश्तों की तरह मोमेनीन को भी बावज़ू ही कुरान करीम छूना चाहिए।

गरज़ ये कि कुरान व हदीस की रौशनी में खैरुल कुन से असर हाजिर तक के जमहुर मुहद्देसीन, मुफस्सेरीन, फुकहा और चारों अइम्मा ने यही कहा है कि बेगैर वज़ू के कुरान करीम का छूना जाएज नहीं है।

एक पारा तिलावत फरमाएं। बच्चों को कुरान करीम सिखने के लिए भी इससे सहूलत होती है।

सूरतें: कुरान करीम में 114 सूत्रें हैं। हर सूत्र के शुरू में बिस्मिल्लाह लिखी हुई है, सिवाए सूरह तौबा के। सूरह अन्नमल में बिस्मिल्लाह एक आयत का जुज़ भी है, इस तरह कुरान करीम में बिस्मिल्लाह की तादाद भी सूरतों की तरह 114 ही है। इन तमाम सूरतों के नाम भी हैं जो बतौर अलामत रखे गए हैं बतौर उनवान नहीं। मसलन सूरह अलफील का मतलब यह नहीं कि वह सूरह जो हाथी के मौजू पर नाज़िल हुई, बल्कि इसका मतलब सिर्फ यह है कि वह सूरह जिसमें हाथी का ज़िक्र आया है। इसी तरह सूरह अलबक्र का मतलब वह सूरह जिसमें गाए का ज़िक्र आया है।

आयात: कुरान करीम में छः हजार से कुछ ज्यादा आयात हैं।

सजदा-ए-तिलावत: कुरान करीम में 14 आयात हैं, जिनकी तिलावत के वक्त और सुनने के वक्त सजदा करना वाजिब हो जाता है।

मक्की व मदीनी आयात व सूरतें: मदीना हिजरत से पहले तकरीबन 13 साल तक कुरान करीम के नुज़ूल की आयात व सूरतों को मक्की और मदीना मनव्वरा पहुंचने के बाद तकरीबन 10 साल तक कुरान करीम के नुज़ूल की आयात व सूरतों को मदीनी कहा जाता है।

मज़ामीने कुरान

उलमा-ए-कराम ने कुरान करीम के मुख्तलिफ किसमें ज़िक्र फरमाई हैं, तफसिलात से कत-ए-नज़र उन मज़ामीन की कुम्नियादी तकसीम इस तरह है।

(1) अक्काएद (2) अहकाम (3) किस्से

(1) "अक्काएद" तौहीद, रिसालत, आखिरत वगैरह के मज़ामीन इसी के

दूसरी तफसीर के मुताबिक वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि नापाकी (यानी ऐसी नापाकी जो बड़ी और छोटी दोनों हों) की हालत में कुरान छूना जाएज़ नहीं है। पहली तफसीर में जिसको मुफस्सिरीन ने राजेह करार दिया है अगरचे एक खबर दी जा रही है कि कुरान करीम को लौंहे महफूज़ में पाक फरिशतों के सिवा कोई और छू नहीं सकता मगर हमारे लिए वाज़ेह तौर पर यह पैगाम है कि जब लौंहे महफूज़ में पाक फरिशते ही इसको छू सकते हैं तो हम दुनिया में नापाकी की हालत में कुरान करीम को कैसे छू सकते हैं। नीज़ कुरान करीम के पहले मुफस्सिर और सारी इंसानियत में सबसे अफज़ल व आला हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात में भी यही तालीम मिलती है कि नापाकी की हालत में वज़ के बेगैर कुरान करीम को न छुए और न छूकर तिलावत करें।

हज़रत उमर बिन हज़म (रज़ी अल्लाहु अन्हु) ने यमन वालों को लिखा कि कुरान करीम को पाकी के बेगैर न छुआ जाए। (मुअत्ता मालिक) और (दारमी में) यह हदीस मुख्तलिफ सनदों से अहादीस की बहुत सी किताबों में लिखी हुई है और जमहूर मुहद्देसीन ने इसको सही करार दिया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ी अल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "हाइज़ा (वह औरत जिसको माहवारी आ रही हो) और जुंबी (जिसपर गुसल वाजिब हो गया है) कुरान करीम से कुछ भी न पढ़े। (तिर्मिज़ी 131, इब्ने माजा 595, दारे कुतनी 1/117 और बैहिकी 1/89)

सहाबा-ए-कराम व ताबेईन के दरमायान यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि नापाकी की हालत में और बेवजू कुरान करीम को नहीं छुआ जा सकता है। चुनांचे बाज़ सहाबा-ए- कराम और ताबेईन के अकवाल हदीस की मशहूर किताबों में लिखी हुई है। गरज़ ये कि कुरान व हदीस की रौशनी में खैरुल कुन से असरे हाज़िर तक के जमहूर मुहद्देसीन, मुफस्सिरीन, फुकहा व उलमा-ए-कराम और चारों अईम्मा ने यही कहा है कि बेगैर वजू, इसी तरह नापाकी की हालत में कुरान करीम का छूना दुरुस्त नहीं है। हाँ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अकवाल की रौशनी में फुकहा व उलमा ने लिखा है कि अगर कोई शख्स कुरान करीम को छुए बेगैर सिर्फ़ ज़बानी पढ़ना चाहता है तो उसके लिए वजू जरूरी नहीं है। लेकिन नापाकी की हालत में यानी अगर किसी मर्द या औरत पर गुसल वाजिब हो गया है तो कुरान व हदीस की रौशनी में जमहूर उलमा का इस बात पर इत्तिफाक है कि फिर कुरान करीम की ज़बानी भी तिलावत नहीं की जा सकती है।

हाइज़ा (वह औरत जिसको माहवारी आ रही हो) के बारे में 80 हिजरी में पैदा हुआ मुहद्दिस व फकीह शैख नोमान बिन साबित (रहमतुल्लाह अलैहि) (इमाम अबु हनिफा), उलमा-ए-अहनाफ, हिन्द व पाक के उलमा और दूसरे मुहद्देसीन व मुफस्सिरीन ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान (हाइज़ा और जुनबी कुरान करीम से कुछ भी नह पढ़े) और दूसरे दलिलों की रौशनी में फरमाया है कि जुनबी या हाइज़ा भी कुरान करीम को ज़बानी नहीं पढ़ सकती

अदालती अहकाम

हुदूद व ताज़ीरात के अहकाम व मसाइल।

किस्से

गुज़शता अम्बिया -ए-कराम और उनकी उम्मतों के वाक्यात की तफसीलात।

कुरान करीम के मुख्तलिफ ज़बानों में बेझार तरजुमे हुए हैं और तफसीरें भी लिखी गई हैं, और यह सिलसिला बराबर जारी है औ इन्शाअल्लाह कल क़यामत तक जारी व सारी रहेगा। मगर सबका माखज़ कुरान व हदीस ही है, यानी मुफस्सिरे अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफ़आल की रौशनी में ही कुरान करीम समझा जा सकता है।

हकीम लुकमान (रहमतुल्लाह अलैह)

और उनकी कीमती नसीहतें

हकीम लुकमान (रहमतुल्लाह अलैह) का नाम तो बचपन से सुनते चले आ रहे हैं, क्योंकि अल्लाह तआला ने उनके नाम से सुक़ान करीम में एक सूत नाज़िल फरमाई है। जिसकी क़यामत तक तिलावत होती रहेगी इंशाअल्लाह। लेकिन बहुत कम लोग इस बात को जानते हैं कि हज़रत लुकमान कौन थे। अल्लाह तआला ने उनके नसब, खानदान और ज़माना के बारे में तो अपने कलाम पाक में कोई ज़िक्र नहीं किया, लेकिन उनके हकीमाना अक़वाल का ज़िक्र फरमाया है। ताहम कदीम तारिख़ इस बात की गवाही देती है कि इस नाम का एक शख्स सरज़मीन अरब पर मौजूद था, लेकिन उनकी शख्सियत और नसब के बारे में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। एक रिवायत के मुताबिक वह हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के भांजे या खालाज़ाद भाई जबकि दूसरी रिवायत से हज़रत दाउद अलैहिस्सलाम का हमज़माना मालूम होता है।

अकसर तारीख़दों की राय है कि हकीम लुकमान अफ़रिकी नसल थे और अरब में उनकी आम्द बहैसियत गुलाम हुई थी। बहुत से उलमा का कहना है कि हकीम लुकमान नबी नहीं थे और न उन पर वही नाज़िल हुई। क्योंकि क़ुरान व हदीस में किसी भी जगह कोई ऐसा इशारा मौजूद नहीं है जो हकीम लुकमान के नबी या रसूल होने पर दलालत करता हो। गरज़ ये कि अल्लाह तआला ने हकीम लुकमान को नबूवत अता नहीं की मगर हिकमत व दानाई अता फरमाई।

रिवायात में आता है कि आप सूरत व शकल के एतेबार से अच्छे नहीं थे, जैसा कि मशहूर ताबई हज़रत सईद बिन मुसैयिब (रमतुल्लाह अलैह) ने एक हबशी से कहा था कि तु इस बात से दिलगीर न हो कि तु काला हबशी है, इसलिए कि हबशियों में तीन आदमी दुनिया के बेहतरीन इंसान हुए हैं। हज़रत बिलाल हबशी (रज़ियल्लाहु अन्हु), हज़रत ऊमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) का गुलाम मेहजा और हकीम लुकमान (रहमतुल्लाह अलैह)। गरज़ ये कि हकीम लुकमान के हालाते ज़िन्दगी और ज़माना में इख़ितलाफ के बावजूद पूरी दुनिया को एक मशहूर शख्सियत तसलीम करती है। जाहेलियत के चंद शोरा ने भी इनका तजक़िरा किया है।

अल्लाह तआला ने सूरह लुकमान में हज़रत लुकमान की उन कीमती नसीहतों का ज़िक्र फरमाया है जो उन्होंने अपने बेटे को मुखातब करके बयान फरमाई थीं। यह हकीमाना अक़वाल अल्लाह तआला ने इसलिए कुरान करीम में नक़ल किए हैं ताकि क़यामत तक आने वाले इंसान उनसे फायदा उठाकर अपनी ज़िन्दगी को ख़ूब से ख़ूबतर बना सकें और एक अच्छा सुआशरा वजूद में आसके।

पहली नसीहत, शिर्क से ड़ी

सबसे पहली हिकमत अक़ाएद की दुरुस्तगी के बारे में है। ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ शिर्क न करना, यकीन जानो शिर्क ब़ह बड़ा जुल्म है। यानी अल्लाह तआला ही पूरी कायनात का खालिक व मालिक व राज़िक है और उसके साथ किसी गैरुल्लाह को शरीके इबादत न करना। इस दुनिया में इससे बड़ा जुल्म नहीं हो सकता कि अल्लाह

तआला किसी मखलूक को उसके बराबर ठहराया जाए। यही वह पैगाम है जिसकी दावत तमाम अम्बिया और रसूल ने दी कि माबूदे हकीकी सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला है, वही पैदा करने वाला ही रिज़क देने वाला और पूरी दुनिया के निज़ाम को तनहा वही चलाने वाला है, उसका कोई शरीक नहीं है। हम सब उसके बन्दे हैं और हमें सिर्फ उसी की इबादत करनी चाहिए। वही मुश्किलकुशा, हाजतरवा और जरूरतों को पूरा करने वाला है।

दूसरी नसीहत, अल्लाह का इल्म हर चीज़ को मुहीत है

हकीम लुकमान की दूसरी नसीहत अपने बेटे को यह थी कि इस बात का यकीन रखा जाए कि आसमान व ज़मीन और उसके अन्दर जो कुछ है उसके एक एक ज़र्रा से अल्लाह तआला अच्छी तरह वाकिफ है, कोई चीज़ भी उससे पोशीदा नहीं है और इसपर उसकी कुदरत भी कामिल है। कोई चीज़ कितनी भी छोटी से छोटी हो जो आम नज़रों में न आसकती हो, इसी तरह कोई चीज़ कितनी ही दूर दराज़ पर हो, इसी तरह कोई चीज़ कितने ही अंधेरो और पर्दा में हो अल्लाह तआला के इल्म व नज़र से नहीं छुप सकती। गरज़ ये कि हम दुनिया के किसी भी मैदान में हों, तिजारत कर रहे हों, दरस व तदरीस की खिदमात अंजाम दे रहे हों, मुलाज़मत कर रहे हों, कौम व मिल्लत की खिदमत कर रहे हों, लेकिन हमें हमारे माँ बाप और कायनात को पैदा करने वाला हमारी ज़िन्दगी के एक एक लमहे से पूरी तरह वाकिफ है और हमें मरने के बाद उसके सामने खड़े होकर ज़िन्दगी के एक एक पल का हिसाब देना है। अगर हमने किसी से छुपकर रिश्वत ली है या किसी शख्स पर जुल्म किया है या किसी

गरीब को सताया है या किसी का हक मारा है तो मुमकिन है कि हम दुनिया वालों से बच जाएं लेकिन अल्लाह तआला की अदालत में अंधेर नहीं है और हमें इसका जरूर हिसाब देना होगा।

तीसरी नसीहत, नमाज़ पढ़ना

हकीम लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए यह भी फरमाया, बेटे नमाज़ कायम करो। नमाज़ ईमान के बाद इस्लाम का अहम तरीन रुकन है। नमाज़ खुद अहम होने के साथ वह दूसरे आमाल की दुरुस्तगी का ज़रिया भी है जैसा कि इरशाद बारी है, "जो किताब आप पर उतारी गई है उसे पढ़िए और नमाज़ कायम कीजिए, यकीनन नमाज़ बेहयाई और बुराई से रोकती है" (सूरह अलअनकबूत 45) नमाज़ में अल्लाह तआला ने यह खासियत व तासीर रखी है की वह नमाज़ी को गुनाहों और बुराईयों से रोक देती है मगर ज़रूरी है कि उसपर पाबन्दी से अमल किया जाए और नमाज़ को उन शराएत व आदाब के साथ पढ़ा जाए जो नमाज़ की क़बूलियत के लिए ज़रूरी हैं, जैसा कि हदीस में है कि एक शख्स नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में आया और कहा कि एक शख्स रातों को नमाज़ पढ़ता है मगर दिन में चोरी करता है तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसकी नमाज़ अनकरीब उसको बुरे काम से रोक देगी (मुसनद अहमद, सही इब्ने हिब्बान) लिहाज़ा हमें नमाज़ों का इहतिमाम करना चाहिए।

चौथी नसीहत, इसलाहे मुआशरा के लिए कोशिश करना

हकीम लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए आगे फरमाते हैं,

इत्मीनान व सुकून के साथ नमाज़ पढ़नी चाहिए जैसा कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ लाए, एक और साहब मस्जिद में आए और नमाज़ पढ़ी फिर (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आकर सलाम किया आप ने सलाम का जवाब दिया और फरमाया जाओ नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। वह गए और जैसे नमाज़ पहले पढ़ी थी वैसे ही नमाज़ पढ़कर आए फिर सलाम किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जाओ नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। इस तरह तीन मर्तबा हुआ। उन साहब ने अर्ज किया। उस ज़ात की कसम जिसने आपको हक के साथ भेजा है मैं इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता। आप मुझे नमाज़ सिखाएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो तकबीर कहो, फिर कुरान शरीफ में से जो कुछ पढ़ सकते हो पढ़ो फिर रुकू में जाओ तो इत्मीनान से रुकू करो फिर रुकू से खड़े हो तो इत्मीनान से खड़े हो फिर सजदा में जाओ तो इत्मीनान से सजदा करो फिर सजदा से उठो तो इत्मीनान से बैठो। यह सब काम अपनी पूरी नमाज़ में करो। (सही बुखारी)

(2) बुरे कामों से दूरी

बुरी बात और बुरे काम उसको कहते हैं जो फ़ूूल, लायानी और लाहासिल हो। यानी जिन बातों या कामों का कोई फायदा न हो। मौलाए हकीकी ने इन आयात में इरशाद फरमाया कि बुरे कामों को

और मुखातिफतों से मिलता है, इसलिए हकीम लुकमान ने इसके साथ यह भी वसीयत फरमाई कि दीन पर चलने और इसको दूसरों तक पहुचाने में जो मुश्किलात सामने आएँ उन पर सब्र करें, जैसा कि सूरह अलअसर में अल्लाह तआला जमाने की कसम खाकर इरशाद फरमाता है कि "तमाम इंसान खसारे और नुकसान में है मगर वह लोग जो अपने अन्दर चार सिफात पैदा करलें।" इमान लाएं, नेक आमाल करें, महज़ अपनी इनफेरादी इसलाह व फलाह प किनाअत न करें बल्कि उम्मत के तमाम अफराद की भी कामयाबी की फिक्र करें। दीन पर चलने और इसको दूसरों तक पहुचाने में जो मुश्किलात आएँ उन पर सब्र करें।

हकीम लुकमान की चन्द दूसरी नसीहतें आदाब-ए-स्माशरत के मुतअल्लिक

हकीम लुकमान अपने बेटे को नसीहत करते हुए फरमाते हैं- लोगों के सामने (तकब्बुर से) अपने गाल मत फैलाओ। यानी लोगों से मुलाकात और उनसे गुफ्तगू के वक़्त उनसे मुंह फेर कर बात न करो जो उनसे एराज करने और तकब्बुर करने की अलामत और अखलाके शरीफाना के खिलाफ है। अल्लाह तआला अपने नबी के मुतअल्लिक कुरान पाक (सूरह अल कलम 4) में इरशाद फरमाता है "और यकीनन तुम अखलाक के आला दर्जा पर हो।" हज़रत आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाक के मुतअल्लिक सवाल किया गया तो हज़रत आइशा ने फरमाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अखलाक कुरानी तालीमात के ऐन मुताबिक था (सही बुखारी व सही मुस्लिम)। हज़ूर

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुझे बेहतरीन अखलाक की तकमील के लिए भेजा गया है (मुसनद अहमद) गरज़ ये कि हकीम लुक़मान की अपने बेटे की नसीहत को अल्लाह तआला ने कुरान करीम में ज़िक्र करके पूरी इंसानियत को यह पैगाम दिया कि तमाम इंसानों के साथ अच्छे अखलाक पेश करने चाहिए। और साथ में यह भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो बन्दा दरगुजर करता है अल्लाह तआला उसकी इज्ज़त बढ़ाता है और जो बन्दा अल्लाह के लिए आजज़ी इख्तियार करता है अल्लाह तआला उसका दर्जा बुलंद करता है। (सही मुस्लिम)

हकीम लुक़मान अपने बेटे को नसीहत करते हुए फरमाते हैं कि ज़मीन पर इतराते हुए मत चलो। यानी ज़मीन को अल्लाह तआला ने सारे अनासिर से पस्त उफतादा बनाया है, तुम इसी से पैदा हुए, इसी पर चलते फिरते हो, अपनी हकीकत को पहचानो, इतराकर न चलो जो काफ़िरों का तरीक़ा है, इसके बाद अल्लाह तआला फरमाता है यकीन जानो अल्लाह किसी इतराने वाले शैखी बाज़ को पसंद नहीं करता। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स के दिल में ज़रूरी बराबर भी तकब्बुर होगा वह जन्नत में नहीं जाएगा। एक शख्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आदमी चाहता है कि उसका कपड़ा अच्छा हो और जूता अच्छा हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला जमील है, जमाल को पसंद करता है। क़िन्न और गुरुर तो हक़ नाहक करना और लोगों को छोटा समझना है। (मुस्लिम किताब अल इमान, बाब तहरीम अलकबीर) यानी अपनी वुसअत के मुताबिक़ अच्छा कपड़ा पहनना

पुश्त को दागा जाएगा और उससे यह कहा जाएगा कि यह है वह खज़ाना जो तुमने अपने लिए जमा किया था। आज तुम इस खज़ाने का मज़ा चखो जो तुमने अपने लिए जमा कर रहे थे। अल्लाह तआला हम सबको इस अंजामे बद से महफूज़ फरमाए, आमीन। बाज़ मुफस्सेरीन ने इस आयत से मुराद तजकिया नफस लिया है यानी वह ईमान वाले अपने आप को बुरे आमाल और अखलाक से पाक साफ करते हैं।

(4) शर्मगाहों की हिफाज़त

अल्लाह तआला ने जिंसी ख्वाहिशात की तकमील का एक जाएज़ तरीका यानी निकाह मशरूआ किया है। इंसान की कामयाबी के लिए अल्लाह तआला ने एक शर्त यह भी रखी है कि हम जाएज़ तरीका के अलावा अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें। इस आयत के आखिर में अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया यानी मियां बीवी का एक दूसरे से शहवते नफस को तसकीन देना काबिले मलामत नहीं बल्कि इंसान की जरूरत है लेकिन जाएज़ तरीका के अलावा कोई भी सूरत शहवत पूरी करने की जाएज़ नहीं है जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया यानी जाएज़ तरीके के मानी में वह कोई और तरीका इख्तियार करना चाहें तो ऐसे लोग हद से ख़ुदरे हुए हैं। अल्लाह तआला ने ज़िना के करीब भी जाने को मना फरमाया है, "ज़िना के करीब भी मत जाओ इसलिए कि वह बुरा है और बुरा ठिकाना है" (सूरह अलअसरा आयत 32) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "आंख भी ज़िना करती है और उसका ज़िना नज़र है" आज रोज़मर्रा की जिंदगी में मर्द और औरत का

पर इतराकर चलने से मना किया गया है।" तीसरा "दरमयानी रफतार से चलने की हिदायत दी गई।" और चौथा "बहुत ज़ोर से शोर मचाकर बोलने से मना किया गया है।" इन तमाम ही नसीहतों का खुलासा यह है कि हर वक्त हम दूसरों का खयाल रखें, किसी शख्स को भी चाहे वह मुसलमान हो या काफिर हम उसको जानते हों या न जानते हों लेकिन हमारी तरफ से कोई तकलीफ किसी भी इंसान को नहीं पहुंचनी चाहिए। मगर हम इन उमूर में कोताही से काम लेते हैं, हालांकि इन उमूर का तअल्लूक हुक्कुल इबाद से है और हुक्कुल इबाद में हक तलफी इंसान के बड़े बड़े नेक आमाल को खत्म कर देगी। लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम हकीम जुल्मान (रहमतुल्लाह अलैह) की इन कीमती नसीहतों पर अमल करके एक अच्छे मुआशारा की तशकील दें।

और हम ख़्वा़र हुए तारिके कुरान हो कर

कुरान क्या है?

कुरान करीम अल्लाह तआला का पाक कलाम है, जो अल्लाह तआला ने क़यामत तक आने वाले इंसान व जिन्नात की रहनुमाई के लिए आखरी नबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वही के जरिया अरबी ज़बान में 23 साल के अरसा में नज़िल फरमाया। कुरान करीम अल्लाह तआला की सिफ़त है, मखलूक नहीं और वह लौहे महफूज़ में हमेशा से है।

कुरान के नुज़ूल का मकसद?

अल्लाह तआला ने कुरान करीम को क़यामत तक आने वाले इंसानों की हिदायत के लिए नाज़िल फरमाया है मगर अल्लाह तआला से डरने वाले ही इस किताब से फायदा उठाते हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "यह किताब ऐसी है कि इसमें कोई शक नहीं, यह हिदायत है (अल्लाह से) डर रखने वालों के लिए।" (सूरह अलबकरा आयत 2)

कुरान करीम किस तरह और कब नाज़िल हुआ?

रमज़ान के महीने की एक बाबरकत रात "लैलतुल क़दर" में अल्लाह तआला ने लौहे महफूज़ से आसमने दुनिया (ज़मीन से करीब वाला आसमान) पर कुरान करीम नाज़िल फरमाया और इसके बाद हस्बे ज़रूरत थोड़ा-थोड़ा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होता रहा और लगभग 23 साल के अरसा में कुरान करीम मुकम्मल नाज़िल हुआ। कुरान करीम का तदरीजी नुज़ूल उस वक़्त

(6) अहद व पैमान पूरा करना

अहद एक तो मुआहिदा है जो दो तरफ से किसी मामलों में लाजिम करार दिया जाए। इसका पूरा करना ज़रूरी है। दूसरा वह जिसको वादा कहते हैं यानी कोई शख्स किसी शख्स से कोई चीज़ देने काया किसी काम के करने का वादा कर ले उसका पूरा करना भी शरअन ज़रूरी हो जाता है। गरज़ ये कि अगर हम किसी शख्स से कोई अहद व पैमान कर लें तो उसको पूरा करें।

(7) नमाज़ की पाबंदी

कामयाब होने वाले वह हैं जो अपनी नमाज़ों की भी पूरी निगरानी रखते हैं यानी पांचों नमाज़ों को उनके अवकात पर इहतिमाम के साथ पढ़ते हैं। नमाज़ में अल्लाह तआला ने यह खासियत व तासीर रखी है कि वह नमाज़ी को गुनाहों और बुराईयों से रोक देती है मगर ज़रूरी है कि उस पर पाबंदी से अमल किया जाए और नमाज़ को उन शराएत व आदाब के साथ पढ़ा जाए जो नमाज़ की कबूलियत के लिए ज़रूरी है जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया "नमाज़ कायम कीजिए, यकीनन नमाज़ बेहयाई और बुराई से रोकती है।" (सूरह अनकबूत आयत 45) इसी तरह हदीस में है कि एक शख्स नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में आया और कहा कि एक शख्स रातों को नमाज़ पढ़ता है मगर दिन में चोरी करता है तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसकी नमाज़ अंकरीब उसको बुरे काम से रोक देगी। (मुसनद, सही इब्ने हिब्बान)

यह बात काबिले जिक्र है कि अल्लाह तआला ने इंसान की कामयाबी

नुजूल के वक्त जल्दी जल्दी अल्फाज़ दोहराने की जरूरत नहीं है बल्कि अल्लाह तआला खुद आप में ऐसा हाफ़ज़ा पैदा फरमा देगा कि एक मर्तबा नुजूल वही के बाद आप उसे भुल नहीं सकेंगे। इस तरह हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले हाफ़िज़े कुरान हैं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा-ए-कराम को कुरान के माना की तालीम ही नहीं देते थे बल्कि उसके अल्फाज़ भी याद कराते थे। खुद सहाबा-ए-कराम को कुरान करीम याद करने का इतना शौक था कि हर शख्स एक दूसरे से आगे बढ़ने की फिज़्र में रहता था। चुनांचे हमेशा सहाबा-ए-कराम में एक अच्छी खासी जमाअत ऐसी रहती जो नाजिलशुदा कुरान की आयात को याद कर लेती और रातों को नमाज़ में उसे दोहराती थी। गरज़ कि कुक्कान की हिफाज़त के लिए सबसे पहले हिफ़ज़े कुरान पर जोर दिया गया और उस वक्त के लिहाज़ से यही तरीका ज्यादा महफूज़ और काबिले एतेमाद था।

कुरान करीम की हिफाज़त के लिए हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान करीम को लिखवाने का भी खास इहतिमांम फरमाया चुनांचे नुजूल वही के बाद आप कातेबीने वही को लिखवा दिया करते थे। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामूल यह था कि जब कुरान करीम का कोई हिस्सा नाजिल होता तो आप कातिबे वही को यह हिदायत भी फरमाते थे कि इसे फ्लाँ सूरत में फ्लाँ आयात के बाद लिखा जाए। उस ज़माने में कागज़ नहीं होता था इसलिए यह कुरानी आयात ज्यादातर पत्थर की सिलों, चमड़े के पारचों, खजूर की शाखों, बांस के टुकड़ों, पेड़ के पत्तों और जानवरों की हड्डियों पर लिखी जाती थीं। कातेबीने वही में हज़रत जैद बि

साबित, खुल खुलफाए राशेदीन, हज़रत ओबय बिन काब, हज़रत जुबैर बिन अय्वाम और हज़रत मुआविया (रज़ी अल्लाहु अन्हुम) के नाम खास तौर पर जिक्र किए जाते हैं।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के ज़माने में जितने कुरान करीम के नुसखे लिखे गए थे वह अमूमन मुख्तलिफ चीज़ों पर लिखे हुए थे। हज़रत अबु बकर सिद्दीक (रज़ी अल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में जब जंगे यमामा के दौरान हुफ्फाज़े कुरान की एक बड़ी जमात शहीद हो गई तो हज़रत उमर फारुक (रज़ी अल्लाहु अन्हु) ने हज़रत अबु बकर सिद्दीक (रज़ी अल्लाहु अन्हु) को कुरान करीम एक जगह जमा करवाने का मशविरा दिया। हज़रत अबु बकर सिद्दीक (रज़ी अल्लाहु अन्हु) शुरू में इस काम के लिए तैयार नहीं थे लेकिन शरहे सद्र के बाद वह भी इस अज़ीम काम के लिए तैयार हो गए और कातिबे वही हज़रत जैद बिन साबित को इस अहम व अज़ीम अमल का जिम्मेदार बनाया। इस तरह कुरान करीम को एक जगह जमा करने का अहम काम शुरू हो गया।

हज़रत जैद बिन साबित खुद कातिबे वही होने के साथ पूरे कुरान करीम के हाफिज़ थे। वह अपनी याददाशत से भी पूरा कुरान लिख सकते थे, उनके अलावा उस वक्त सैकड़ों हुफ्फाज़े कुरान मौजूद थे मगर उन्होंने एहतियात के पेशेनज़र सिर्फ एक तरीका पर बस नहीं किया बल्कि उन तमाम ज़राए से बयकवक्त काम लेकर उस वक्त तक कोई आयत अपने सहीफे में दर्ज नहीं की जब तक उसके मोतवातिर होने की तहरीरी और ज़बानी शहादतें नहीं मिल गईं।

सूरह अल असर की मुख्तसर तफ़्सीर

“क़सम है ज़माने की कि हर इंसान बड़े ख़सारे में है, मगर वो लोग जो ईमान लाए और नेक काम किये और आपस में ताकीद करते रहे सच्चे दीन की और आपस में ताकीद करते रहे सबर व तहम्मूल की”

सूरह अल असर की खास फ़ज़ीलत

यह कुरान करीम की बहुत ही मुख्तसर सूरात है जिसमें सिर्फ़ तीन आयात हैं, लेकिन ऐसी जामे है कि बक़ौल हज़रत इमाम शाफई (रहमतुल्लाह अलैह) कि अगर लोग इस सूरात को ग़ौर व फ़िक्र और तदब्बुर कि साथ पढ़ लें तो दीन व दुनिया की दुरुस्तगी कि लिए काफी हो जाये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि सहाबा किराम में से दो शख़श आपस में मिलते तो उस वक़्त जुदा न होते जबतक उनमें से एक दूसरे को सूरह अल असर न पढ़ लें। (तबरानी)

इस सूरात में अल्लाह तआला ने अल असर की क़सम खाई है, जिससे मुराद ज़माना है, कियोंकि इंसान कि तमाम हालात, उसकी नशु व नुमा, उसकी हरकात व सकनात, आमाल और इख़लाक सब ज़माने के लैल व नहार में ही होंगे।

जहाँ तक क़सम का तअल्लुक है अल्लाह तआला के कलाम में क़सम कि बग़ैर भी कोई शक व शुबहा की कोई गुंजाइश नहीं है, लेकिन अल्लाह तआला बन्दों पर रहम फरमा कर किसी हुकुम की ताकीद और उसकी अहमियत की वजह से क़सम खा कर कोई हुकुम बन्दों को करता है, ताकि बन्दे इस हुकुम की अहमियत को समझ कर उस

चंद ऐसे नुसखे तैयार करें जिनमें सूरतें भी मुरत्तब हों। चुनांचे कुरान करीम के चंद नुसखे तैयार हुए और उनको मुख्तलिफ जगहों पर भेज दिया गया ताकि इसी के मुताबिक नुसखे तैयार करके तकसीम कर दिए जाएं। इस तरह उम्मत मुस्लिमा में इख्तिलाफ बाकी न रहा और पूरी उम्मत मुस्लिमा इसी नुसखे के मुताबिक कुरान करीम पढ़ने लगी। बाद में लोगों की सहूलत के लिए कुरान करीम पर नुकते व हरकात (यानी ज़बर, जेर और पेश) भी लगाए गए और बच्चों को पढ़ाने की सहूलत के मद्देनज़र कुरान करीम को तीस पारों में तकसीम किया गया। नमाज़ में तिलावत कुरान की सहूलत के लिए रूक की तरतीब भी रखी गई।

कुरान करीम का हमारे ऊपर क्या हक है?

(1) "तिलावते कुरान" अहादीस में तिलावते कुरान की बड़ी फज़ीलत लिखी हुई है, चुनांचे हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद (रज़ी अल्लाहु अन्हु) की रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जिसने कुरान पाक का एक हर्फ पढ़ा उसके लिए एक नेकी है और एक नेकी दस नेकियों के बराबर होती है। मैं यह नहीं कहता कि अलिफ लाम मीम एक हर्फ है बल्कि अलिफ एक हर्फ है, लाम एक हर्फ है और मीम एक हर्फ है।(तिर्मीज़ी)

(2) "हिफ़ज़े कुरान" हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क़यामत के दिन साहिबे कुरान से कहा जाएगा कि कुरान पढ़ता जा और जन्नत के दज़ पर चढ़ता जा और ठहर ठहर कर पढ़ जैसा कि तु

दुनिया में ठहर ठहर कर पढ़ता था। और तेरा मर्तबा वही है जंहा आखरी आयत पर पहुंचे। (सही मुस्लिम)

(3) **“कुरान फहमी”** चूंकि कुरान करीम के नुज़ूल का एक अहम मकसद बनी नौए इंसान की हिदायत है और अगर समझे बेगैर कुरान पढ़ा जाएगा तो इसका अहम मकसद ही खत्म हो जाता है। लिहाजा हमें चाहिए कि हम उलमा जिन्होंने कुरान व हदीस को समझने और समझाने में अपनी जिन्दगी का कीमती हिस्सा लगाया, उनकी सरपरस्ती में कुरान करीम को समझ कर पढ़ें। कुरान व हदीस की रौशनी में यह बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह है कि जिसज़ात आली पर कुरान करीम नाजिल हुआ उसके अकवाल व अफआल के बेगैर कुरान करीम को कैसे समझा जा सकता है? खुद अल्लाह तआला ने कुरान करीम में जगह जगह इस हकीकत को ब्यान फरमाया है, **“यह किताब हमने आप की तरफ उतारी है ताकि लोगों की जानिब जो हुकुम नाजिल फरमाया गया है, आप उसे खोल खोल कर बयान करदें, शायद कि वह गौर व फि़र करें”** (सूरह अल नहल 44)। लिहाज़ा हम रोज़ाना तिलावते कुरान के एहतिमाम के साथ साथ कम से कम उलमा और अइम्मा मसाजिद के दरसे कुरान में पाबंदी से शरीक हों।

(4) **“अल-अम्ल बिल कुरान”** यह कुरान करीम में अल्लाह तआला की दी हुई हिदायत की ततबीक है और इसी बनी नौए इंसानी की दुनियावी व उखरवी सआदत पोशिदा है, और नुज़ूले कुरान की गायत है। अगर हम कुरान करीम के अहकाम पर अमल पैरा नहीं हैं तो

इस्लाह के मुतअल्लिक और दूसरे हिस्से दूसरों की हिदायत व इस्लाह से मुतअल्लिक हैं यानी हम अपनी ज़ात से भी अल्लाह के अहकामात और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात के मुताबिक बजालाएँ और साथ में यह कोशिश और फि़क़्र करें कि मेरी अवलाद, मेरे रिश्तेदार और मेरे पड़ोसी सब अल्लाहकी मर्जी के मुताबिक इस दुनियावी फानी ज़िंदगी को गुज़ारने वाले बनें ताकि हम सब बड़े खसारे से बच कर हमेशा हमेशा की कामयाबी हासिल करने वाले बन जाएं।

अब हर शख्स अपनी ज़िंदगी का जाइज़ा ले कि उसके अंदर यह चार अवसाफ मौजूद हैं या नहीं। कु़न करीम के इस वाज़ेह एलान से मालूम हुआ कि अगर यह चार अवसाफ या इन में से कोई एक वसफ भी हमारे अंदर मौजूद नहीं हैं तो हम दुनिया व अखिरत में नाकामी और बड़े खसारे की तरफ जा रहे हैं।

लिहाज़ा अब भी वक़्त है मौत कब आ जाए किसी को नहीं मालूम, हम सब यह इरादा कर लें कि दुनिया व अखिरत की कामयाबी हासिल करने और बड़े खसारे से बचने के लिए यह चार अवसाफ अपनी ज़िंदगी में आज, बल्कि अभी से लाने की मुख़तिसाना कोशिश करेंगे। अल्लाह हम सबको ज़िंदगी के बाकी दिन इन चार अवसाफसे मुत्तसिफ हो कर गुज़ारने वाला बनाए। आमीन

हदीस की हुज्जियत

हदीस की तारीफ

उस कलाम को हदीस कहा जाता है जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल या अमल या किसी सहाबी के अमल पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुकूत या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफात में से किसी सिफत का ज़िक्र किया गया हो। हदीस के दो अहम हिस्से होते हैं:

(सनद) जिन वास्तों से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कौल या अमल या तकरीर या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई सिफत उम्मत तक पहुंची हो।

(मतन) वो कलाम जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल या अमल या तकरीर या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई सिफत ज़िक्र की गयी हो।

मिसाल के तौर पर "फलां शख्स ने फलां शख्स से और उन्होंने हज़रत उमर से रिवायत किया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया" ये हदीस की सनद है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ये फरमान कि "आमाल का दार व मदार नियत पर है" ये हदीस का मतन है।

हुज्जियत का मतलब हुज्जीयत का मतलब इस्तिदाल (किसी हुकुम का साबित करना) करने के हैं, यानी कुरान की तरह हदीसे नबवी से भी अक्लाएद व अहकाम व फज़ाइले आमाल साबित होते हैं, अलबत्ता इसका दर्जा कुरान करीम के बाद है, जिस तरह ईमान के मामले में अल्लाह और उसके रसूल के दरमियान फ़र्क़ नहीं किया जा सकता है

कि एक को माना जाए और दूसरे को न माना जाए, ठीक इसी तरह कलामुल्लाह और कलामे रसूल के दरमियान तफरीक की कोई गुंजाइश नहीं है कि एक को वाजिबुल इताअत माना जाए और दूसरे को न माना जाए, क्योंकि इन दोनों में से किसी एक के इंकारपर दूसरे का इंकार खुद बखुद लाज़िम आएगा, खुदाई गैरत गवारा नहीं करती कि उसके कलाम को तसलीम करने का दावा किया जाए मगर उसके नबी के कलाम को तसलीम न किया जाए, अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में साफ साफ बयान फरमा दिया **पस ऐ नबी यह लोग आपके कलाम को नहीं ठुकराते बल्कि यह ज़ालिम अल्लाह की आयतों के मुंकिर हैं** (सूरह इनाम 33) गरज़ ये कि कुरान करीम पर ईमान और उसके मुताबिक़ अमल करने की तरह अहादीसे नबविया पर ईमान लाना और उनके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना ईमान की तकमील के लिए ज़रूरी है, क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको यह ओहदा दिया है कि आपकी ज़बाने मुबारक से जिस चीज़ की हिल्लत का एलान हो गया वह हलाल है और जिसको आप सल्लल्लह अलैहि वसल्लम ने हराम फरमा दिया वह हराम है, नीज़ अल्लाह तआला ने वाज़ेह तौर पर अपने पाक कलाम में बयान फरमा दिया कि कुरान करीम के पहले मुफस्सीर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जिनकी इताअत क़यामत तक आने वाले हर इंसान के लिए लाज़िम और ज़रूरी है और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम की इताअत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना ही तो है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल हमें हदीस के ज़खीरे में ही तो मिलते हैं।

(2) तुझपर से तेरा बोझ हमने उतार दिया- जिसने तेरी पीठ बोझल कर दी थी। यानी मनसबे रिसालत की ज़िम्मेदारियों को महसूस करके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर गेरानी गुज़रती होगी वह दूर कर दी गई। या "बोझ" से वह जाएज़ उमूर मुराद हैं जो घड़ी घड़ी आप करीने हिकमत व सवाब समझ कर लेते थे और बाद में इनका खिलाफे हिकमत या खिलाफे अवला होना जाहिर होता था और आप बवजह उलूवे शान और गायते कुरुब के इससे ऐसे मगमूम होते थे जिस तरह कोई गुनाह से मगमूम होता है तो इस आयत में मुवाखज़ा न होने की बशारत दी गई। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अगले पिछले सारे गुनाह माफ़ फरमा दिए थे। नबूवत से पहले 40 साला जिन्दगी में भी अल्लाह ने आपको गुनाहों से महफूज़ रखा था।

(3) और हमने तेरा ज़िक्र बुलंद कर दिया- हज़रत मुजाहिद (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं यानी जहां मेरा (अल्लाह का) ज़िक्र किया जाएगा वहां तेरा (नबी का) भी ज़िक्र किया जाएगा। जैसे "मैं गवाही देता हूं कि नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह कि और मैं गवाही देता हूं कि मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।" हज़रत क़तादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि दुनिया और आखिरत में अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र बुलंद किया, कोई खतीब, कोई नसीहत करने वाला, कोई कलमा पढ़ने वाला, कोई आज्ञान देने वाला, कोई नमाज़ी ऐसा नहीं जो अल्लाह की वहदानियत के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का कलमा न

कि अल्लाह तआला की इताअत के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत भी ज़रूरी है और अल्लाह तआला की इताअत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत के बेगैर मुमकिन नहीं है, अल्लाह तआला ने हमें रसूल की इताअत का हुकुम दिया और रसूल की इताअत जिन वास्ते से हम तक पहुंची है यानी अहादीस का ज़खीरा अगर उन पर हम शक व शुबहा करें तो गोया हम कुरान करीम की सैकड़ों आयात के मुंकिर हैं या ज़बाने हाल से यह कह रहे हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसी चीज़ का हुकुम दिया यानी इताअते रसूल का जो हमारे इख्तियार में नहीं है।

इसी तरह अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत को इताअते इलाही करार देते हुए फरमाया “जिसने रसूल की इताअत की उसने दरअसल अल्लाह तआला की इताअत की।” (सूरह निसा 80)

इस आयत में अल्लाह तआला ने इताअते रसूल को हुब्बे इलाही का मेयार करार दिया, यानी अल्लाह तआला से मोहब्बत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत में है, चुनांचे अल्लाह तआला का इरशाद है “ऐ नबी लोगों से कह दें कि अगर तुम हकीकत में अल्लाह तआला से मोहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी इख्तियार करो, अल्लाह तुमसे मोहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फरमाएगा”। (सूरह आले इमरान 31)

“जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करेगा उसे अल्लाह तआला ऐसी जन्नतों में दाखिल फरमाएगा जिनके नीचे नहे बहती होंगी और इन बागों में वह हमेशा रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की

नाफरमानी करेगा और उसकी मुर्कर हदों से आगे निकलेगा, उसे जहन्नम में डाल देगा जिसमें वह हमेशा रहेगा, ऐसी ही के लि रुसवाकुन अज़ाब है।" (सूरह निसा 13, 14)

गरज़ ये कि अल्लाह और उसके रसूल की इताअत न करने वालों का ठिकाना जहन्नम है।

"जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करेगा उसे अल्लाह तआला ऐसी जन्नतों में दाखिल फरमाएगा जिनके नीचे नहें बहती होगी, और जो मुंह फेरेगा उसे दर्दनाक अज़ाब देगा (सूरह फतह 17)

इन दो आयत में अल्लाह तआला ने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत पर हमेशा हमेशा की जन्नत और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफरमानी पर हमेशा हमेशा के अज़ाब का फैसला फरमाया है।

"जो लोग अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करेंगे वह उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह तआला ने इनाम नाज़िल फरमाया है, यानी अम्बिया, सिद्दीकीन, शोहदा और सालेहीन, कैसे अच्छे हैं यह रफीक़ जो किसी को मुयस्सर आए" (सूरह निसा 69)

इस आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करने वालों का हशर अम्बिया, सिद्दीकीन, शोहदा और नेक लोगो के साथ होगा।

"किसी मोमिन मर्द व मोमिना औरत को यह हक़ नहीं है कि जब अल्लाह और उसके रसूल किसी मामले का फैसला कर दें तो फिर उसे इस मामले में खुद फैसला करने का इख़्तियार हासिल है और

आयतुल कुर्सी

“अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लाएक नहीं, जिंदा है (जिस को कभी मौत नहीं आ सकती) (सारी दुनिया को) संभालने वाला है। न उसे ऊँघ आती है और न नींद, उसकी मिलकियत में जमीन व आसमान की तमाम चीजें हैं। कौन शख्स है जो उसकी इजाज़त के बगैर उसके सामने शिफारिश कर सके। वह जानता है उन (कायनात) के तमाम हाजिर व गायब हालात को। वह (कायनात) उसकी मंशा के बगैर किसी चीज़ के इल्म का इहाता नहीं कर सकते, उसकी कुर्सी की कुशादगी ने जमीन व आसमान को घेर रखा है। अल्लाह तआला को उन (जमीन व आसमान) की हिफाजत कुछ भारी नहीं गुजरती। वह बहुत बुलंद और बहुत बड़ा है।”

यह सूरह अल बकरा की आयत न. 255 है। जो बड़ी अज़मत वाली आयत है। इस आयत में अल्लाह तआला की तौहीद और कुछ अहम सिफात का जिक्र है। इस आयत में अल्लाह तआला की कुर्सी का भी जिक्र आया है, जिसकी वजह से इस आयत को आयतुल कुर्सी कहा जाता है। आयतुल कुर्सी की फजीलत में बहुत सी हदीसें, हदीस की किताबों में आई हैं। लेकिन इख्तिसार के मद्देनजर यहां सिर्फ़ द चं अहम फजिलतें जिक्र कर रहा हूँ। जिनके सही होने पर तमाम उलमा-ए-उम्मत मुत्तफिक हैं।

सब से ज्यादा अज़मत वाली आयत

हज़रत ओबय बिन काब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

“रसूल उम्मी उनको नेकियों का हुकुम देते हैं और बुराइयों से रोकते हैं और पाकिज़ा चीज़ों को उनके लिए हलाल करार देते हैं और गन्दी चीज़ को उन पर हराम करार देते हैं” (सूरह आराफ 157)

इस आयत में अल्लाह तआला ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हलाल करार देने वाला और हराम करार देने वाला बताया है, गरज़ ये कि अल्लाह तआला ने आपको यह ओहदा दिया कि आपकी ज़बाने मुबारक से जिस चीज़ के हलाल का एलान हो गया वह हलाल है और जिसको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हराम फरमा दिया वह हराम है।

“यकीनन तुम्हारे लिए रसूलल्लाह में उमदा नमूना मौजूद है, हर उस शख्स के लिए जो अल्लाह तआला की और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है और कसरत के साथ अल्लाह को याद करता है” (सूरह अहज़ाब 21)

यानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी जो अहादीस के ज़खीरा की शकल में हमारे पास महफूज़ है कल क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए बेहतरीन नमूना है कि हम अपनी ज़िन्दगियाँ इसी नमूना के मुताबिक़ गुज़ारें।

इस आयत में हमें रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुखालिफ़त करने वालों को अल्लाह जहन्नम की सज़ा सुनाते हुए फरमाता है “जो शख्स रसूल की मुखालफ़त करे और अहले ईमान की रविश के सिवा किसी और के रास्ते पर चले जबकि हिदायत इस पर वाज़ेह हो चुकी है तो इसको हम इसी तरफ़ चलाएंगे जिधर वह फिर गया और उसे जहन्नम में झोंकेंगे जो बदतरिनी ठिकाना है” (सूरह निसा 115)

गरज़ ये कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बहुत सी जगहों पर यह बात बतलाई है कि अल्लाह तआला की इताअत के साथ रसूल की इताअत भी ज़रूरी है यानी अल्लाह तआला की इताअत रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत के बेगैर मुमकिन नहीं है, अल्लाह तआला ने हमें रसूल की इताअत का हुकुम दिया और रसूल की इताअत जिन वास्तों से हम तक पहुँची है यानी अहादीस का ज़खीरा उनपर अगर हम शक व शूबहा करने लगे तो हम कुरान करीम की इन मज़कूरा तमाम आयात के मुंकिर या ज़बाने हाल से यह कह रहे हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसी किसी चीज़ का हुकुम दिया है यानी इताअते रसूल जो हमारे इख्तियार में नहीं है।

हुज्जीयते हदीस नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल से

सारे अम्बिया के सरदार व आखिरी नबी हज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी कुरान करीम के साथ सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा को ज़रूरी करार दिया है, हदीस की तकरीबन हर किताब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात तवातुर के साथ मौजूद हैं, इनमें से सिर्फ़ तीन अहादीस पेशे खिदमत हैं।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने अल्लाह की नाफरमानी की। (बुखारी व मुस्लिम)

अपनी सही में और इमाम नसई ने अमुल्ल यौमे वल्लैले में यह हदीस जिक्र की है, इस हदीस की सनद शर्त बुखारी पर है)

शयातीन व जिन्नात से हिफाज़त

हज़रत अबु हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि मैं रमज़ान में वसूल की गई ज़कात के माल पर पहरा दे रहा था, एक आने वाला आया और समेट समेट कर अपनी चादर में जमा करने लगा। हज़रत अबु हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उसको ऐसा करने से बार बार मना फरमाया। उस आने वाले ने कहा कि मुझे यह करने दो, मैं तुझे ऐसे कलेमात सिखाऊंगा कि रात को बिस्तर में जा कर उन को पढ़ लेना तो अल्लाह की तरफ से तुझ पर हाफिज़ मुकरर होगा और सुबह तक शैतान तेरे करीब भी न आ सकेगा और वह आयतुल कुर्सी है। जब हज़रत अबु हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह वाक्या सुनाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसने सच कहा मगर वह खुद झुठा है और शैतान है। (सही बुखारी, किताबुल वकालह)

हज़रत ओबय बिन काब (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि मेरे पास कुछ खजुरें थीं जो रोज़ाना घट रही थीं, एक रात मैंने पहरा दिया। मैंने देखा कि एक जानवर मिस्ले जवान लड़के के आया, मैंने उसको सलाम किया, उसने मेरे सलाम का जवाब दिया, मैंने उससे पूछा कि तु इंसान है या जिन्नात? उसने कहा मैं जिन्नात हूँ। मैंने कहा कि ज़रा अपना हाथ दो, उसने अपना हाथ बढ़ा दिया, मैंने अपने हाथ में ले लिया तो कुत्ते जैसा हाथ था और उसपर कुत्ते जैसे बाल भी थे, मैंने पूछा तुम यहां क्यों आए हो? उसने कहा कि तुम सदका को

(1) **वही गैर मतलब** - वह वही जिसकी तिलवात नहीं की जाती है यानी सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसके अल्फ़ाज़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हैं, अलबत्ता बात अल्लाह तआला की है।

बाज़ हज़रात कुरान करीम की चंद आयात मसलन **"तिबयानन निकुल्ले शैय"** (सूरह नहल 89) और **"तफसीलन निकुल्ले शैय"** (सूरह इनाम 154) से गलत मफहूम ले कर यह बयान करने की कोशिश करते हैं कि कुरान करीम में हर मसअला का हल है और कुरान करीम को समझने के लिए हदीस की कोई खास ज़रूरत नहीं है, हालांकि हदीसे रसूल भी कुरान करीम की तरह शरीअते इस्लामिया में कतई दलील और हुज्जत है, जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में बहुत सी जगहों पर पूरी वज़ाहत के साथ ज़िक्र किया है यानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल व अमल से भी अहकामे शरीया साबित होते हैं।

कुरान करीम में उमूमन अहकाम की तफसील मज़कूर नहीं है, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुकुम के मुताबिक अपने अक़वाल व आमाल से इन मुजमल अहकाम की तफसील बयान की है, इसी लिए तो अल्लाह तआला नबी व रसूल को भेजता है कि वह अल्लाह तआला के अहकाम अपने अक़वाल व आमाल से उम्मतियों के लिए बयान करें, मसलन अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बेशुमार जगह पर नमाज़ पढ़ने, रूकू और सजदे करने का हुकुम दिया है, लेकिन नमाज़ की तफसील कुरान करीम में मज़कूर नहीं है कि एक दिन में कितनी नमाज़ अदा करनी है? क़याम या रूकू या सजदा कैसे किया जाएगा और कब किया जाएगा

और उसमें क्या पढ़ा जाएगा? एक वक़्त में कितनी रिकात अदा करनी है?

इसी तरह कुरान करीम में ज़कात की अदाएगी का तो हुकुम है, लेकिन तफ़सीलात मज़कूर नहीं है कि ज़कात की अदाएगी रोज़ाना करनी है या साल भर में या पांच साल में या ज़िन्दगी में एक मरतबा? फिर यह ज़कात किस हिसाब से दी जाएगी? किस माल पर ज़कात वाजिब है और इसके लिए क्या क्या शरायत हैं?

गरज़ ये कि अगर हदीस की हुज्जीयत पर शक करें तो कुरान करीम की वह सैंकड़ों आयात जिनमें नमाज़ पढ़ने, रूक करने या सजदा करने का हुकुम है या ज़कात की अदाएगी का हुकुम है वह सब अल्लाह की पनाह बेमानी हो जाएंगी।

इसी तरह कुरान करीम (सूरह माइदा 38) में हुकुम है कि चोरी करने वाले मर्द और औरत के हाथ को काट दिया जाए, अब सवाल पैदा होता है कि दोनों हाथ काटें या एक हाथ? और अगर एक हाथ कटें तो दाहिना काटे या बायां? फिर उसे काटें तो कहाँ से? बाल से या कोहनी से? या कलाई से? या उनके बीच में किसी जगह से? फिर कितने माल की कीमत की चोरी पर हाथ काटें? इस मसअला की वज़ाहत हदीस में ही मिलती है, मालूम हुआ कि कुरान करीम हदीस के बेग़ैर नहीं समझा जा सकता है।

इसी तरह कुरान करीम (सूरह जुमा) में यह इरशाद है कि जब जुमा के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो और खरीद व फरोख्त छोड़ दो, सवाल यह है कि जुमा का दिन कौन सा है? यह अज़ान कब दी जाए? उसके अल्फ़ाज़ क्या हों? जुमा की नमाज़ कब अदा की जाए? उसको कैसे पढ़ें? खरीद व फरोख्त की

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि इन दोनों आयतों में अल्लाह तआला का इसमें आज़म है। एक तो आयतल कुर्सी और दूसरी आयत अलीफ लामीम अल्लाहु ता इलाह अखीर तक। (मसनद अहमद 6, 461, अबु दाउद, किताबुल वितिर बाबुदुआ, 1496, तिर्मीज़ी, किताबुद्दावात, बाबफीइजाबिदुआ ब तकदीमिलहमद 3478, इबन माजा, किताबुदुआ, बाब इस्मुल्लाहिल आज़म 3855)

हज़रत अबु ओमामा अलबाहिली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि इसमें आज़म जिस नाम की बरकत से जो दुआ अल्लाह तआला से मांगी जाए वह कुबूल फरमाता है, वह तीन सूरतों में है सूह अलबकरा, सूह आले इमरान और सूह ताहा। (इबने माजा, किताबूद्दूआ, बाब इसमिल्लाहिल आज़म 3855)

वज़ाहत- सूह अलबकरा में आयत नं. 255, सूह आले इमरान में आयत नं. 12 और सूह ताहा में आयत नं. 111 है।

आयतल कुर्सी चौथाई कुरान

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आयतल कुर्सी को चौथाई कुरान कहा है। (मसनद अहमद 3/221, तिर्मीज़ी किताबुलफजाएल अलकारन, बाब माजाफी इज़ाजुलजलत 2895)

सिलसिला में खुदिसीन व उलमा के इखितलाफात का तअल्लुक है तो इस इखितलाफ की बुनियाद पर हदीस की हुज्जीयत पर शक व शुबहा नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इखितलाफ का असल मकसद खुलूस के साथ अहादीस के ज़खीरा में मौजूदात को अलग करना और अहकामे शरीआ में इन्ही अहादीस को काबिले अमल बनाना^१ है जिस पर किसी तरह का कोई शक व शुबहा न रहे, जहाँ कोई शक व शुबहा हो तो उन अहादीस को अहकाम के बजाए सिर्फ आमाल की फज़ीलत की हद तक महदूद रखा जाए।

मसलन मरीज़ के इलाज में डाक्टरों का इखितलाफ होने की सूरत में डाक्टरी पेशा को ही रद्द नहीं किया जाता है, इसी तरह मकान का नक्शा तैयार करने में इंजीनियरों के इखितलाफ की वजह से इंजीनियरों के बजाए मज़दूर से नक्शा नहीं बनवाया जाता है, मौजूदा तरक्की याफ़ता दौर में भी तालीम व तअल्लूम के लिए एक ही कोर्स के मुख्तलिफ तरीके राएज हैं, हर इलाका में ज़िन्दगी ज़ारने के तरीके मुख्तलिफ हैं, गरज़ ये कि ज़िन्दगी के तक्रीबन हर शोबे में इखितलाफ मौजूद है, इन इखितलाफात के बावजूद हम ज़िन्दगी के ही मुंकिर नहीं बन जाते हैं तो अहादीस की तक्सीम और रावियों को सिक्रह करार देने में इखितलाफ की वजह से हदीस का ही इन्क़ा क्या? बल्कि यह इखितलाफ कभी उम्मत के लिए रहमत बनते हैं कि ज़माने के बदलाव के एतबार से मसअला का फैसला किसी एक राय के मुताबिक़ कर दिया जाता है, नीज़ इन इखितलाफात की वजह से तहकीक़ का दरवाजा भी खुला रहता है।

खुलासा कलाम

सहाबा-ए-किराम, ताबेइन, तबेताबेइन, मुहद्विसीन, मुफस्सेरीन व फुकहा व उलमा व मुअर्रेखीन गरज़ ये कि इब्तिदाए इस्लाम से असरे हाज़िर तक उम्मत मुस्लिमा के तमाम मकातिबे फिक्र ने तसलीम किया है कि कुरान के बाद हदीस इस्लामी कानून का दूसरा अहम बुनियादी माखज़ है और हदीसे नबवी भी कुरान करीम की तरह शरीअते इस्लामिया में क़तई दलील और हुज्जत है जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान में बहुत सी जगहों पर ज़िक्र फरमाया, नीज़ कुरान करीम में एक जगह भी यह मज़कूर नहीं कि सिर्फ और सिर्फ सुन्न करीम पर अमल करो, गरज़ ये कि अहकामे कुरान पर अमल के साथ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल यानी हदीसे नबवी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुजारना ज़रूरी है, हक़ तो यह कि कुरान फहमी हदीस नबवी के बेगैर मूमकिन नहीं है, क्योंकि अल्लाह की तरफ से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह ज़िम्मेदारी आएद की गई है कि आप उम्मत मुस्लिमा के सामने कुरान करीम के अहकाम व मसाइल खोल खोल कर बयान करें और हमारा यह ईमान है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िम्मेदारी बहुस्ने खूबी अंजाम दी है, मगर असरे हाज़िर में मुस्तशरैकीन ने तौरैत व इंजील की हिफाज़त व तदवीन के तरीकों पर चश्म पोशी करके हदीस नबवी के हिफाज़त व तदवीन पर एतेराज़ात किए हैं, मगर वह हक़ाएक के बजाए सिर्फ और सिर्फ इस्लाम दुश्मनी पर मबनी है।

अल्लाह तआला हम सबको कुरान व सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बनाए, आमीन।

नहीं है। लिहाज़ा अबदुल कय्यूम नामी आदमी को सिर्फ कय्यूम कह कर बुलाना गलत है।

“न उसे ऊँघ आती है और न नींद” इन दोनों की नफी से नींद की इब्तिदा और इन्तिहा दोनों की नफी हो गई, यानी अल्लाह तआला गफलत के तमाम असरात से कमाल दर्जा पाक है।

“तमाम चीजें जो आसमानों या ज़मीनों में हैं वह सब अल्लाह तआला की ममलुक हैं” वह मुख्तार है जिस तरह चाहे उनमें तसर्रुफ़ करे।

“कौन है जो उसकी इज़ाज़त के बेग़ैर सिफारिश करे” जब यह बात मालूम हो गई कि अल्लाह तआला ही कायनात का मालिक है, कोई उससे बड़ा और उसके ऊपर हाकिम नहीं है तो कोई उससे किसी काम के बारे में सवाल व जवाब करने का भी हकदार नहीं है, वह जो हुकुम जारी फरमाए उसमें किसी को चूँ व चरा करने की गुंजाइश नहीं है। हां! यह हो सकता है कि कोई आदमी अल्लाह तबारक व तआला से किसी के लिए सिफारिश या शिफाअत करे, सो इसको भी वाजेह कर दिया कि अल्ला तआला की इज़ाज़त के बेग़ैर अल्लाह तआला के नेक व मकबूल बन्दे भी किसी के लिए शिफाअत नहीं कर सकते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया के महशर में सबसे पहले मैं सारी उम्मतों की शिफाअत करूंगा, यह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खासियतों में से है, इसी का नाम मकामे महमूद है। जिसका जिक्र सूरह अलअसरा 79 में आया है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आम उम्मतों के अलावा अल्लाह तआला के नेक बन्दों को भी तीन शर्तें

भेजने का बुनियादी मक़सद अहकामे इलाही को अपने क़ौल व अमल के ज़रिये इंसानों की रहनुमाई के लिए लोगों के सामने पेश करना होता है।

जिस तरह ईमान के मामला में अल्लाह और उसके रसूल के दरमियान तफरीक नहीं की जा सकती है कि एक को माना जाए और दूसरे को न माना जाए, ठीक इसी तरह कलामुल्लाह और कलामे रसूल के दरमियान भी किसी तफरीक की कोई गुंजाइश नहीं है कि एक को वाजिबुल इताअत माना जाए और दूसरे को न माना जाए, क्योंकि इन दोनों में से किसी एक के इंकार पर दूसरे का इंकार खुद बखुद लाज़िम आएगा।

हदीस मज़क़ूरा मक़ासिद में से किसी एक मक़सद के लिए होती है:

- 1) कुरान करीम में वारिद अक्काएद व अहकाम व मसाइल की ताकीद।
- 2) कुरान करीम में वारिद अक्काएद व अहकाम व मसाइल के इजमाल की तफसील
- 3) कुरान करीम के इबहाम की वज़ाहत।
- 4) कुरान करीम के उमूम की तखसीस।
- 5) बाज़ दूसरे अक्काएद व अहकाम व मसाइल का ज़िक्र, जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह हशर, आयत 7 में इरशाद फरमाया "जिसका हुकुम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दें उसको बजा लाओ और जिस काम से मना करें उससे रुक जाओ।"

हदीस की किस्में

सनदे हदीस (जिन वास्तों से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कौल या अमल या तकरीर या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई सिफत उम्मत तक पहुंची है) के एतेबार से हदीस की मुख्तलिफ किस्में बयान की गई हैं, जिनमें से तीन अहम अक़साम नीचे लिखे हैं।

सही - वह हदीसे मरफू जिसकी सनद में हर रावी इल्म व तक़्वा दोनों में क़माल को पहुंचा हुआ हो और हर रावी ने अपने शैख से हदीस सुनी हो, नीज़ हदीस के मतन में से किसी दूसरे मज़बूत रावी की रिवायत से कोई तआरूज़ न हो और कोई दूसरी इल्लत (नुक्स) भी न हो।

सही का हुकुम - जमहूर मुहद्दिसीन व मुफ़स्सेरीन व फ़ुक्हहा व उलमा का इन अहादीस से अक़ाएद व अहक़ाम साबित करने में इत्तिफ़ाक़ है।

हसन - वह हदीसे मरफू जिसकी सनद में हर रावी तक़्वा में तो क़माल को पहुंचा हुआ हो और हर रावी ने अपने शैख से हदीस भी सुनी हो, नीज़ हदीस के मतन में किसी बूरे मज़बूत रावी की रिवायत से कोई तआरूज़ भी न हो, लेकिन कोई एक रावी इल्म में आला पैमाने का न हो।

हिस्सा का इहाता नहीं कर सकते, मगर अल्लाह तआला ही खुद जिसको जितना हिस्सा इल्म इहाता करना चाहें सिर्फ इतना ही उसको इल्म हो सकता है।" इस आयत में यह कहा गया है कि तमाम कायनात के ज़र्रे ज़र्रे का इल्म मुहीत सिर्फ अल्लाह तआला की खुसूसी सिफत है, इंसान या कोई मखलूक इसमें शरीक नहीं हो सकती।

"उसकी कुर्सी इतनी बड़ी है कि जिसकी वुसअत के अंदर सातों आसमान और ज़मीन समाए हुए हैं।" अल्लाह तआला उठने बतने और जगह या मकान से बालातर है, इस किस्म की आयत को अपने मामलात पर कयास न किया जाए, उसकी कैफियत व हकीकत का इदराक इंसानी अकल से बालातर है। अल्लामा इब्ने कसीर ने बरिवायत हज़रत अबुज़र गिफारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से नकल किया है कि उन्होंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरयाफ्त किया कि कुर्सी कैसी है? अप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कसम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़ा में मेरी जान है कि सातों आसमानों और ज़मीनों की मिसाल कुर्सी के मुकाबले में ऐसी है जैसे एक बड़े मैदान में अंशतरी का हलका डाल दिया जाए। और बाज़ हादीस में है कि अर्श के सामने कुर्सी की मिसाल भी ऐसी है कि जैसे एक बड़े मैदान में अंगुशतरी का हलका।

कुर्सी से मुराद हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इल्म मनकूल है, बाज़ हज़रात से दोनों पांव रखने की जगह मनकूल है, एक हदीस में यह भी लिखा है कि इसका अंदाज़ह सिवाए बी तआला के और किसी को नहीं। अबु मालिक (रहमतुल्लाह अलैहि) फरमाते हैं कि कुर्सी अर्श के नीचे है। सदी (रहमतुल्लाह अलैहि) कहते

हदीस की एक किस्म है। ज़ईफ हदीस में जोफ आम तौर पर मामूली दर्जा का ही होता है। हदीस के ज़खीरे में अगरचे कुछ मौजूआत भी शामिल हो गई हैं, लेकिन वह तादाद में बहुत ज़्यादा नहीं हैं, नीज़ मुहद्दिसीन व उलमा ने दिन रात की कोशिश से इनकी निशानदही भी कर दी है।

ज़ईफ हदीस भी सही हदीस की एक किस्म है

खैरुल कुरुन से आज तक इस्तिलाहे हदीस में सही के मुकाबले में मौजू इस्तेमाल होता है, यानी वह मनघड़त बात जो हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ गलत मनसूब कर दी गई हो, मुहद्दिसीन व उलमा ने दिन रात की कोशिश से उनकी निशानदही भी कर दी है और हदीस के ज़खीरे में उनकी तादाद बहुत ज़्यादा नहीं हैं, जबकि ज़ईफ हदीस सही हदीस की ही एक किस्म है, लेकिन इसकी सनद में कुछ कमज़ोरी की वजह से जमहूर उलमा इसको फज़ाइल के बाब में कबूल करते हैं। मसलन सनद में अगर कोई रावी गैर मारुफ साबित हुआ, यानी यह मालूम नहीं कि वह कौन है या उसने किसी एक मौक़ा पर झूट बोला है या सनद में इंक़िताअ है (यानी दो रावियों के दरमियान किसी रावी का ज़िक्र न किया जाए मसलन, ज़ैद ने कहा कि अमर ने रिवायत की है, हालांकि ज़ैद ने अमर का ज़माना नहीं पाया, मालूम हुआ कि यक़ीनन इन दोनों के दरमियान कोई वास्ता छूटा हुआ है) तो इस किस्म के शक व शुबहा से मुहद्दिसीन व फ़क़हा व उलमा इहतियात के तौर पर उस रावी की हदीस को अक्काएद और अहकाम में कबूल नहीं करते हैं, बल्कि जो अक्काएद या अहकाम कुरान करीम या सही अहादीस से साबित हुए हैं

उनके फज़ाइल के लिए क़बूल करते हैं, चुनांचे बुखारी व मुस्लिम के अलावा हदीस की मशहूर व मारुफ तमाम ही किताबों में ज़ईफ अहादीस की अच्छी खासी तादाद मौजूद है और उम्मत मुस्लिमा इन किताबों को क़दीम ज़माने से क़बूलियत का शरफ दिए हुए है, हत्ताकि बाज़ उलमा की तहक़ीक़ के मुताबिक़ बुखारी की तआलीक़ और मुस्लिम की शवाहिद में भी चंद ज़ईफ अहादीस मौजूद हैं। इमाम बुखारी ने हदीस की बहुत सी किताबें लिखी हैं, बुखारी के अलावा उनकी भी तमाम किताब में ज़ईफ अहादीस कसरत से मौजूद हैं। सही बुखारी व सही मुस्लिम से पहले और बाद में अहादीस पर मुशतमिल किताबें लिखी गईं, मगर हर मुहद्दिस ने अपनी किताब में ज़ईफ हदीसों ज़िक्र फरमाई हैं। इसी तरह बाज़ मुहद्दिस ने सिर्फ सही अहादीस को ज़िक्र करने का अपने ऊपर इल्तिज़ाम किया, मसलन सही इब्ने खुज़ैमा और सही इब्ने हिब्बान वगैरह, मगर इसके बावजूद उन्होंने अपनी किताब में अहादीस ज़ईफा भी ज़िक्र फरमाई हैं जो इस बात की वाज़ेह दलील है कि खैरुल क़रून से आज तक तमाम मुहद्दिसीन ने अहादीस ज़ईफा को क़बूल किया है। सबसे मशहूर व मारुफ तफसीरे क़ुरान (तफसीर इब्ने कसीर) में अच्छी खासी तादाद में ज़ईफ अहादीस हैं, लेकिन उसके बावजूद तकरीबन 700 साल से पूरी उम्मत मुस्लिमा ने इसको क़बूल किया है और सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली तफसीर है और इसके बाद में लिखी जाने वाली तफ़्सीरों के लिए मम्बा व माख़ज़ है।

अगर ज़ईफ हदीस काबिले एतेबार नहीं है तो सवाल यह है कि मुहद्दिसीन ने अपनी किताबों में उन्हें क़यज़मा क्या? और उनके

कुरान करीम पढ़ने का सवाब मैयित (मुर्दा) को पहुंचने का हुकुम

रोज़मर्रा के तकरीबन 80 फीसद प्रैक्टिकल मसाइल में उम्मतें मुस्लिमा मुत्तफिक हैं, क्योंकि शरीअत इस्लामिया का वाज़ेह हुकुम मौजूद है। अलबत्ता चंद असबाब की वजह से रोज़मर्रा के तकरीबन 20 फीसद प्रैक्टिकल मसाइल में जमाना-ए-कदीम से इखतिलाफ चला आ रहा है और उनमें से बाज़ असबाब यह हैं -

"नस फहमी" (यानी कुरान व हदीस की इबारत समझने में इखतिलाफ हो जाए) मसलन अल्लाह तआला का फरमान **"अवला मसतमुननिसा"** (सूरह अन निसा 43)। उलमा की एक जमाअत ने इस आयत से नवाकिज़े वजु (वजु को तोड़ने वाली चीज़ें) मुराद लिया है कि औरत को छूते ही वजु टूट जाता है। जबकि दूसरे मुफस्सेरीन व फुकहा मसलन इमाम अबू हनीफा (रहमतुल्लाह अलैहे) ने इस आयत से नवाकिज़े गुसल मुराद लिया है कि सोहबत करने से गुसल वाजिब होता है, औरत को सिर्फ़ छूने से वजु नहीं टूटता है। गरज़ ये कि नस फहमी में इखतिलाफ हुआ जिसकी वजह से बाज़ मसाइल में इखतिलाफ हो गया।

"नासिख व मंसुख को तैय करने में इखतेलाफ" (यानी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आखरी अमल कौन सा है?) मसलन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रूकु में जाते और उठते वक़्त रफ़े यदैन करना (हाथ का उठाना) दोनों अहदीस से साबित है, लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आखरी अमल

असरे हाज़िर में बाज़ हज़रात जो मुसलमानों की आबादी का एक फीसद भी नहीं हैं अपनी राय को उम्मत मुस्लिमा के सामने इस तरह पेश करते हैं कि वह जो कहते हैं वही सिर्फ अहादीसीह पर मबनी है और पूरी उम्मत मुस्लिमा के अक़वाल अहादीसे ज़ईफ़ा पर मबनी हैं। उनके नुक़तए नज़र में हदीस के सही या ज़ईफ़ होने का मेयार सिर्फ यह है कि जो वह कहें वही सिर्फ सही है, हम्माँ अहादीस की किताबें लिखने के बाद हदीस बयान करने वाले रावियों पर बाक़ाएदा बहस हुई, जिसको असमाउर रिजाल की बहस कहा जाता है। अहकामे शरइया में उलमा व फुक्रहा के इख़िताफ़ की तरह बल्कि इससे भी कहीं ज़्यादा शदीद इख़िताफ़ मुहद्दिसीन का रावियों को ज़ईफ़ और सिकह करार देने में है, यानी एक हदीस एक मुहद्दिस के नुक़तए नज़र में ज़ईफ़ और दूसरे मुहद्दिसीन की राय में सही हो सकती है, लिहाज़ा अगर कोई हदीस पेश की जाए तो फौरन आम लोगों को बेगैर तहकीक़ किए हुए यह तबसिरा नहीं करना चाहिए कि यह हदीस सही नहीं है, इसलिए कि बहुत ज़्यादा मुमकिन है कि वह हदीस हो जिससे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल का इन्कार लाज़िम आए और अगर कोई आलिम किसी हदीस को क़ाबिले अमल नहीं समझता है तो वह उस पर अमल न करे लेकिन अगर कोई दूसरा मक़तबे फ़िक्क़ उस हदीस को क़ाबिले अमल समझता है और उस हदीस पर अमल करना क़ुरान व हदीस के किसी हुकुम के मुख़ालिफ़ भी नहीं है तो हमें चाहिए कि हम तमाम मक़ातिबे फ़िक्क़ की राय का एहतेराम करें, मसलन रजब के ३० महीने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से "अल्लाहुम्मा बारिक़ लना फी रजबिन व शाबाना व बल्लिग़ना रमज़ान" पढ़ना साबित है और यह

हदीस मुसनद अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी और बैहकी जैसी किताबों में मौजूद हैं जिनको पूरी उम्मत मुस्लिमा ने क़बूल किया है तो जो उलमा इस हदीस की सनद पर एतेराज़ करते हैं वह यह दुआ न पढ़ें, बल्कि अगर उलमा की एक जमाअत इस हदीस को क़ाबिले अमल समझ कर यह दुआ मांगती है तो उनके बिदअती होने का फतवा सादिर करना कौन सी अकलमंदी है। इसी तरह उलमा, फुकहा और मुहद्दिसीन की एक बड़ी जमाअत की राय है कि 15वीं शाबान से मुतअल्लिक अहादीस के क़ाबिले क़बूल और उम्मत मुस्लिमा का अमल इब्तिदा से इस पर होने की वजह से 15वीं शाबान की रात में इफ़िरादी तौर पर नफल नमाज़ों की अदाएगी, कुरान करीम की तिलावत, ज़िक्र और दुआओं का किसी हद तक एहतेमाम करना चाहिए। लिहाज़ा इस तरह से 15वीं शाबान की रात में इबादतकरना बिदअत नहीं बल्कि इस्लामी तालीमात के ऐन मुताबिक़ है। गरज़ ये कि ज़ईफ़ हदीस भी सहीह हदीस की एक किस्म है और उम्मत मुस्लिमा ने फ़ज़ाइले आमाल के लिए हमेशा उनको क़बूल किया है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में हदीस लिखने की आम इजाज़त नहीं थी, ताकि कुरान व हदीस में इख़्तिलात न पैदा हो जाए, अलबत्ता इफ़िरादी तौर पर सहाबा-ए-किराम की एक जमाअत ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त से अहादीस के सहीफे तैयार कर रखे थे। खुलफ़ाए राशेदीन के ज़माने में भी हदीस लिखने का नज़म इफ़िरादी तौर पर जारी रहा। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अपनी खिलाफत के ज़माने में अहादीस को जमा कराने का खास एहतेमाम किया। इस तरह हज़रत उमर बिन

पहुंचता है, कुरान करीम पढ़ने, दुआ और इस्तिगफार का सवाब भी मैयित को पहुंचेगा क्योंकि यह भी सदकात ही में हैं और जिन हज़रात ने इमाम शाफई के मुतअल्लिक गुमान किया है कि वह मैयित पर कुरान करीम पढ़ने को नाजाएज़ करार देते हैं, वह गलत है। क्योंकि सिर्फ़ इखतिलाफ़ इसमें है कि इसका सवाब मैयित को पहुंचता है या नहीं। इमाम शाफई और दूसरे जमहूर उलमा इस बात पर मुत्तफिक हैं कि कुरान करीम पढ़ने का सवाब मैयित को पहुंचेगा अगर पढ़ने वाला अल्लाह तआला से पहुंचने की दुआ करता है और जिन हज़रात ने कहा कि कुरान करीम पढ़ने का सवाब नहीं पहुंचता तो यह उस वक्त है जबकि पढ़ने वाला अल्लाह तआला से पहुंचने की दुआ न करे, (तज़केरा फी अहवालिल मौता लिलकुर्तुबी)। गरज़ ये कि अल्लामा कुर्तुबी की तहकीक़ के मुताबिक़ अक्सर उलमा की राय में कुरान करीम पढ़ने का सवाब मैयित को पहुंचता है।

इस मौजू से मुतअल्लिक चंद अहादीस शरीफ़

हज़रत आइशा, हज़रत अबू हुऱैरा, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू राफ़े, हज़रत अबू तलहा अंसारी और हज़रत हुजैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की मुत्तफिका रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो मैदे कुर्बान किए। एक अपनी तरफ़ से और दूसरा उम्मत की तरफ़ से, (बुखारी, मुस्लिम, मुसनद अहमद, इब्ने माजा, तबरानी, मुसतदरक और इब्ने अबी शैबा)। उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफाक़ है कि कुर्बानी का सवाब मुर्दों और ज़िन्दों को भी पहुंचता है।

एक शख्स ने रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि

हदीस की बाकाएदा किताबें 200 हिजरी के बाद सामने आई हैं तो इस क्रिस्म के एतेराज़ तफसीरे कुरान, सीरत की किताबों और इस्लामी तारीख और शायरों के दीवानों बल्कि यह एतेराज़ दूसरे असरी उलूम पर भी किया जा सकता है, क्योंकि बाकाएदा उनकी किताबत 200 हिजरी के बाद ही शुरू हुई है। 200 हिजरी तक अगरचे बहुत सी किताबें मनज़रे आम पर आ चुकी थीं, मगर आम तौर पर तमाम उलूम सिर्फ ज़बानी ही पढ़े और पढ़ाए जाते थे।

खुलासाए कलाम यह है कि कुरान के बाद हदीस इस्लामी क़ानून का दूसरा अहम बुनियादी माखज़ है और हदीसे नबवी भी कुरान करीम की तरह शरीअते इस्लामिया में क़तई दलील और हुज्जत है। हदीस के बेग़ैर हम कुरान को समझना तो दरकिनार इस्लाम के पांच बुनियादी अहम रुक़न को भी नहीं समझ सकते हैं।

अदीब अरब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल के अल्फ़ाज़ बिऐनेही मरवी हैं

इस्लाम ही दुनिया में ऐसा मज़हब है जिसमें तालीम के साथ यह भी बताया जाता है कि इल्म मुस्तनद वास्तों से किस तरह हमारे पास पहुंचा है। शरीअते इस्लामिया के दोनों अहम बुनियादी ज़राये (कुरान व हदीस) का एक एक लफ़्ज़ किन किन वास्तों से हमारे पास पहुंचा है, रावियों के अहवाल व कवाएफ़ के साथ उलमा-ए-किराम की बेलौस खिदमात से आज तक महफूज़ है। मदारिस में पढ़ाई जाने वाली हदीस की किताबों की सनद का सिलसिला हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचता है, यानी हदीस की तशरीह व तौजीह के साथ तल्बा को यह भी बताया जाता है कि फलां हदीस हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, सहाबी, ताबई और किन किन वास्तों के ज़रिये उस्ताद और फिर तालिब इल्म के पास पहुंची। कुरान करीम का एक एक लफ़्ज़ तवातुर के साथ यानी मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद के ज़रिये उम्मत मुस्लिमा के पास पहुंचा है। हदीस नबवी का एक हिस्सा तवातुर के साथ यानी हर ज़माना में इतनी बड़ी तादाद ने इसको रिवायत किया है कि इनका झूट पर मुत्तफ़िक़ होना नामुमकिन है। अहादीसे नबविया का काबिले क़दर हिस्सा मशहूर है, यानी रिवायत करने वालों की एक बड़ी जमाअत है, जबकि अहादीसे नबविया का एक हिस्सा अखबारे अहाद से भी मरवी है। अहादीसे नबविया की यह मज़कूरा अक़साम मशहूर व मारुफ़ हदीस की किताब लिखने तक है, लेकिन दूसरी और तीसरी सदी हिजरी में मशहू व मारुफ़ हदीस की किताबें उम्मत मुस्लिमा में मकबूल हो जाने के बाद तमाम ही अहादीस दरजात के एतबार से

कर लिया था तो तुम उनकी तरफ से रोज़ा रखो या सदका करो, वह उनके लिए फायदेमंद होगा। (मुसनद अहमद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फरमाया “जब किसी आदमी का इंतिकाल हो जाए तो उसको दफन करने में जल्दी करो, उसके सरहाने की तरफ सूरह फातिहा और पैरों की तरफ सूरह अलबक्रा का आखिर पढ़ो।” अल्लामा हाफिज़ इब्ने हजर ने बुखारी शरीफ की शरह में लिखा है कि यह हदीस तबरानी ने सही (हसन सनद के साथ ज़िक्र किया है।

सहाबा-ए-कराम से भी नबी अकरम सल्लाहु अलैहि वसल्लम के बयान किये हुए फरमान पर अमल करना साबित है, जैसा कि इमाम बैहकी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से मुर्दे के सरहाने की तरफ सूरह फातिहा और पैरों की तरफ सूरह अलबक्रा का आखिरी रुकू पढ़ने का अमल ज़िक्र किया है। मुस्लिम की मशहूर शरह लिखने वाले इमाम नव्वी ने इस हदीस को सही करार दिया है। (अल अज़कार)

रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फरमाया “सूरह यासीन कुरान करीम का दिल है, जो आदमी भी अल्लाह तआला का कुर्ब और आखिरत में भलाई हासिल करने की गरज़ से उसे पढ़ेगा वह उसको हासिल होगी, और इस सूरह को अपने मुर्दों पर पढ़ा करो।” (मुसनद अहमद, इब्ने अबी शैबा, अबू दाऊद, इब्ने माजा, सही इब्ने हब्बान, सुनन बैहकी, नसई)। मुहद्देसीन की एक जमाअत ने इस हदीस को सही करार दिया, उलमा कराम की एक बड़ी जमाअत ने

की जमा तदवीन व हिफाज़त से किया जाए तो इंसान अगर वाकई अक़ल व शऊर रखता है यही कहेगा कि कुरान व हदीस की जमा व तदवीन व हिफाज़त के लिए जो इक़दामात किए गए हैं वह किसीभी दूसरे मज़हब की किताब की हिफाज़त के लिए दूर दूर तक मौजूद नहीं हैं बल्कि कु़लान व हदीस की जमा व तदवीन व हिफाज़त के इक़दामात व तदाबीर का दूसरे मज़ाहिब की किताबों से कोई मुकाबला ही नहीं किया जा सकता। हक़ बात तो यह है कि दुनिया के किसी भी मज़हब में रिवायत वाला निज़ाम मौजूद ही नहीं बल्कि उन्हें चूँ चरा किए बेग़ैर सिर्फ़ मान लिया जाए, जबकि उलमा व मुहद्दिसीन ने अहादीस के रावियों पर मुकम्मल बहस करने के बाद ही उनके इल्म व तक्रवा की बुनियाद पर ही उनसे मरवी अहादीस को तसलीम किया है।

मुस्तनद दलाइल के साथ यह बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह है कि अहादीस के अल्फ़ाज़ को रिवायत किया गया है, यानी जो अल्फ़ाज़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुने गए हैं उनको किसी तबदीली के बेग़ैर बिऐनेही नक़ल किया गया है, हां अगर किसी रावी ने मसलन सौ अहादीस (तक़रीबन हज़ार अल्फ़ाज़) मुकम्मल एहतेमाम के साथ दूसरे लोगों को रिवायत कीं, अगर चंद मुतरादिफ़ अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए गए हैं तो उसे रिवायतुल हदीस बिलमानी नहीं बल्कि रिवायतुल हदीस बिल्लाफ़ज़ ही कहा जाएगा और वह रावी अरबी ज़बान से मारिफ़त के साथ उलूमे कुरान व हदीस से भी अच्छी तरह वाक़िफ़ है और अल्लाह तआला के ख़ौफ़ के साथ शरीअते इस्लामिया का मंशा भी समझता है।

अदीबे अरब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा और उम्मत मुस्लिमा को खुसूसी तालिमात भी दी कि अहादीस के अल्फ़ाज़ को किसी तबदीली के बेगैर बिऐनेही रिवायत किया जाए, न सिर्फ आप सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने तरगीब दी बल्कि अल्फ़ाज़ की मामूली तबदीली की सूरत में इस्लाह भी फरमाई, हालांकि मानी व मफहूम के एतबार से कोई फ़र्क भी नहीं पड़ रहा था। सहाबा-ए-किराम ने भी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालिमात की इत्तिबा की और उन्होंने क़यामत तक आने वाले इंसान व जिन्नात के पैगम्बर के अक्वाल को पूरी इहतियात के साथ तबदीली के बेगैर उम्मत मुस्लिमा तक पहुंचाया।

मुहद्दीसीन व उलमा-ए-किराम की एक जमाअत का मौक़िफ है कि रिवायतुल हदीस बिलमानी जाएज़ नहीं है और जिन उलमा व मुहद्दीसीन ने रिवायतुल हदीस बिलमानी के जवाज़ का फतवा दिया है उसके लिए बहुत सी शरएत ज़रूरी करार दिए हैं उनमें से अहम शर्त यह है कि रावी अल्ताह ताआला के खौफ के साथ अरबी ज़बान पर महारत रखता हो, यानी हदीस के अल्फ़ाज़ व मानी से बखूबी वाक़िफ हो। गरज़ ये कि बइत्तिफाक मुहद्दीसीन रिवायतुल हदीस बिल्लफ़ज़ ही असल है, क्योंकि अदीब अरब मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मत मुस्लिमा को इसी की तालिमात दी हैं, चंद दलाइल पेशे खिदमत हैं:

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरया “अल्ताह उस शख्स को तरोताज़ा रखे जिसने हमसे कोई हदीस सुनी, फिर उसे याद रखा यहां तक कि उसको दूसरों तक पहुंचाया क्योंकि कभी कभार फिक़ह लिए फिरने वाले ऐसे शख्स तक ले जाते हैं (यबि

माँ, बाप या उनमें से किसी एक की कब्र पर सूरह यासीन पढ़ी तो मुर्दों की मगफिरत कर दी जाती है।"

मशहुर व मारुफ मुहद्दीस हज़रत अबू मुगीरा (रहमतुल्लाह अलैह) कहते हैं कि हज़रत सफवान (रहमतुल्लाह अलैह) ने बयान किया कि मशाइख कहा करते थे कि अगर मुर्दा पर सूरह यासीन पढ़ी जाती है तो उसकी बरकत से उसके साथ आसानी का मामला किया जाता है। (मुसनद अहमद) इमाम अहमद इब्ने हम्बल (रहमतुल्लाह अलैह) ने हज़रत अबू मुगीरा (रहमतुल्लाह अलैह) से बहुत सी अहादीस नकल की हैं। शैख मुहिब्बुद्दीन अलतबरी और अल्लामा अलशौकानी ने बयान किया है कि इससे मरने के बाद किसी की कब्र पर सूरह यासीन पढ़ना मुराद है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि "जिस आदमी का कब्रिस्तान पर गुजर हो और वह ग्यारह बार "कुल हुवल्लाहु अहद" पढ़कर उसका सवाब मरने वालों को बख्श दे तो पढ़ने वाले को मुर्दों की तादाद के बराबर सवाब मिलेगा।" (दारे कुतनी)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि "जो शख्स कब्रिस्तान में दाखिल होकर सूरह फातिहा "कुल हुवल्लाहु अहद" और "अलहाकोमुल्तकासूर" पढ़े फिर कहे मैंने जो पढ़ा है उसका सवाब उन हज़रात को पहुंचाया जो इस कब्रिस्तान में दफन हैं तो वह कल क़यामत के दिन उस शख्स के लिए अल्लाह तआला से शिफाअत करेंगे।" (दारे कुतनी)

मंसूब करे तो वह भी किसी हद तक इस वर्ईद में शामिल होगा। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फरमान तवातुर के साथ बहुत से रावियों से मरवी है और हदीस की तकरीबन हर किताब में मौजूद है। इस सख्त वर्ईद की मौजूदगी में सहाबा-ए-किराम या ताबेईन कैसे रिवायतुल हदीस बिलमानी को असल बना सकते हैं।

रिवायतुल हदीस बिल्लफज़ के असल होने के लिए क़वी दलील हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है जो हज़रत इमाम बुखारी ने अपनी किताब (सही बुखारी किताबुल वज़ू) में ज़िक्र फरमाई है, हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने आओ तो उसी तरह वज़ू करो जैसे नमाज़ के लिए करते हो, फिर दाएं करवट पर लेट जाओ और यूँ कहो "अल्लाहुम्मा असलमता वजही आखिर तक", अगर कोई शख्स यह दुआ पढ़ने के बाद उसी रात इंतिक़ाल कर जाए तो फितरत (यानी दीन) पर इंतिक़ाल करेगा और इस दुआ को सबसे आखिर में पढ़ो। हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने इस दुआ को दोबारा पढ़ा, जब "अल्लाहुम्मा आमनतु बिकिताबिकल्लज़ी अंज़लता" पर पहुंचा तो मैंने "वबिरसूलिका" का लफ़ज़ कहा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया नहीं बल्कि यूँ कहो "नाबीय्यीका", गरज़ ये कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नबी की जगह रसूल के लफ़ज़ की तब्दीली की इजाज़त नहीं दी।

इस हदीस में हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रिवायतुल हदीस बिल्लफज़ को मज़बूती के साथ पकड़ने की तालिमात दी हैं, यानी एक ही मफहूम के लफज़ को तब्दीली करने की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इजाज़त नहीं दी, चुनांचे सहाबा ने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस एहतेमाम का पूरी तवज्जोह व इनायत के साथ खयाल रखा। सहाबा-ए-किराम ने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक्वाल व अफआल को महफूज़ करके इस बात का एहतेमाम किया कि कोई रावी हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल का कोई लफज़ भी न बदल दे, चाहे लफज़ मुतरादिफ (दो या दो से ज़्यादा अल्फ़ाज़ जिनके मानी तक़रीबन एक हों) क्यों न हों। सहाबा-ए-किराम के बाद ताबईन ने भी इसी मनहज को इख़्तियार करके आइन्दा नसलों के लिए उसवा बनाया। गरज़ ये कि सहाबा-ए-किराम ने पूरी कोशिश की कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल को उसी तरह नक़ल किया जाए जिस तरह हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना गया, हल्ताकि बाज़ सहाबा-ए-किराम एक लफज़ को दूसरे लफज़ की जगह या एक लफज़ को दूसरे लफज़ से पहले या बाद में तो करना दरकिनार एक हर्फ़ बदलने के लिए भी तैयासहीं थे जैसा अमीरुल मोमेनीन हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाया करते थे "जिस शख्स ने हदीस सुन कर बिऐनेही नक़ल कर दी तो वह सालिम हो गया।" (अल मुहद्दिसुल फ़ाज़िल बैनर रावी वलवाई)

सहाबा-ए-किराम में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खुद भी रिवायतुल हदीस बिल्लफज़ का एहतेमाम फरमाते थे और

अलमगरबी (रहमतुल्लाह अलैह) ने अपनी किताब "इसआफुल मुस्लेमीन वलमुस्लेमात बेजवाज़ व वसुल सवाबेहल अमवात" में इस हदीस को ज़िक्र किया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि माँ बाप के साथ नेकी यह है कि अपनी नमाज़ के साथ उनके लिए नमाज़ पढ़ो, अपने रोज़ा के साथ उनके लिए भी रोज़ा रखो, अपने सदका के साथ उनके लिए भी सदका करो। (अलमुसन्निफ लिलशैख इब्ने अबी शैबा) और इमाम मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब (रहमतुल्लाह अलैह) ने इस हदीस को अपनी किताब "अहकामे तमनेयिल मौत" में ज़िक्र किया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ी अल्लाहु अन्हु) की रिवायत है कि कबीला खश्म की एक औरत ने अल्लाह के रसूल से पूछा कि मेरे बाप पर हज ऐसी हालत पर फ़र्ज़ हुआ कि वह बहुत बुढ़े हो चुके हैं, ऊंट की पीठ पर बैठ भी नहीं सकते हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तुम उनकी तरफ से हज अदा करो। (बुखारी, मुस्लिम, मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, नसई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कबीला खश्म ही के एक मर्द का ज़िक्र करते हैं कि उन्होंने अपने बुढ़े बाप के बारे में यही सवाल किया था। अल्लाह के रसूल ने फरमाया तुम्हारा क्या खयाल है कि अगर तुम्हारे बाप पर कर्ज़ हो और तुम उसको अदा कर दो तो वह उनकी तरफ से अदा हो जाएगा? उस शख्स ने कहा जी हाँ! तो अल्लाह के रसूल ने इरशाद फरमाया बस इसी तरह तुम उनकी

यमन के अफराद से मुखातिब हो कर इरशाद फरमाया "लैसा मिम बिर्रिम सियामु फिम सफरि" (तबरानी व बैहकी) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का असल इरशाद यह था "लैसा मिनल बिर्रि अस्सियामु फिस्सफर" लेकिन यमनी लोग लाम को मीम से बदल देते हैं जैसे "मररना बिम कौमि" यानी "बिल कौमि" ग़ल्ल ये कि सहाबा व ताबेइन ने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल के अल्फ़ाज़ को बिऐनेही नक़ल करने का एहतेमाम किया जो इस बात की वाज़ेह निशानी है कि रिवायतुल हदीस बिल्लफ़ज़ ही असल है।

बाज़ मरतबा रावी को जब किसी लफ़ज़ पर शक हो जाता या दो अल्फ़ाज़ की तरतीब को भूल जाता यानी, हदीस में तो किसी तरह को कोई शक व शुबहा नहीं है मगर किसी एक लफ़ज़ के मुतअल्लिक या दो अल्फ़ाज़ की तक्दीम व ताखीर को भूल गया तो रावी हदीस ज़िक्र करते वक़्त कहता "कज़ा व कज़ा"। अगर रिवायतुल हदीस बिलमानी असल होती तो फिर रावी को इस तरह कहने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी।

सहाबा-ए-किराम ने हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल को उम्मत मुस्लिमा तक पहुंचाने के लिए हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्फ़ाज़ याद करने को अपना मामूल भी बनाया जैसा कि सहाबी रसूल हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं रात को तीन हिस्सों में तक्सीम करता था, एक तिहाई रात नमाज़ पढ़ने में, एक तिहाई रात सोने में और एक तिहाई रात हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस को याद करने में। (अल जामिउल इखलाक़ रावी व आदाबिस सामि) हुजूर

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु के हदीस के शौक को पूरी तरह जानते थे, चुनांचे जब एक मौका पर उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल से पूछा कि या रसूलुल्लाह! क़यामत के दिन आपकी शिफाअत किस नसीब को हासिल होगी, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ अबू हुरैरा! जब से मैंने तुम्हारे हदीस के शौक का अंदाजा किया तो मुझे यकीन हुआ कि तुम्हारे सिवा कोई दूसरा शख्स इस बारे में मुझसे सवाल नहीं करेगा फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने दिल व जान से सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिए अल्लाह की वहदानियत का इकरार किया उसको क़यामत के दिन मेरी शिफाअत नसीब होगी। (सही बुखारी, किताबुल इल्म)

सहाबा-ए-किराम सिर्फ इफ़िरादी तौर पर ही नहीं बल्कि आपस में अहादीस को याद करने के लिए मुज़ाकरा भी फरमाया करते थे जैसा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि "हदीस का मुज़ाकरा करते रहा करो, अगर ऐसा नही करोगे हदीस तुम्हारी याददाश्त से मिट जायेगी और तुम्हारे ज़ेहन से निकल जायेगी।" (मुस्तदरक अला सहीहैन, किताबुल इल्म)

मालूम हुआ कि सहाबा-ए-किराम ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल को अपने सीने में महफूज़ फरमा कर कल क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों के लिए अल्लाह तआला की किताब कुरान करीम की पहली और बुनियादी तफसीर को इतिहाई मुस्तनद व क़ाबिले एतेमाद वसाइल से उम्मत मुस्लिमा को पहुंचा दिया। अगर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल महफूज़ न रहते तो कुरान करीम का समझना नामुमकिन था,

हजरत आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) फरमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जो शख्स इंतिकाल कर जाए और उसके जिम्मे कुछ रोज़े हों तो उसकी तरफ से उसका वली रोज़ा रख ले।" (बुखारी, मुस्लिम, मुसनद अहमद)

(वज़ाहत) इन अहादीस में दूसरों की तरफ से नमाज़ और रोज़ा रखने का जो ज़िक्र आया है, उनसे नफली या नज़र की नमाज़ और रोज़ा मुराद हैं। क्योंकि दूसरे अहादीस में फ़र्ज़ नमाज़ या रमज़ान के रोज़े के मुतअल्लिक वाज़े हुकुम मौजूद है कि वह दूसरों की तरफ से अदा नहीं किए जा सकते हैं बल्कि उसके लिए फिदया ही अदा करना होगा।

रसूलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि घर वालों के मुर्दा पर (बुलंद आवाज़ के साथ) रोज़े की वज़ह से मुर्दा को अज़ाब दिया जाता है। (बुखारी व मुस्लिम) जिन उलमा व फुक्हा की राय में कुरान करीम पढ़ने का सवाब मुर्दा को नहीं पहुंचता है वह आमतौर पर दो दलाइल बयान करते हैं।

"कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, आदमी को वही मिलता है जो उसने कमाया।" (सूरह अन नजम 38, 39)

अगर इस आयत के अमूम से कुरान करीम पढ़ने का सवाब मुर्दा को नहीं पहुंच सकता तो फिर इसाल सवाब, कुर्बानी और हज्जे बदल वगैरह करना सब नाजाइज़ हो जाएंगे बल्कि दूसरे के हक में दुआए

भूलते। हज़रत इमाम बुखारी और हज़रत इमाम मुस्लिम की ज़ेहानत को रहती दुनिया तक याद किया जाएगा।

अहादीस नबविया के लिए तक़रीबन वही तरीके इख़्तियार किए गए हैं जो कुरान करीम की हिफ़ाज़त के लिए यानी हिफ़ज़, किताबत और अमल और इन ही वास्तों के ज़रिये अहादीसे नबविया की हिफ़ाज़त हुई जिन वास्तों के ज़रिये अल्लाह तआला ने कुरान करीम की हिफ़ाज़त की है, हां कुरान करीम की हिफ़ाज़त के इंतिजामात अहादीसे नबविया की हिफ़ाज़त के मुकाबले में ज़्यादा क़वी व मुस्तनद हैं, क्योंकि क़ुरान करीम की एक एक आयत तवातुर के साथ यानी उम्मत मुस्लिमा की बहुत बड़ी तादाद ने नक़ल किया है और कुरान करीम की किताबत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी निगरानी में खुद करवाते थे अगरचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात तक पूरा कुरान करीम एक मुसहफ़ या एक जगह में लिखा हुआ मौजूद नहीं था बल्कि मुख़्तलिफ़ चीज़ों पर लिखा हुआ कुरान करीम सहाबा-ए-किराम के पास मौजूद था। गरज़ ये कि कुरान करीम की सबसे पहली और अहम हिफ़ाज़त इस तरह हुई कि सहाबा ने इसको हिफ़ज़ करके अपने दिलों में महफ़्ज़ कर लिया था।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ूबी भी थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत ही अच्छे अंदाज़ में मुखातब से गुफ़्तगू फरमाते थे कि मुखातब के दिल में बात बहुत जल्द पैवस्त हो जाती थी। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कलाम का एक एक लफ़्ज़ मोती की तरह वाज़ेह होता था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतमिनान से ठहर ठहर कर गुफ़्तगू फरमाते थे कि

मुखातब उसको कभी भूल ही नहीं सकता था। नीज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बात को बाज़ मरतबा तीन तीन दफा दुहराते ताकि सहाबा को अच्छी तरह याद भी हो जाए। सहाबा-ए-किराम ने सिर्फ याद करके ही हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद को महफूज़ नहीं किया, बल्कि सहाबा-ए-किराम की एक जमाअत ने अहादीसे नबविया के लिखने का भी एहतेमाम फरमाया। बहुत से वाक्यात से मालूम होता है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते मुबारका ही में अहादीसे नबविया लिखी जाने लगी थीं, चंद वाक्यात पेश खिदमत हैं।

एक अंसारी सहाबी ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं आपसे हदीस सुनना चाहता हूँ, वह मुझे इच्छी तरह मालूम होती है लेकिन भूल जाता हूँ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अपने दाएं हाथ से मदद लो यानी लिख लिया करो और अपने हाथ से लिखने का इशारा फरमाया। (तिर्मिज़ी)

इसी तरह हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया इल्म को लिख कर महफूज़ करो। (दारे कुतनी)

हज़रत अबू हु़रैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों मुझसे ज्यादा किसी के पास नहीं सिवाए हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के कि वह लिख लिया करते थे और मैं (उस वक़्त) नहीं लिखता था। (सही बुखारी किताबुल इल्म)

हदीस को आम रखा जाए तो बेटे की माँ के लिए या भाई की बहन के लिए या किसी शख्स की अपने मुतअल्लिकीन और रिश्तेदारों के लिए दुआ, इस्तिगफार और जनाज़ा की नमाज़ सब बेमानी हो जाएंगी। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात में इस तरह की बहुत सी मिसालें मिलती हैं, जैसे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिसने फजर और असर की नमाज़ पाबंदी के साथ अदा करली तो वह जन्नत में दाखिल हो गया। (बुखारी व मुस्लिम) इस हदीस का मतलब यह नहीं है कि हम सिर्फ इन दो वक्तों की नमाज़ की पाबंदी करलें बाकीजो चाहे करें हमारा जन्नत में दाखिला यकीनी है। नहीं, हरगिज़ेसा नहीं है बल्कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद इन दो नमाज़ों की खास अहमियत को बतलाने के लिए है क्योंकि जो इन दो नमाज़ों की पाबंदी करेगा वह जरूर दूसरे नमाज़ों का भी इहतिमाम करने वाला होगा और नमाज़ों का वाकई इहतिमाम करने वाला दूसरे अरकान की अदाएगी करने वाला भी होगा, इंशाअल्लाह। इसी तरह इस हदीस में इन तीन आमाल की सिर्फ खास अहमियत बतलाई गई है।

(खुलासा) जैसा कि इब्तिदा में लिखा गया है कि शरीअते इस्लामिया का वाज़ेह हुकुम मौजूद होने की वजह से रोज़मर्रा के 80 फीसद प्रैक्टिकल मसाइल में उम्मत मुस्लिमा मुत्तफिक है, जिसमें किसी तरह का कोई इश्काल ही नहीं है, लेकिन बाज़ बाला असबाब की वजह से रोज़मर्रा के 20 फीसद प्रैक्टिकल मसाइल में जमाना कदीम से इखतिलाफ चला आ रहा है, जिनका आज तक कोई हल नहीं हुआ

अलैहि वसल्लम हज़रत अबू तुफैल आमिर बिन वासिला का इंतिकाल 110 हिजरी में हुआ है, गरज़ ये कि तदवीन हदीस का एक अहम मरहला बाज़ सहाबा के बकैद हयात रहते हुए अंजाम पाया। आखिरी सहाबी रसूल की वफात के वक़्त 80 हिजरी में पैदा हुआ हज़रत इमाम अबू हनीफा की उम्र 30 साल थी।

गरज़ ये कि मुस्तनद दलाइल के साथ यह बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह है कि रिवायतुल हदीस बिल्लफ़्ज़ ही असल है, यानी अहादीस क़ौलिया में अल्फ़ाज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़रूअकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हैं जिनको सहाबा ने याद करके या उनको लिख कर कल क़यामत तक आने वाले इंसानों के लिए महफूज़ कर दिया है। रिवायतुल हदीस बिलमानी के मुतअल्लिक उलमा व मुहद्दिसीन की रायें मुख्तलिफ़ हैं।

1) रिवायतुल हदीस बिलमानी जाएज़ नहीं है, यानी रावी के लिए ज़रूरी है कि वह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ हदीस नक़ल करे।

2) रिवायतुल हदीस बिलमानी चंद शराएत के साथ जाएज़ है।

- रावी इस्लामी तालिमात का पाबन्द हो, झूट कभी नहीं बोलता हो और बात को अच्छी तरह समझता हो।

- रावी अरबी ज़बान के क़वाएद का अच्छी तरह जानकार होने के साथ अरबी ज़बान के गुफ्तगू के अंदाज़े बयान से भी वाक्फ़ हो।

- अल्फ़ाज़ के मानी को मुकम्मल तौर पर समझता हो कि किस जगह पर लफ़्ज़ के किया मानी होंगे।

- दुआ और नमाज़ में जो पढ़ा जाता है वह उसमें बयान न किया गया हो, क्योंकि दुआ और नमाज़ वगैरह में जो कुछ पढ़ा जाता है

उसमें रिवायत हदीस बिलमानी बइत्तिफाक मुहद्दीसीन जाएज़ ही नहीं है।

खुलासा कलाम

रिवायतुल हदीस बिल्लफ़ज़ ही असल है। उन अहादीस कौलिया में रिवायतुल हदीस बिलमानी जमहूर मुहद्दीसीन व उलमा के नजदीक जाएज़ नहीं है जिनमें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख्तसर व जामे अक़वाल को बयान किया गया है। उन अहादीसे कौलिया के मुतअल्लिक़ जिसमें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तवील अक़वाल को बयान किया गया है सहाबा-ए-किराम और ताबेईन ने इस बात का एहतेमाम रखा है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्फ़ाज़ किसी तब्दीली के बेगैर नक़ल किए जाएं, हां अल्लाह तआला के खौफ़ और अरबी ज़बान से मारिफ़त के साथ चंद अल्फ़ाज़ के मुतरादिफ़ात के इस्तेमाल से रिवायतुल हदीस बिल्लफ़ज़ ही कही जाएगी। रही बात अहादीस फेलिया की जिनमें सहाबा-ए-किराम और ताबेईन ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल को ज़िक्र फरमाया है या वह अहादीस जिनमें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के औसाफ़ बयान किए गए हैं तो ज़ाहिर है इनमें रिवायतुल हदीस बिलमानी की मज़क़ूरा बाला शराएत के साथ गुंजाइश है क्योंकि इन में सहाबी अपने अल्फ़ाज़ के ज़रिये हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल या औसाफ़ बयान करता है।

लाखों सफ़हात पर मुशतमिल हदीस के ज़खीरा में हज़ारों अहादीसे कौलिया हैं जो मुख्तलिफ़ सहाबा-ए-किराम और ताबेईन से मरवी हैं, लेकिन उनके अल्फ़ाज़ बिल्कुल यक़सां हैं यानी एक लफ़ज़ भी

हल्ब" में कुरान करीम पढ़ने के सवाब को मुर्दा के लिए हिबा करने को जाएज़ करार दिया है।

अल्लामा इब्ने तैमिया ने भी कुरान करीम के सवाब मुर्दा के लिए हिबा करने को जाएज़ करार दिया है (मजमूआ फतावा इब्ने तैमिया जिल्द 24)। इमाम अहमद बिन हम्बल (रहमतुल्लाह अलैह) के शागिर्द इमाम अबूबकर अलमरूज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) ने कहा है कि मैंने इमाम अहमद बिन हम्बल से सुना है कि जब तुम कब्रिस्तान में दाखिल हो तो आयतलुर्की फिर तीन बार "कुल हुवल्लाहु अहद" पढ़ो। इसके बाद कहो कि या अल्लाह इसका सवाब कब्रिस्तान वालों को पहुंचा। (अलमकसदुल अरशद फी असहाबिल इमाम अहमद)

सऊदी अरब की मजिलस कज़ाए आला के साबिक सदर शैख अब्दुल्लाह बिन हमीद ने इस मौजू पर 16 सफ़हात पर मुशतमिल एक किताबचा लिखा है जिसमें उलमा के अकवाल दलाइल के साथ तहरीर फरमाए हैं कि अक्सर उलमा की राय यही है कि कुरान करीम पढ़ने का सवाब मुर्दा को पहुंचाया जा सकता है।

क्योंकि अहादीस से माली और बदनी इबादात में नयाबत का वाज़ेह सबूत मिलता है, जिस पर सारी उम्मत मुस्लिमा मुत्तफिक है। रही खालिस बदनी इबादात तो बहुत से अहादीस से इस में भी नयाबत का जवाज़ साबित होता है। नेकियों की बाज़ अकसाम को मुस्तसना करने की कोई माकूल वजह समझ में नहीं आती है। और कुरान व

सही बुखारी व उलमा-ए-देवबन्द की खिदमात

सबसे पहले सही बुखारी के मुसन्नफ़ इमाम बुखारी की मुख्तसर ज़िन्दगी के हालात लिख रहा हूँ।

नाम व नसब

नाम मोहम्मद बिन इसमाइल और कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है। अजबकिस्तान के शहर बुखारा में पैदाइश की वजह से बुखारी कहलाए गए।

विलादत और वफात

आप 13 शैव्वाल 194 हिजरी जुमा के दिन पैदा हुए और तक़रीबन 62 साल की उम्र में इदुल फितर की चांद रात को मगरिब व इशा के दरमियान 256 हिजरी में आप की वफात हुई और इदुल फितर के दिन बादे नमाज़े ज़ुहर समरकंद के करीब खरेतंग नामी जगह में दफन किए गए।

तालीम व तरबीयत

आपके बचपन में ही वालिदे जुहतरम (इसमाइल) का साया सर से उठ गया, आपकी तालीम व तरबीयत मां की गोद में हुई। सिर्फ 16 साल की उम्र में अहादीस की बेशतर किताबें पढ़कर आपने तक़रीबन 70 हज़ार हदीसें ज़बानी याद कर ली थीं।

आप बचपन में ही देखने से महरूम हो गए थे। एक मरतबा आपकी वालिदा ने ख़्वाब में देखा कि हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम फरम रहे थे ऐ औरत! अल्लाह तआला ने तेरी दुआ की बरकत से तेरे बेटे की बीनाइ वापस कर दी है, चुनांचे सुबह हुई तो इमाम बुखारी बिल्कुल देखने लगे थे।

आपके वालिद मुहतरम ने वफात के वक़्त फरमाया था कि मेरे तमाम माल में न कोई दिरहम हराम का है और न मुशतबा कमाई का, इससे मालूम होता है कि आपकी परवरिश बिल्कुल हलाल रिज़क से हुई थी और आखिरी उम्र तक ईमाम बुखारी भी अपने वालिद के नक्शे कदम पर चले, गरज़ ये कि आपने कभी हराम लुक़मा नहीं खाया।

इल्मे हदीस की तहसील

इब्तिदा में अपने ही इलाके के बेशतर शूय़ख से अहादीस पढ़ी, वालिदा और भाई के साथ हज़ की अदाएंगी के लिए मक्का गए, वालिदा और भाई तो अपने वतन वापस आ गए मगर, हज़ से फरागत के बाद आप मक्का और मदीना के शूय़ख से अहादीस सुनते रहे। उसके बाद हदीस के हुसूल के लिए बहुत से सफ़र करके मिश्र, शाम, इराक और दूसरे मुल्कों के शूय़ख से आपने अहादीस पढ़ी। इस तरह आप कम उमरी ही में हदीस के इमाम बन कर सामने आए।

कुव्वते हाफ़िज़ा

अल्लाह तआ ने इमाम बुखारी को खुसूसी कुव्वते हाफ़िज़ा अता फरमाई थी, चुनांचे वह एक बात सुनने के बाद हमेशा याद रखते थे। आपके उस्ताद इमाम मोहम्मद बिन बशशार फरमाते हैं कि इस वक़््त दुनिया में खुसूसी हाफ़िज़ा रखने वाले चार शख्स हैं, इमाम बुखारी, इमाम मुस्लिम, इमाम अबू ज़िरा राज़ी और इमाम अब्दुल्लाह बिन अब्दुर रहमान समर कंदी। शारेह सही बुखारी अल्लामा इब्ने हज़र असकलानी कहते हैं कि इन चारों में इमाम बुखारी को खास फज़ीलत हासिल थी।

कुरान करीन को छूने या छू कर पढ़ने के लिए वजु जरूरी है

कुरान करीम अल्लाह तआला का कलाम है, यानी उसकी मखलूक नहीं बल्कि सिफत है। कलाम इलाही लौहे महफूज़ में हमेशा से है और यह हमेशा रहेगा। अल्लाह तबारक व तआला ने सारे कलामों में सबसे अफज़ल व आला अपना पाक कलाम यानी कुरान करीम क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों की हिदायत व रहनुमाई के लिए सारे इंसानों में सबसे अफज़ल व आला हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर सबसे ज्यादा मुकर्रब फ़रिश्ता के ज़रिया नाज़िल फरमाया है। इस पाक कलाम के नुज़ूल की इब्तिदा सबसे अफज़ल महीना यानी रमज़ानुल मुबारक की सबसे अफज़ल रात यानी लैलतुल कदर में हुई। अल्लाह तआला जन्नत में जन्नतियों के सामने खुद अपने पाक कलाम की तिलावत फरमाएगा। अल्लाह तआला के कलाम की तिलावत भी बेशुमार इंसानों की हिदायत का ज़रिया बनी है, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के इस्लाम लाने का वाक़या तारीख की किताबों में लिखा है।

कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफाक है कि हम जब भी कुरान करीम की तिलावत करें या उसको छू तो कलाम-ए-इलाही की अज़मत का तकाज़ा है कि हम बावज़ू हों। यानी हमें इसका खास इहतिमाम करना चाहिए कि तिलावत कु़ान के वक्त हृदसे असगर व हृदसे अकबर से पाक व साफ हों। अगर कोई शख्स कुरान करीम को छूए बेगैर ज़बानी पढ़ना चाहता है तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल व अफआल की

सही बुखारी का पूरा नाम यह है

अलजामिउल मसनदुस सहीहुल मुख्तसर मिन उमूरे रसूलिल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व सुननहि व अय्यामेहि
बाज़ हज़रात ने अल्फ़ाज़ के मामूली इख़ितलाफ़ के साथ इसका नाम
इस तरह लिखा है।

अलजामिउस सहीहिल मुसनद मिन हदीसे रसूलिल्लाह सल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम व सुननहि व अय्यामेहि

सही बुखारी के लिखने की वजह

इमाम बुखारी ने हिजाज़ के तीसरे सफर में मस्जिदे नबवी से
मुत्तसिल एक रात ख़वाब में देखा कि मेरे हाथ में एक बुक़्क़ ही
खुबसूरत पंखा है और मैं इसको निहायत इतमिनान से झल रहा हूँ।
सुबह को नमाज़ से फारिग हो कर इमाम बुखारी ने उलमा से अपने
ख़वाब की ताबीर दरयाफ़्त फरमाई, उन्होंने ज़वाब दिया कि आप सही
हदीसों को ज़ईफ़ व मौज़ू हदीसों से अलाहिदा करेंगे, इस ताबीर ने
इमाम बुखारी के दिल में सही अहादीस पर मुआतमिल एक किताब
की तालीफ़ का एहसास पैदा किया। इसके अलावा इस इरादा को
मज़ीद तक़वियत इस बात से पहुंची कि आपके उस्ताद शैख़ इसहाक़
बिन राहवियह ने एक मरतबा आपसे फरमाया कि क्या ही अच्छा
होता कि तुम ऐसी किताब तालीफ़ फरमाते जो सही आहादीस की
जामे होती। ख़वाब की ताबीर और उसताद के इरशाद के बाद इमाम
बुखारी सही बुखारी लिखने में हमातन मशगूल हो गए। सही बुखारी
लिखे जाने तक हदीस की तक़रीबन तमाम ही किताबों में सही, हसन
और ज़ईफ़ तमाम किस्म की अहादीस जमा की जाती थीं, नीज़ सही
बुखारी लिखे जाने तक इल्मे हदीस की बज़ाहिर तदवीन भी नहीं हुई

रौशनी में उलमा का इत्तिफाक है कि वजू जरूरी नहीं है लेकिन अगर कोई शख्स कुरान करीम सिर्फ छूना चाहता है या छूकर पढ़ना चाहता है जिस तरह हम ओमूमन कुरान की तिलावत करते हैं तो कुरान व हदीस की रौशनी में जमहूर उलमा की राय है कि वजू का होना शर्त है यानी हम बेवजू कुरान करीम को छू नहीं सकते हैं। बहुत से सहाबा-ए-कराम, ताबेईन एज़ाम यहां तक कि चारों अईम्मा (इमाम अबु हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफी और इमाम अहमद बिन हम्बल) ने भी कुरान व हदीस की रौशनी में यही फरमाया है। उलमा-ए-अहनाफ, बरसगीर के उलमा-ए-कराम और सउदी अरब के मशाइख ने भी यही लिखा है कि बेवजू कुरान करीम छूना नहीं जा सकता। जमहूर उलमा ने इस के लिए कुरान व हदीस के बहुत से दलाइल पेश फरमाए हैं। यहां इखतिसार के मद्देनज़र सिर्फ एक आयत और एक हदीस पर इकतिफा कर रहा हूँ।

अल्लाह तआला अपने पाक कलाम में इरशाद फरमाता है। इसको (यानी कुरान करीम को) वही लोग छू सकते हैं जो पाक हों (सूरह अलवाक़ेआ आयत 79)। इस आयत से मुफस्सिरीन ने दो मफहूम मुराद लिए हैं।

- (1) कुरान करीम को लौहे महफूज़ में पाक फरिशतों के सिवा कोई और छू नहीं सकता है।
- (2) जो कुरान करीम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ है यानी वह मुसहफ जो हमारे हाथों में है इसको सिर्फ पाकी की हालत में ही छूना जा सकता है। इस आयत की दूसरी तफसीर के मुताबिक बगैर पाकी के कुरान को छूना या छूकर पढ़ना

ही सही अहादीस इस किताब में जमा हो गई है बल्कि सही अहदीस की एक अच्छी खासी तादाद ऐसी भी है जो इमाम बुखारी के अलावा दूसरे मुहद्दीसीन ने अपनी किताबों में ज़िक्र की हैं जैसा कि इमाम बुखारी ने खुद इसका एतेराफ किया है।

मुअल्लकात सही बुखारी

इमाम बुखारी ने अपनी किताब में बाज़ अहादीस सनद के बेगैर या इब्तिदाई सनद में से किसी एक या चंद रावी को ज़िक्र किए बँग लिखे हैं, इन को मुअल्लकाते बुखारी कहा जाता है। सबसे पहले इमाम अबुल हसन दारे कुतनी ने मुअल्लकात की इस्तिलाह उम्मत के सामने पेश की है।

इमाम बुखारी ने बाज़ मुअल्लकात को यक़ीन के सेगा के साथ ज़िक्र किया है जिनके सही होने पर उम्मत मुस्लिमा मुत्तफ़िक हैं जबकि बाज़ मुअल्लकात शक के सेगा के साथ ज़िक्र की हैं जिन पर बाज़ मुहद्दीसीन ने कलाम किया है।

इमाम बुखारी ने यह मुअल्लकात उम्मन 2 वजहों में से किसी एक वजह से अपनी किताब में ज़िक्र फरमाई है।

1) वह हदीस उन शराएत पर न उतरती हो जो इमाम बुखारी ने अपनी किताब के लिए तैय की थी मगर किसी खास फायदा के मद्देनजर वह हदीस मुअल्लक ज़िक्र कर दी।

2) सिर्फ इख़्तिसार की वजह से सनद के बेगैर या इब्तिदाई सनदमें किसी एक या चंद रावी को ज़िक्र किए बेगैर तहरीर फरमा दी।

मुअल्लकात सही बुखारी की तादाद

अल्लामा इब्ने हजर ने फतहुल बारी में लिखा है कि बुखारी में मुअल्लकात की तादाद 1341 है जिनमें से अक्सर बृहत् सी बार

ज़िक्र की गई हैं, बाज़ मुहद्दीसीन ने उससे भी ज़्यादा तादाद ज़िक्र की है, अलबत्ता सही मुस्लिम में मुअल्लकात बहुत कम हैं। इसी वजह से बाज़ मुहद्दीसीन ने मुस्लिम को बुखारी पर फौकियत दी है।

तरजुमतुल अबवाब

इमाम बुखारी ने अपनी किताब सही बुखारी को मुख्तलिफ अबवाब में मुरत्तब किया है और हर बाब के तहत बहुत सी अहादीस ज़िक्र की हैं, मगर सही बुखारी में हर बाब के तहत मज़कूरा अहादीस की बाब से मुनासबत उम्मन मुशकिल से समझ में आती है जिस पर मुहद्दीसीन व उलमा बहस करते हैं जो एक मुश्किल इल्म की हैसियत इख्तियार कर गई है जिसको तरजुमतुल अबवाब कहा जाता है।

किताब की इल्मी हैसियत

इमाम बुखारी पहले शख्स हैं जिन्होंने सिर्फ अहादीसे सहीहा पर इकतिफा फरमा कर सही बुखारी लिखी। इससे पहले जो किताबें लिखी गईं वह सही, हसन और ज़ईफ़ वगैरह जुमला अहादीस पर मुशतमिल हुआ करती थीं। इमाम बुखारी के बाद बाज़ मुहद्दीसीन मसलन इमाम मुस्लिम ने इस सिलसिला को जारी रखा, मगर जमहूर उलमा-ए-उम्मत ने सही बुखारी को दूसरे तमाम अहादीस की किताबों पर फौकियत दी है। सही बुखारी के बाद भी तहरीर करदा ज़्यादातर अहादीस की मशहूर व मारुफ़ किताबें (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, नसई, अबू दाऊद वगैरह) हदीस की तमाम ही अकसाम (सही, हसन, ज़ईफ़ वगैरह) पर मुशतमिल हैं।

(अहकामुल कुरान लिलजिसास) हज़रत अता, हज़रत ताउस और हज़रत शाबी और हज़रत कासिम बिन मोहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहिम) से भी यही मंकूल है। (अलमुगनी ले इबने कुदामा) लेकिन कुरान करीम को हाथ लगाए बेगैर यानी याद से पढ़ना उन सब के नज़दीक बेवज़ू जाएज़ था।

कुरान व हदीस की रौशनी में मशहूर व मारूफ चारों अईम्मा की रायें मसलक-ए-हनफी की तशरीह इमाम अल्लामा अलाउद्दीन कासानी हनफी (रहमतुल्लाह अलैह) ने बदाए -अल- सनाए में यूँ लिखा है कि "जिस तरह बेवज़ू नमाज़ पढ़ना जाएज़ नहीं इसी तरह कुरान मजीद को हाथ लगाना भी जाएज़ नहीं। लेकिन किसी कपड़े के साथ कुरान करीम को छूआ जा सकता है।"

मसलके शाफई के इमाम नव्वी ने अलमिनहाज में इस तरह ज़िक्र किया है "नमाज़ और तवाफ की तरह कुरान को हाथ लगाना और उसके वरक़ को छूना भी वज़ू के बगैर हराम है। इसी तरह कुरान पाक की जिल्द को छूना भी मना है।" बच्चा अगर बेवज़ू हो तो वह कुरान करीम को हाथ लगा सकता है और बेवज़ू आदमी अगर कुरान पढ़े तो लकड़ी या किसी और चीज़ से वह उसका वरक़ पलट सकता है।

मालिकिया का मसलक जो अलफेकहा अलमजाहिबिल अरबा में नकल किया गया है वह यह है कि जमहुर फुकहा के साथ वह इस मामला में मुत्तफिक हैं कि कुरान को हाथ लगाने के लिए वज़ू शर्त है।

शैख इबने कुदामा हम्बली ने लिखा है कि जनाबत और हैज व निफास की हालत में कुरान या उसकी पूरी आयत को पढ़ना जाएज़

का ठाठे मारता हुआ समुन्दर उमड़ पड़ा और सिर्फ 150 साल की तारीख में दारुल उलूम देवबन्द और इस तर्ज पर कायम मदारिस के लाखों फ़ुज़ला उलूमे हदीस पढ़कर दुनिया के चप्पे चप्पे में उलूमे नबूत की इशाअत में मशगूल हो गए, उलमा-ए-देवबन्द की हदीस की नुमाया खिदमात का एतेराफ अरब उलमा ने भी किया है, चुनांचे कुवैत के एक वज़ीर "यूसुफ सैयद हाशिम अररिफाड़" ने लिखा है कि हाफिज़ ज़हबी और हाफिज़ इब्ने हजर असकलानी जैसे मेयार के उलमा दारुल उलूम देवबन्द में मौजूद हैं।

बर्सेगीर के उलमा खास तौर पर उलमा-ए-देवबन्द ने सही बुखारी की बहुत सी शरह लिखी है जिनमें से अल्लामा मोहम्मद अनवर शाह कश्मीरी की शरह फैज़ुलबारी अला सहीहिल बुखारी को बड़ी शोहरत हासिल हुई है।

उलमा देवबन्द की तहरीर करदा सही बुखारी की बाज़ अहम शरह फैज़ुलबारी अला सहीहिल बुखारी

यह मुहद्दिसे कबीर शैख मोहम्मद अनवर शाह कश्मीरी का दरसे बुखारी है जिसको उनके शागिरदे रशीद शैख बदरे आलम मेरठी मुहाजिर मदनी ने अरबी ज़बान में तरतीब दिया है, सबसे पहले यह शरह मिश्र से शाये हुई, उसके बाद दुनिया के कई मुल्कों से लाखों की तादाद में शाये हो चुकी है, चुनांचे आज अरब व अजम में इस शरह को सही बुखारी की अहम शरह में शुमार किया जाता है, इसकी चार ज़खीम ज़िल्दें हैं, बाज़ नाशेरीन ने छः जिल्दों में शाये किया है, अरब व अजम में अल्लामा मोहम्मद अनवर शाह कश्मीरी का शुमार मुस्तनद व मोतबर महद्दीसीन में किया जाता है, मशरिक व मगरिब

के तमाम इल्मी हलकों ने अल्लामा मोहम्मद अनवर शाह कश्मीरी की सलाहियतो का एतेराफ किया है।

तालीकात जामिअह अला सहीहिल बुखारी (अरबी)

शैखुल हदीस अहमद अली सहारनपुरी ने बुखारी के 25 अजज़ा पर तालीकात की, बाकी पांच हिस्सों पर उनके शागिर्द शैख मोहम्मद कासिम नानौतवी ने तालीक की।

अल अबवाब वत तराजिम लिल बुखारी

इस किताब में बुखारी शरीफ के अबवाब की वज़ाहत की गई है, सही बुखारी में अहादीस के मजसूआ के उनवानात पर एक बहस मुस्तक़िल इल्म की हैसियत रखती है जिसे तरजुमतुल अबवाब कहते हैं, शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया ने इस किताब में शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी और अल्लामा इब्ने हजर असकलानी जैसे उलमा के ज़रिया बुखारी के अबवाब के बारे में की गई वज़ाहत ज़िक्र करने के बाद अपनी तहकीकी राय पेश की है, यह किताब अरबी ज़बान में है और इसकी 6 जिल्दें हैं।

लामेउद्दरारी अला जामे सहीहिल बुखारी

यह मजमूआ दरअसल शैख रशीद अहमद गंगोही का दरसे बुखारी है जो शैख मोहम्मद ज़करिया के वालिद शैख मोहम्मद यहया ने उर्दू ज़बान में लिखा था शैखुल हदीस मौलाना ज़करिया ने इसका अरबी ज़बान में तरजुमा किया और कुछ हज़फ व इज़ाफात करके किताब की तालीक और हवाशी खुद तहरीर फरमाए, इस तरह शैखुल हदीस की 12 साल की इंतिहाई कोशिश और मेहनत की वजह से यह अजमी किताब मंजरे आम पर आई, इस किताब पर शैखुल हदीस का

सउदी उलमा के फतावे

सउदी अरब के साबिक मुफती शैख अब्दुल अजीज़ इबने बाज़ ने भी कुरान व हदीस की रौशनी में यही फरमाया है कि बेगैर वज़ू के कुरान करीम का छूना जाएज़ नहीं है।

शैख अब्दुल अजीज़ इबने बाज़ के कलाम का खुलासा यह है कि जमहूर उलमा के नजदीक जाएज़ नहीं कि मुस्लिमान बेगैर वज़ू के कुरान करीम को छूए और चारों अईम्मा की भी यही राय थी। और सहाबा कराम भी यही फतवा दिया करते थे। इस बाब में हज़रत उमर बिन हिजम (रज़ियल्लाहु अन्हु) की एक सही हदीस मौजूद है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यमन वालों को लिखा का **“कोई शख्स बेगैर वज़ू के कुरान करीम को न छूए”** यह सही हदीस और मुख्तलिफ सनदों से वारिद हुई है और एक सनद को दूसरी सनद से तक्वियत हासिल हुई है। गरज़ ये कि यह बात अच्छी तरह मालूम है कि मुस्लिमान के लिए जाएज़ नहीं कि वह हदसे असगर व अकबर (छोटी बड़ी नापाकी) से तहारत के बेगैर कुरान को छूए। इसी तरह अगर कोई कुरान करीम को एक जगह से दूसरी जगह मुनतकिल करना है तब भी वज़ू का होना शर्त है। हां अगर किसी कपड़े वगैरह से कुरान करीम को छू रहे हैं तो फिर कोई हर्ज नहीं। अपनी याद से कुरान करीम बेगैर वज़ू के पढ़ सकते हैं लेकिन अगर किसी को गुसल की ज़रूरत पड़ गई तो फिर वह अपनी याद से भी कुरान करीम नहीं पढ़ सकता है।

सउदी अरब के एक बड़े आलिमे दीन शैख मोहम्मद सालेह बिन उसैमीन ने भी कुरान व हदीस की रौशनी में यही फरमाया है कि

शैख अब्दुल जब्बार आजमी।

अत्तसवीबात लिमा फी हवाशिल बुखारी मिनत तसहीफात

शैख अब्दुल जब्बार आजमी।

अलखैरुल जारी अला सहीहिल बुखारी

शैख खैर मोहम्मद मुजप्फरगदी।

अन्नूरुस्सारी अला सहीहिल बुखारी

शैख खैर मोहम्मद मुजप्फरगदी।

इहसानुल बारी लिफहमिल बुखारी

शैख मोहम्मद सरफराज खां सफदर।

जवाहिरुल बुखारी अला अतराफिल बुखारी

शैख काज़ी ज़ाहिद हुसैनी।

इनमामुल बुखारी फी शरहिल बुखारी

शैख आशिक इलाही बुलन्दशहरी व मुहाजिर मदनी।

दुरुसे बुखारी

शैख हुसैन अहमद मदनी का दरसे बुखारी है जिसको शैख नेमतुल्लाह आजमी मुरत्तब कर रहे हैं, बाज़ जिल्दें शाये हो चुकी हैं।

तरजुमा सही बुखारी

शैख शब्बीर अहमद उसमानी।

फजलुल बारी शरह सहीहिल बुखारी

शैख शब्बीर अहमद उसमानी।

अन्नबरासुस्सारी फी अतराफिल बुखारी

यह शैख अब्दुल अज़ीज़ गोजरानवाला की अरबी ज़बान में बुखारी की शरह है जो 2 जिल्दों पर मुशतमिल है, इनका हाशिया "मिक़यासुल वारी अलन्नबरासुस्सारी" भी काफी अहमियत का हामिल है।

तहकीक व तालिक लामिउद्दरारी अला जामेइल बुखारी

शैख मोहम्मद ज़करिया कांधलवी।

इनामुल बारी शरह बुखारी

शैख मोहम्मद अमीन चाटगामी

नसरूल बारी शरह अलबुखारी

यह सही बुखारी की शरह है जो शैख उसमान गनी ने तालिफ की है जिसकी 14 जिल्दें हैं।

तफ्हीमुल बुखारी

यह सही बुखारी का उर्दू तरजुमा है जो शैख जहूरूल बारी आजमी कासमी ने किया है, जिसकी अरबी मतन के साथ 3 जिल्दें हैं।

हमदुल मुतआली अला तराजिमि सहीहिल बुखारी

यह शैख सैयद बादशाह गुल की किताब है जो शैख हुसैन अहमद मदनी के शागिर्द हैं।

फ़ज़लुल बुखारी फी फ़िक्हिल बुखारी

यह शैख अब्दुररुफ हज़ारवी की किताब है जो शैख मोहम्मद अनवर शाह कश्मीरी के शागिर्द हैं।

तसहीलुल बारी फी हल्ले सहीहिल बुखारी

शैख सिद्दीक अहमद बांदवी।

कशफुल बारी फी शरहिल बुखारी

शैख सलीमुल्लाह खां साहब।

शरहुल बुखारी, तजरीदुल बुखारी

शैख मोहम्मद हयात सम्भली, यह शैख मुफती आशिक इलाही के उस्ताद हैं।

इनामुल बारी, दुरुसे बुखारी शरीफ

जरूरी करार देने का फतवा दिया है। यानी पाकी के बेगैर कुरान करीम का छूना जाएज नहीं है। इसी तरह हज़रत उमर बिन हिजम की हदीस में वारिद है जिसको नसई और दूसरे मुहद्देसीन ने रिवायत किया है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कुरान करीम को बेगैर पाकी के न छूआ जाए यानी कुरान करीम को छूने के लिए वज़ू जरूरी है। जहां तक कुरान को छूए बेगैर कुरान के पढ़ने का मामला है तो बेगैर वज़ू के कुरान करीम को पढ़ा जा सकता है लेकिन गुसल की जरूरत हो गई तो फिर कुरान करीम किसी भी हालत में नहीं पढ़ा जा सकता है।

सउदी अरब के एक मशहूर आलिमे दीन खालिद बिन अब्दुल्लाह मसलेह (अलकसीम) ने भी कुरान व हदीस की रौशनी में यही फरमाया है कि बेगैर वज़ू के कुरान करीम का छूना जाएज नहीं है।

खुलासा कलाम पेश है कि मसला में उलमा के दरमायान इख्तिलाफ है। जमहुर उलमा खास कर चारों अइम्मा की राय है कि बेगैर वज़ू के कुरान नहीं छूआ जा सकता है जैसा कि उमर बिन हिजम की हदीस आई है। हाफिज़ इबन अब्दुलबर ने कहा कि इस हदीस की बहुत शोहरत की वजह से मुहद्देसीन ने इसे कबूल किया है। बाज़ फुकहा ने कुरान करीम की आयत से इसतिदलाल किया है। लेकिन यह महल्ले नज़र है लेकिन फिर भी फ़रिश्तों की तरह मोमेनीन को भी बावज़ू ही कुरान करीम छूना चाहिए।

गरज़ ये कि कुरान व हदीस की रौशनी में खैरुल कुन से असर हाजिर तक के जमहुर मुहद्देसीन, मुफस्सेरीन, फुकहा और चारों अइम्मा ने यही कहा है कि बेगैर वज़ू के कुरान करीम का छूना जाएज नहीं है।

गंगोही, मौलाना हुसैन अहमद मदनी, मौलाना खलील अहमद सहरानपुरी, मौलाना शब्बीर अहमद उसमानी, मौलाना फखरुद्दीन अहमद मुरादाबादी, मौलाना मोहम्मद इदरीस कांधलवी, मौलाना मोहम्मद ज़करिया कांधलवी, मौलाना हबीबुर रहमान आज़मी, मौलाना मोहम्मद इसमाइल सम्भली (जो राकिमुलहुरुफ के दादा हैं), मौलाना अब्दुल जब्बार आज़मी, मौलाना नसीर अहमद खान, मौलाना उसमान गनी, मौलाना खुरशीद आलम, मौलाना मोहम्मद यूनूस आज़मी, मौलाना मोहम्मद तक्की उसमानी, मौलाना नेमतुल्लाह आज़मी, मौलाना रियासत अली बिजनौरी और मौलाना सईद अहमद पालनपुरी दामत बरकातुहुम।

अल्लाह तआला से दुआ है कि मदारिसे इस्लामिया की हिफाज़त फरमाए और हमें कुरान व हदीस समझ कर पढ़ने वाला बनाए, उस पर अमल करने वाला बनाए और उसको दूसरों तक पहचाने वाला बनाए, आमीन।

सही मुस्लिम व उलमा-ए-देवबन्द की खिदमात

सबसे पहले सही मुस्लिम के मुसन्निफ (इमाम मुस्लिम बिन अलहज्जाज) का तआरुफ पेश है।

नाम व नसब: अबूल हसन कुन्नियत, असाकिरुद्दीन लक़ब और मुस्लिम उनका इस्मे गिरामी था। कुशैर अरब के मशहूर कबीला की तरफ मंसूब थे। आपके वालिद हज्जाज बिन मुस्लिम इल्मी हल्कों में बहुत पाबन्दी से शरीक हुआ करते थे।

विलादत व वफात: आप 202 या 204 हिजरी में खुरासान के मशहूर शहर नीशापुर में पैदा हुए। यह खूबसूरत शहर इरान के शिमाल मशरिक् में निस्तान के करीब पड़ता है। नीशापुर में पैदाइश की मुनासबत से आपको नीशापूरी कहा जाता है। आपकी वफात 25 रजब 261 को नीशापुर में हुई और वहीं आपकी तदफीन अमल में आई। गरज़ इमाम मुस्लिम की उम्र सिर्फ 55 या 59 साल रही। इमाम मुस्लिम की वफात का सबब भी अजीब व गरीब वाक़या है कि एक रोज़ मजलिस में आपसे किसी हदीस के बारे में पूछा गया और उस वक़्त आप वो हदीस नहीं पहचान सके, चुनांचे आप उस हदीस को अपनी किताबों में तलाश करने में मसरूफ़ हो गए, खजूरों का एक टोकरा उनके करीब रखा था और आप हदीस को तलाश करने में कुछ इस तरह लग गये कि टोकरी का सारा खजूर खाकर खतम कर दिया और आप को कुछ एहसास भी नहीं हुआ। बस यही ज़्यादा खजूरें खाना ही आपकी मौत का सबब बना।

दूसरी तफसीर के मुताबिक वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि नापाकी (यानी ऐसी नापाकी जो बड़ी और छोटी दोनों हों) की हालत में कुरान छूना जाएज़ नहीं है। पहली तफसीर में जिसको मुफस्सिरीन ने राजेह करार दिया है अगरचे एक खबर दी जा रही है कि कुरान करीम को लौहे महफूज़ में पाक फरिशतों के सिवा कोई और छू नहीं सकता मगर हमारे लिए वाज़ेह तौर पर यह पैगाम है कि जब लौहे महफूज़ में पाक फरिशते ही इसको छू सकते हैं तो हम दुनिया में नापाकी की हालत में कुरान करीम को कैसे छू सकते हैं। नीज़ कुरान करीम के पहले मुफस्सिर और सारी इंसानियत में सबसे अफज़ल व आला हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात में भी यही तालीम मिलती है कि नापाकी की हालत में वज़ के बेगैर कुरान करीम को न छुए और न छूकर तिलावत करें।

हज़रत उमर बिन हज़म (रज़ी अल्लाहु अन्हु) ने यमन वालों को लिखा कि कुरान करीम को पाकी के बेगैर न छुआ जाए। (मुअत्ता मालिक) और (दारमी में) यह हदीस मुख्तलिफ सनदों से अहादीस की बहुत सी किताबों में लिखी हुई है और जमहूर मुहद्देसीन ने इसको सही करार दिया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ी अल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "हाइज़ा (वह औरत जिसको माहवारी आ रही हो) और जुंबी (जिसपर गुसल वाजिब हो गया है) कुरान करीम से कुछ भी न पढ़े। (तिर्मिज़ी 131, इब्ने माजा 595, दारे कुतनी 1/117 और बैहिकी 1/89)

इमाम मुस्लिम के शागिर्द -आपके शागिर्दों में से इमाम अबूईसा तर्मिज़ी, इमाम अबू बकर बिन खुज़ैमा और इमाम अबू हातिम राज़ी के नाम क़ाबिले ज़िक्र हैं।

इमाम मुस्लिम की तालिफ़ात - इमाम मुस्लिम की बाज़ अहम किताबों के नाम हस्बे ज़ैल हैं।

किताब अलमुसनदुल कबीर अलर रिज़ाल, जामे कबीर, किताबुल असमा वलकुना, किताबुल इलल, किताबुल वुहदान, किताबु हदीस अमर बिन शुऐब, किताबु मशाएख मालिक, किताबु मशाएखिस सौरी, किताबु मशाएख शोबा, किताबु ज़िक्र औहामुल मुहदिसीन, किताबुत तमीज, किताबुल अफ़राद, किताबुल अक़रान, किताबुल मुखज़रमीन किताबु औलदिस सहाबा, किताबुल इतिफ़ा बेजुलूदिस सिबा, किताबुत तबकात, किताबु अफ़रादिश शामियीन, किताबु रूवातिल एतिबार और सही मुस्लिम।

इमाम मुस्लिम की अहम किताबु सही मुस्लिम - मुख्तलिफ मुल्कों के असफ़ार के बाद इमाम मुस्लिम ने चार लाख अहादीस जमा कीं और उनमें से एक लाख मुकर्रर अहादीस को अलग करके तीन लाख अहादीस को परखना शुरू फरमाया। जो अहादीस हर एतेबार से मुस्तनद साबित हुईं उनका इतिखाब करके सही मुस्लिम में जमा किया। पन्दरह साल की मेहनत और कोशिशों के बाद यह अहम किताब पूरी हुई। इसमें तक़रीबन सात हज़ार अहादीस हैं जिनमें से

बहुत सी अहादीस एक से ज़्यादा मरतबा ज़िक्र की गई हैं। गैर मुकरर अहादीस की तादाद तक़रीबन चार हज़ार हैं।

सही मुस्लिम का पूरा नाम - इमाम मुस्लिम की इस अहम किताब का नाम बहुत ज़्यादा मशहूर न हो सका, फिर भी मुहद्दीसीन व उलमा ने इस मक़बूल किताब के नाम इस तरह फरमाए हैं। अस सही, अल मुसनदुस सही, अल जामे, अलबत्ता यह किताब सही मुस्लिम के नाम से अरब व अजम में ज़्यादा पहचानी जाती है।

रुबाइयाते सही मुस्लिम - आला से आला सही मुस्लिम में वह सनद है जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक चार वास्ते हैं, सही मुस्लिम में इस किस्म की अहादीस 80 से कुछ ज़्यादा हैं, लेकिन सुलासियात जिस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक तीन वास्ते हैं सही मुस्लिम में कोई हदीस नहीं है, अलबत्ता सही बुखारी में तक़रीबन (22) अहादीस सुलासियात हैं जिसमें इमाम बुखारी ने (20) अहादीसे सुलासियात इमाम अबू हनीफा के शागिर्दों से रिवायत की हैं।

मुत्तफ़क़ अलैह हदीस - जो हदीस सही बुखारी व सही मुस्लिम दोनों किताबों में मज़कूर हो तो उस हदीस को मुत्तफ़क़ अलैह कहा जाता है।

सही मुस्लिम की शुरू - सही मुस्लिम की बकसरत शुरू तहरीर की गई हैं, जिनमें शैख़ अब्ज़करिया यहया बिन शरफ़ अश शाफ़ई

है। बाज़ उलमा-ए-कराम ने जिफ़्र किए हुए हदीस को कमज़ोर कहकर इजाजत दी है कि हाइज़ा औरत सिर्फ़ जबानी क़ुरान करीम की तिलावत कर सकती है मगर ग़ौर तलब बात यह है कि जुनबी और हाइज़ा औरतों के बहुत से मसलों में एक ही कुम है। मसलन मस्जिद में दाखिल होना या बैठना, नमाज़ पढ़ना और तवाफ़ करना और क़ुरान करीम छूकर तिलावत करना दोनों के लिए जाएज़ नहीं हैं वगैरह वगैरह तो इस मज़कूरह हदीस को कमज़ोर करार देकर हाइज़ा औरत के लिए जबानी तौर पर तिलावत की इजाजत देना महल्ले नज़र है। हाँ अगर कोई औरत क़ुरान की आयत को दुआ के तौर पर पढ़ रही है तो जाएज़ है।

खुलासा कलाम खैरुल कुरुन से असर हाजिर तक जमहूर मुहद्देसीन, मुफ़स्सिरीन व फुकहा व उलमा-ए-कराम का इत्तिफ़ाक़ है कि जुनबी की तरह हाइज़ा औरत के लिए क़ुरान करीम की छूकर तिलावत करना जाएज़ नहीं है बल्कि बेग़ैर वजू के किसी भी मर्द या औरत के लिए क़ुरान करीम को छूना या छूकर तिलावत करना जाएज़ नहीं है। इमाम अबु हनीफ़ा और दूसरे उलमा की राय में हदीस की मशहूर व मारुफ़ किताबों (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, दारे कुतनी, बैहिकी और दूसरे कूतूबे हदीस) में वारिद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के फरमान (हाइज़ा और जुनबी क़ुरान करीम से कुछ भी नह पढ़े) की रौशनी में जुनबी और हाइज़ा औरत के लिए जबानी भी क़ुरान करीम की तिलावत करना जाएज़ नहीं है।

ही आपका इंतिकाल हो गया। इसकी दो जिल्दें हैं जो "किताब निकाह" तक हैं।

"तकमिलह फतहुल मुलहिम" वालिद मोहतरम मोहम्मद शफी के फरमान पर मुफती मोहम्मद तकी उसमानी दामत बरकातुहुम ने "किताबुर रज़ाअत" से आखिर तक 6 जिल्दों में इस शरह को अरबी ज़बान में पूरा किया। मुफती मोहम्मद तकी उसमानी दामत बरकातुहुम ने इब्तिदाई 6 जिल्दों पर तालीक़ात भी तहरीर फरमायीं, इस तरह मुफती मोहम्मद तकी उसमानी साहब की कोशिशों से यह शरह मंज़रे आम पर आई। उम्मत मुस्लिमा खास कर अरब उलमा में इस शरह को खास मक़बूलियत हासिल हुई है। लेबनान के बहुत से नाशेरीन इस शरह के बेशुमार नुसखे शाये कर चुके हैं। असरे असरे हाज़िर के मशहूर व मारुफ अरब आलिमे दीन डाक्टर यूसुफ करज़ावी साहब और शैख अब्दुल फत्ताह अबू गुदह अलहलबी ने इस शरह की तक़रीज की है।

"अलहल्लुल मुफहिम लिसहीहिल मुस्लिम" यह शैख रशरीद अहमद गंगोही का दरसे मुस्लिम है जिसको शैख मोहम्मद यहया कांधलवी ने लिखा है और शैख मोहम्मद ज़करिया कांधलवी ने अपनी तालीक़ात के साथ इसको शाए कराया है। इसकी दो जिल्दें हैं।

"नेमतुल मुनइम फी शरहिल मुजल्लदुस सानी लिमुस्लिम" शैख नेमतुल्लाह आज़मी दामत बरकातुहुम की तालीफ है जो "किताबुल

बुयू" से लेकर "बाबु इस्तिहबाबिल मुवासात बिफुज़ूलिल मा" तक है जिसकी 383 सफहात पर मुशतमिल एक जिल्द शाए हो चुकी है।

सही मुस्लिम शरीफ मुतर्जम अरबी उर्दू- शैख आबिदुर रहमान कांधलवी ने उर्दू ज़बान में सही मुस्लिम का तरजुमा किया है। शैख मोहम्मद अब्दुल्लाह फाज़िल तखस्सुस फिलइफता दारुल उलूम कराची ने मुख्तसर मुफीद हवाशी लिखें हैं जिसकी तीन जिल्दें हैं। इमाम मुस्लिम की मुख्तसर ज़िन्दगी के हालात लिखने में राकिमुल हुरूफ ने इस किताब से खास इस्तिफादा किया है।

मुकद्दमा सही मुस्लिम: सही मुस्लिम का मुकद्दमा कई वजह से बड़ी अहमियत का हामिल है। इस मुकद्दमा में वजहे तालीफ के अलावा फन रिवायत के बहुत से फवायद जमा किए गए हैं। इमाम मुस्लिम ने यह मुकद्दमा तहरीर करके उसूले हदीस के फन की बुनियाद कायम कर दी है। इस मुकद्दमा की खुसूसी अहमियत की वजह से इसकी मुस्तक़िल शरह भी तहरीर की गई हैं। उलमा-ए-देवबन्द की मुंदरजा ज़ैल सही मुस्लिम के मुकद्दमा की शरह तलबा में काफी मक़बूल हैं।

उमदतुल मुफहिम फी हल्ले मुकद्दमा मुस्लिम - शैख अब्दुल कादिर मोहम्मद ताहिर रहीमी।

फैज़ुल मुनइम शरह मुकद्दमा मुस्लिम - शैख सईद अहमद पालनपूरी।

नेमतुल मुनइम शरह मुकद्दमा मुस्लिम - शैख नेमतुल्लाह आजमी।

रिवायात में आता है कि आप सूरत व शकल के एतेबार से अच्छे नहीं थे, जैसा कि मशहूर ताबई हज़रत सईद बिन मुसैयिब (रमतुल्लाह अलैह) ने एक हबशी से कहा था कि तु इस बात से दिलगीर न हो कि तु काला हबशी है, इसलिए कि हबशियों में तीन आदमी दुनिया के बेहतरीन इंसान हुए हैं। हज़रत बिलाल हबशी (रज़ियल्लाहु अन्हु), हज़रत ऊमर फारुक (रज़ियल्लाहु अन्हु) का गुलाम मेहजा और हकीम लुकमान (रहमतुल्लाह अलैह)। गरज़ ये कि हकीम लुकमान के हालाते ज़िन्दगी और ज़माना में इख़ितलाफ के बावजूद पूरी दुनिया को एक मशहूर शख्सियत तसलीम करती है। जाहेलियत के चंद शोरा ने भी इनका तजक़िरा किया है।

अल्लाह तआला ने सूरह लुकमान में हज़रत लुकमान की उन कीमती नसीहतों का ज़िक्र फरमाया है जो उन्होंने अपने बेटे को मुखातब करके बयान फरमाई थीं। यह हकीमाना अक़वाल अल्लाह तआला ने इसलिए कुरान करीम में नक़ल किए हैं ताकि क़यामत तक आने वाले इंसान उनसे फायदा उठाकर अपनी ज़िन्दगी को खूब से खूबतर बना सकें और एक अच्छा सुआशरा वजूद में आसके।

पहली नसीहत, शिर्क से ड़ी

सबसे पहली हिकमत अक़ाएद की दुरुस्तगी के बारे में है। ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ शिर्क न करना, य़कीन जानो शिर्क ब़ह बड़ा जुल्म है। यानी अल्लाह तआला ही पूरी कायनात का खालिक व मालिक व राज़िक है और उसके साथ किसी गैरुल्लाह को शरीके इबादत न करना। इस दुनिया में इससे बड़ा जुल्म नहीं हो सकता कि अल्लाह

फौकियत हासिल है? फरमाया दोनों मुहदिस हैं। मैंने दोबारा पूछा तो फरमाया इमाम बुखारी अक्सर नामों और कुन्नियतों के मुगालते में आ जाते हैं, मगर इमाम मुस्लिम इस मुगालते से बरी हैं। गरज़ ये कि सही मुस्लिम के मतन का हुस्ने सियाक़, तलखीसे तुरुक़ और ज़ब्ते इंतिशार सही बुखारी पर भी फायक़ है। अहादीस के मतन को मोतियों की तरह इस तरह रिवायत किया है कि अहादीस के मानी चमकते चले जाते हैं।

शाह अब्दुल अज़ीज़ लिखते हैं कि सही मुस्लिम में खुूसियत के साथ फन हदीस के अजाइबात बयान किए गए हैं और उनमें सब से खास मतन का हुस्ने सियाक़ है और रिवायत मे एहतियात इस क़दर है कि जिस मे कलाम करने की गुंजाइश ही नही, आसानीद की तलखीस और ज़ब्ते इंतिशार में यह किताब (सही मुस्लिम) बेनजीर वाके हुई है।

इमाम मुस्लिम ने अपनी सही में यह शर्त लगाई है कि वह अपनी किताब (सही मुस्लिम) में सिर्फ़ वह अहादीस बयान करेंगे जिसे कम से कम दो सिकह ताबेईन ने दो सिकह रावियों से नक़ल किया हो और यही शर्त तमाम तबक़ाते ताबेईन और तबे ताबेईन में मलहूज़ रखी है यहां तक कि रिवायत का सिलसिला इमाम मुस्लिम पर आकर ख़त्म हो जाए।

इमाम मुस्लिम रावियों के औसाफ़ में सिर्फ़ अदालत को मूल्क नहीं

रखते बल्कि शहादत के शराएत को भी पेशे नज़र रखते हैं। इमाम बुखारी के नज़दीक इस क़दर पाबन्दी नहीं है।

इमाम मुस्लिम ने हर हदीस को जो उसके लिए मुनासिब मक़ाम था वहीं ज़िक्र किया है और उसके तमाम तरीकों को उसी मक़ाम पर बयान कर दिया है और उसके मुख्तलिफ अल्फाज़ को एक ही मक़ाम पर बयान कर दिया है, ताकि तालिबे इल्म को आसानी हो, अलबत्ता यह बात सही बुखारी में नहीं है।

सही मुस्लिम की एक इमतिyaz़ी सिफत यह है कि इमाम मुस्लिम ने अपनी किताब में तालीक़ात बुह कम ज़िक्र की हैं, बरखिलाफ़ इमाम बुखारी के कि उनकी किताब में तालीक़ात बकसरत हैं।

गरीब को सताया है या किसी का हक मारा है तो मुमकिन है कि हम दुनिया वालों से बच जाएं लेकिन अल्लाह तआला की अदालत में अंधेर नहीं है और हमें इसका जरूर हिसाब देना होगा।

तीसरी नसीहत, नमाज़ पढ़ना

हकीम लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए यह भी फरमाया, बेटे नमाज़ कायम करो। नमाज़ ईमान के बाद इस्लाम का अहम तरीन रुकन है। नमाज़ खुद अहम होने के साथ वह दूसरे आमाल की दुरुस्तगी का ज़रिया भी है जैसा कि इरशाद बारी है, "जो किताब आप पर उतारी गई है उसे पढ़िए और नमाज़ कायम कीजिए, यकीनन नमाज़ बेहयाई और बुराई से रोकती है" (सूरह अलअनकबूत 45) नमाज़ में अल्लाह तआला ने यह खासियत व तासीर रखी है की वह नमाज़ी को गुनाहों और बुराईयों से रोक देती है मगर ज़रूरी है कि उसपर पाबन्दी से अमल किया जाए और नमाज़ को उन शराएत व आदाब के साथ पढ़ा जाए जो नमाज़ की क़बूलियत के लिए ज़रूरी हैं, जैसा कि हदीस में है कि एक शख्स नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में आया और कहा कि एक शख्स रातों को नमाज़ पढ़ता है मगर दिन में चोरी करता है तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसकी नमाज़ अनकरीब उसको बुरे काम से रोक देगी (मुसनद अहमद, सही इब्ने हिब्बान) लिहाज़ा हमें नमाज़ों का इहतिमाम करना चाहिए।

चौथी नसीहत, इसलाहे मुआशरा के लिए कोशिश करना

हकीम लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए आगे फरमाते हैं,

अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहकीकी मकाला पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी ज़बानों में तहरीर की हैं। 1999 से रियाज़(सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअक़िद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उर्दू अख़बारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी की वेब साइट (www.najeebqasmi.com) को काफी मक़बूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ़ इस्लामी मौज़ूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक़ खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफ़र के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फ़ा और अरफ़ात में भी इस्तिफ़ादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मशहूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ़ मदरसों ने दोनों Apps (**दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस**) की ताईद में ख़ूत तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

<http://www.najeebqasmi.com/>

najeebqasmi@gmail.com

[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)

[Najeeb Qasmi - YouTube](#)

Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:

Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor

AUTHOR'S BOOKS



IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، ہی علی الصلاۃ، عمر و کا طریقہ، تحفہ رمضان، معلومات قرآن، اصلاحی مضامین جلد ۱،
اصلاحی مضامین جلد ۲، قرآن و حدیث: شریعت کے دواہم ماخذ، سیرت النبی ﷺ کے چند پہلو،
زکوٰۃ و صدقات کے مسائل، فیملی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم و ذکر

IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi
Come to Prayer, Come to Success
Ramadan - A Gift from the Creator
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat
A Concise Hajj Guide
Hajj & Umrah Guide
How to perform Umrah?
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
Rights of People & their Dealings
Important Persons & Places in the History
An Anthology of Reformative Essays
Knowledge and Remembrance

IN HINDI LANGUAGE:

کوران اور ہدیس - اسلامی آئیڈیالوجی کے مین سورس
سیرت النبی کے مختلف پہلو
نماز کے لیے آؤ، سफलता के लिए आओ
रमजान - अल्लाह का एक उपहार
ज़कात और सदाकात के बारे में गाइडेंस
हज और उमराह गाइड
मुख्यतः हज्जे मबूर
उमराह का तरीका
पारिवारिक मामले कुरान और हदीस की रोशनी में
लोगों के अधिकार और उनके मामलात
महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन
इल्म और जिक्र



First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages
(Urdu, Eng. & Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM

HAJJ-E-MABROOR